भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ फोन नं० ७७७२२ संवत् १,९६,०८,५३,०९३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १ २१ नवम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

### जिनका १७ नवम्बर को बलिदान दिवस मनाया गया

## आज पंजाबकेसरी बहुत याद आते हैं

ले० सुखदेव शास्त्री

जो राष्ट्र को स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा के लिए अपना तन-मन-धन समर्पण करते हैं वे बलिदानी वीर शहीद राष्ट्र के आधार होते हैं। उन्हीं के बल पर राष्ट्र उठता और आगे बढ़ता है। जो जाति ऐसे वीर शहीदों का सम्मान करती है वह सदा विजयी होती है और शहीदों को भुलानेवालों को उस देश की धरती भी भुला देती है।

समाजसेवा और स्वतन्त्रता संग्राम के संघर्ष में इन वीर शहीदों ने अपना सर्वस्व समर्पण किया और देशधर्म के लिए गोलियां खाकर, जहर पीकर, फांसी के फन्दे पर हंसते-हंसते अपना बलिदान देकर स्वतन्त्रता देवी की मंगल आरती उतारी थी।

उनके बलिदानों का संगीत जिस आजादी के गीत को गुंजाता है, उसकी स्वर लहरी में राष्ट्र में अजेयशक्ति संचरित हो जाती है। उनकी प्रतिभा की प्रतिमा पवित्र प्रकाश देकर जन-जन के मन मन्दिर में श्रद्धा का प्रतीक बनकर राष्ट्र के लिए गौरव का प्रेरक बन जाता है।

राष्ट्र शहीदों के प्रति सदैव नतमस्तक रहा है और रहेगा। उनके प्रति सदा कृतज्ञता प्रकट करता रहेगा। आज के राष्ट्रीय संकट की घडी में भी देश पर छायी भयंकर आतंकवाद की कालिमा को धोने में भी शहीदों का स्मरण समर्थ हो सकता है।

आज आवश्यकता है त्याग, बलिदान और सर्वस्व समर्पण की भावना की। हमारे सभी कार्यों में राष्ट्रहित सर्वोपरि हो। हमारा मन राष्ट्रभक्ति की भावना से भरा हो। स्वार्थ छोड़कर राष्ट्रकल्याण में जुटें।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में हजारों लोगों ने अपने बलिदान दिए हैं। अनेक ऐसे वीर हुए हैं जो आजादी के लिए मरमिटे पर पीछे नहीं हटे।

इन वीर शहीदों में पंजाबकेसरी ला० लाजपतराय का नाम भी अगली पंक्ति में गिना जाता है।

इनका जन्म अनेक वीरों की जन्मदात्री पवित्र धरती पंजाब के जिले फिरोजपुर के ग्राम ढूढ़िके में २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। इनके पिता राधाकृष्ण स्कूल के अध्यापक थे। लाजपतराय ने अपने ग्राम के स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर, लुधियाना के मिशन स्कूल में भी शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् आपने अपने पिताजी के साथ अम्बाला आकर १८८० में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक परीक्षा पास की। इसके बाद इन्होंने गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर से एफ. ए. की परीक्षा पास कर के मुख्त्यारी की परीक्षा भी पास कर ली। मुख्त्यार छोटे न्यायालयों में वकालत किया करते थे।

उन दिनों महर्षि दयानन्द के सामाजिक सुधार के क्रान्तिकारी विचारों से सारा देश विशेषकर पंजाब प्रभावित हो रहा था। लाहौर में १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। क्योंकि समाजसुधार, स्वतन्त्रताप्राप्ति के लिए आर्यसमाज का क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। भारत माता के पराधीनता के दुःखहरण में सर्वाधिक योगदान आर्यसमाज के तत्कालीन कार्यकर्ताओं का रहा था। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। अतः पंजाब के सब विचारक, होनहार युवक पं० लेखराम, म० मुन्शीराम, पं० गुरुदत्त एम. ए., लाजपतराय आदि आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्ति माने जाते थे। ये महर्षि दयानन्द के समाज-सुधारक विचारों को पंजाब के युवकों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाते थे। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में भाग लेते हुए भी लाजपत ने वकालत भी पास करली।

अब अपने निश्चय को मूर्तरूप देने के लिए लाजपतराय ने वकालत की प्रैक्टिस करने के लिए रोहतक को ही अपनी कार्यस्थली बनाया। वकालत के साथ-साथ परोपकार के कार्यों में भी भाग लेने लगे। कुछ वर्षों के बाद आप रोहतक छोड़कर हिसार चले गए। यहां भी आपने सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना शुरू किया। यहां पर भी आपने आर्यसमाज के प्रचार कार्य में बड़ा सहयोग दिया। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग आपके निवास पर ही होने लगे। सौभाग्य से हिसार में भी आपको लखपतराय व ला० चूड़ामणि जैसे मित्र मिल गये, जिनके साथ मिलकर आपने वकालत के साथ-साथ समाजसुधार के परोपकार कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। लाजपतराय एक नामी वकील और दानी आर्यपुरुष थे। आपने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। चूड़ामणि भी एक दानी निर्भीक आर्यपुरुष थे। हिसार में रहते हुए लाजपतराय ने प्रसिद्ध आर्यसमाज नागोरी की स्थापना की। यहां से ही ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर समाजसुधार के कार्य भी करने लगे। हिसार में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की। हिसार के म्युनिसिपल बोर्ड के अवैतनिक मन्त्री तीन वर्ष तक रहे। हिसार का लाजपतराय चौक जो नागोरी गेट के सामने स्थापित है, लालाजी के हिसार में किए गए समाजसेवा के कार्यों की प्रत्यक्ष गवाही दे रहा है। इसी प्रकार रोहतक में गोहाना बस अड्डे पर लाजपतराय चौक, जहां पर लाजपतराय की आदमकद मूर्ति खड़ी होकर उनके समाजसेवा के कार्य को आजतक भी प्रमाणित कर रही है।

इसके पश्चात् आपने लाहौर के आर्यसमाजी मित्रों के आग्रह के कारण भी पंजाब की सभी जातियों का केन्द्रस्थान मानकर हिसार को छोड़कर लाहौर में कार्य आरम्भ किया। गुरुदत्त विद्यार्थी व म० हंसराज को डी.ए.वी. कालेज की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया। आप आर्यसमाज की राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में तन-मन-धन से सहयोग देते थे। इन सेवाओं के कारण इनकी गणना भारत के शिक्षा विशेषज्ञों में होने लगी। इसी कारण लार्ड कर्जन ने इन्हें १९०० में शिक्षासम्बन्धी जांच कमेटी का सम्मानित सदस्य बनाया।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# गौ माता कहां रोय, यह भारत

हरिसिंह आर्य पुस्तकाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आदि काल से ससार में वेद ज्ञान का स्रोत रहे हैं। इन्ही को आधार मान आर्यसंस्कृति एवं सभ्यता जन्मी और विकसित हुई। वैदिक (आर्य सस्कृति) में गौ को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गौ के अतिरिक्त अश्व बकरी इत्यादि पशुओं के लिए भी दया दर्शाई और पालन का सकेत दिया है। उपयोगिता तथा गुणों की दृष्टि से गौ सर्वोपरि है, इसलिये उसे माता के समान पालक माना है और उसी भाव मे गौ को पूजनीय माना है।

आर्यसभ्यता के उदय-काल से भारत में विदेशी हस्तक्षेप पर्यन्त आर्यों के जन जीवन, आवास भूगोल, सामाजिक संगठन, आयुर्विज्ञान तथा आत्मविश्वास, आदि सबकी पूरक गाय ही रहती आई है। पौराणिक काल मे भी जन्म से वैतरणी पार होने तक गौमाता का सहारा लिया गया। किन्तु वर्तमान काल में, विशेषतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् गौ को न केवल आर्यों के सामाजिक अग से भिन्न किया जारहा है अपितु गौ के प्रति उपेक्षा तथा गौ वंश के नाश के षड्यन्त्र रचे जारहे हैं।

भारत की पूजक परम्परा से अभिज्ञ विदेशी आक्रमणकारियों ने एक हजार वर्ष पूर्व गौ की गर्दन को ओर हाथ उठाया था। उस समय अगणित आर्य वीरों ने अपने प्राणों की बलि देकर गौमाता की रक्षा की थी। पंजाब की सिक्ख परम्परा के उदय का कारण गौमाता तथा यज्ञोपवीत की रक्षा का व्रत था। गौमाता के प्रति अटूट श्रद्धा के दबाव में कुछ विदेशी शासको जिनमे मुगलसम्राट् अकबर भी शामिल है, गोहत्या विरोधी कानून लागू किये थे।

साम्राज्यवादी अग्रेज जिन्होंने पौने दो सौ वर्षों तक भारत पर किया, ईसाई मतावलम्बी थे। वे भारत में भी ईसाई मत के प्रचार व प्रसार के यत्न करते रहे। भारत के लोगों की शिक्षा दीक्षा, खान पान, परिधान, कला सस्कृति, विश्वास सबको ईसाई सस्कृति मे ढ़ालने के लिए छल बल का सहारा लिया। गौ वंश आर्यसभ्यता की रीढ थी अतः गौ पर ही कठोर प्रहार किया। कुछ कट्टरपथी मुस्लमानों से मिलकर गोहत्या को प्रोत्साहित किया। कट्टरपथियो की इस कुत्सित चाल को समझ भारत वासियों को ही नहीं अपितु समस्त ससार को गौ की उपयोगिता दर्शाने के लिए प्रात स्मरणीय, मानवीय दृष्टिकोण के दाता, गोभक्त महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गौकरुणा निधि नाम की पुस्तक लिखी। तत्पश्चात् कई विद्वानों, वैज्ञानिकों, आर्यसमाज, धर्मसंस्थानों ने गोरक्षा के लिए अपनी समितियां बनाईं।

गोरक्षा के लिए देशभगत सतनामियों वीर सिक्खों (नामधारियों) का कूका आन्दोलन, तलवार की धार और तोपों की घनघोर गर्जना के बीच भी दनदनाता रहा। सन् १८५७ की क्रान्ति का श्रीगणेश गोमाता की रक्षा के नाम पर हुआ था जो भारत से पराधीनता का जूआ उतार फेंकने का प्रथम, सामूहिक, सबल प्रयास था।

मास मनुष्य का भोजन नहीं है। धर्मानुरागी भारतीय उसके परम्परा विश्वास, महात्मा गांधी के अहिंसावादी सिद्धान्त, बौद्ध दर्शन पौराणिको की गौ मे श्रद्धा तथा आर्यसमाज के प्रबल प्रभाव पर कौन कुठाराघात कर रहा है। ऐसा समझा जाता था कि देश स्वतन्त्र होने पर गोहत्या बन्द हो जायेगी। देश में कोई शराबी कबाबी नागरिक नहीं रहेगा। किन्तु इसके बिल्कुल विपरीत होने लगा है। शराब की नदियां बहने लगी है। गोहत्या धड़ल्ले से हो रही है। कई लाख टन गोमास और गौ का खाल तथा हड्डियो का निर्यात होता है। भारत के बड़े होटलों मे गोमास परोसा जाने लगा है।

साम्राज्यवादी, ईसाई अग्रेज चला गया किन्तु एक ऐसी भ्रामक विचार धारा पनपा गया जिसके तहत, भारत में जन्मे, भारतीयो की सतान दीखने मे निःसन्देह भारतीय दीखती है किन्तु खान, पान, आचार विचार और शिक्षा तथा परिधान से वे लोग नकली अग्रेज बन चुके हैं। देश व धर्म अनुराग नाम की चिड़िया भी उनके घर के छज्जे पर बैठ कर चहचहाने से कतराने लगी है। इस अधोगति के दो मुख्य कारण हैं। प्रथम भारत मे कार्यरत मन्त्री व बड़े अधिकारी। दूसरे भारत में धन बटोरती विदेशी कम्पनियां तथा उनके माध्यम से अनाप-शनाप धन बटोरने के लालची भारतीय व्यापारी। इन लोगों का सरकारी तथा गैर सरकारी प्रचार के सबल माध्यमों पर पूर्ण अधिकार है। भारतीय शिक्षापद्धति को प्रदूषित कर लोगों के मन मस्तिष्क को मात्र भौतिक जंजीरों मे जकड़ा जा रहा है। विज्ञापनों की चकाचौंध वस्तु की वास्तविकता छिपा देती है।

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अनदेखा कर सरकार तथा उद्योगपति और व्यापारी विज्ञापनों का सहारा लेकर अपना काला धन्धा चला रहे हैं। सुन्दर रंगीन डब्बों तथा चिकने कागजों में लिपटी वस्तुएं वस्तुओं मे बसाई कृत्रिम सुगंध उनके पोषक रेडियो दूरदर्शन तथा समाचारपत्रोंके आकर्षक विज्ञापन यह आभास नहीं होने देते है कि इन नयनाभिराम पैकटों में बन्द वस्तुओं में कितना अपवित्रता एव विष भरा पडा है।

भारत में बिकनेवाली प्रायः सभी अंग्रेजी (एलोपैथी) दवाइयां, मद्यसार (एल्कोहल) तथा पशुओं के मास, हड्डी और चर्बी मिश्रित होती हैं। सुगन्धित तेल और साबुन टूथ पेस्ट शेविंग आफ्टर लोशनें ओठों मे रचने की लाली, चेहरे मे लगानेवाली स्नो, क्रीम वैजलीन सब मे चर्बी का प्रयोग होता है। रूपवती दीखने के लालच में भोली भाली देवियां इनका प्रयोग करती हैं।

खाद्य सामाग्री में अच्छे बिस्कुट, केक, आइसक्रीम, चीज, चाकलेट धड़ल्ले से घर की रसोई में घुस आए हैं। अण्डे और चीज निर्माण में बछड़े की सूड के रस का जामन लगाया जाता है जिसे प्राप्त करने के लिए अन्यन्त निर्दयता के साथ बछड़े की हत्या की जाती है। गोभक्तो क्या अब भी चीज तुम्हारी थाली में सजेगा।

विदेशी कम्पनियों के काले कारनामों को उजागर करने के लिए कुछ समय बीता, हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड के पूर्व निदेशक श्री जे० सी० चोपड़ा ने उक्त कम्पनी द्वारा शुद्ध घी में गौ की चर्बी की मिलावट तथा अन्य प्रसाधनों मे गौकी चर्बी के प्रयोग की जानकारी दी थी हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड एक विदेशी कम्पनी है जो भारत में कोलगेट टूथपेस्ट, लक्स, लाइफबॉय, व्हील आदि साबुन, फेसक्रीम, गिलिसरीन और उसके उत्पाद, डालडा वनस्पति तेल, अनिक नाम से शुद्ध घी का उत्पादन और व्यापार करती है। यह कम्पनी छल-कपट से अरबों रुपया भारत से बटोरकर इङ्गलैंड भेज रही है।

श्री चोपडा की जो चिट्ठी पत्रों मे छपी थी उसके अनुसार समीक्ष्य वर्ष मे हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी ने ९५ हजार टन गौ की चर्बी अपने उत्पादो मे मिलाई।

| | |
|---|---|
| साबुन और डिटर्जेंट बनाने मे | ३९००० टन |
| सशोधित गिलेसरीन बनाने में | ३५०० टन |
| गिलेसरीन से बने उत्पादों मे | ४००० टन |
| टूथ पेस्ट तथा फेस क्रीम बनाने में | २००० टन |
| देसी घी (अनिक) मे मिलाई गई | २००० टन |

शुद्ध घी के नाम से बेचे जाने वाले अनिक घी में २००० टन गौ की चर्बी मिलाई गई तो डालडा घी का तो भगवान् मालिक है। देशी घी के नाम से भारतवासियों को, जो प्रायः निरामिष तथा गौ को माँ के समान दर्जा देते हैं गौ की चर्बी खिलाना न केवल स्वास्थ्य अपितु धर्म और विश्वास की दृष्टि से जघन्य अपराध है।

भारत सरकार चाहे तो जनता की धार्मिक भावनाओं तथा जन स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इन उद्योगपतियों तथा व्यापारियों को ऐसा करने से रोक सकती है। औषध निर्माण सम्बन्धी एक कानून के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# नशाबन्दी सम्मेलन पर महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु धन्यवाद

—सूबेसिंह सभामन्त्री

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर भगवान् की कृपा से ऋतु अनुकूल रहा है। तदर्थ भगवान् को कोटिशः धन्यवाद है।

बाहर से आनेवाले नशाबन्दी के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं की सुख-सुविधा हेतु सभा की ओर से पूरा प्रयत्न किया गया। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रामलाल भाटिया आदि के पुरुषार्थ से वैदिक भक्ति आश्रम एवं अन्य आर्य संस्थाओं के भवनों में आवास की सराहनीय व्यवस्था की गई। किसी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। इसके लिए श्री रामलाल भाटिया, श्री जगदीशमित्र आर्य वीर दल तथा इन शिक्षणसंस्थाओं के अधिकारी तथा स्टाफ बधाई के पात्र हैं तथा इस अमूल्य सहयोग के लिए सभा उनका आभार प्रदर्शित करती है।

सभा कार्यालय के ऋषि लंगर में भोजन की व्यवस्था की गई थी। डा० सोमवीर जी सभा उपमन्त्री के निर्देशन में तीन दिन तक भोजन का प्रबन्ध किया गया। प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति श्री मित्रसेन आर्य ने १० हजार रु०, श्री लक्ष्मणदास आर्य बल्लबगढ़ (सभा उपप्रधान) ने १० हजार रु०, चौ० देवेन्द्रसिंह सु० श्री चौ० लालचन्द पालोठ (रोहतक) पांच हजार रु०, श्री धर्मवीर छिकारा खेड़ी आसरा (रोहतक) ने ५१०० रु०, आर्यसमाज झज्जर रोड के प्रधान श्री चरणसिंह ने ५ हजार रु०, ला० हरकिशन बहादुरगढ मण्डी ३१०० रु०, श्रीमती प्रभातशोभा पंडित साकेत नई दिल्ली ने ३१०० रु०, चौ० प्रियव्रत ठेकेदार ने २१०० रु० नकद तथा ३ हजार रु० का वचन, प्रि० होशियारसिंह ने लगभग १५०० रुपए, ऋषि लंगर के लिए दान देकर उदारता का परिचय दिया। श्री जयनारायणसिंह पूर्व सरपंच मुरादपुर टेकणा एवं चौधरी शमशेरसिंह खरकड़िया जिला रोहतक ने दो समय की भोजन व्यवस्था अपने समस्त परिवार की ओर से की। इन दानवीरों का सभा की ओर से जितना भी धन्यवाद किया जावे थोड़ा है।

सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने कार्यालय में बाहर से आनेवालों के लिए आवास की सराहनीय व्यवस्था की। नशाबन्दी सम्मेलन के प्रचार के लिए श्री सुखदेव शास्त्री, श्री महावीर शास्त्री, प्रि० गुगनसिंह, श्री बलदेवसिंह आर्य, श्री सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री, प्रि० बलबीरसिंह फतेहगढ़, श्री ओमप्रकाश आर्य (साँघी), श्री रणवीर शास्त्री गढ़ी बोहर, सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों तथा कार्यालय के कर्मचारियों ने दिनरात कार्य करके ग्रामों में ऋषि दयानन्द का सन्देश (नशाबन्दी) सुनाकर विशेष योगदान किया है।

आर्यवीर दल हरयाणा के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य ने अपने वीर दल के सैनिकों ने ३, ४ दिन तक आवास तथा भोजन व्यवस्था में पूरी लगन तथा परिश्रम के साथ कार्य करके सिद्ध कर दिया कि हरयाणा में आर्य वीर दल का संगठन नवयुवकों को आर्यसमाज तथा समाज सेवा की ओर आकर्षित कर रहा है। इनकी शानदार सेवा से प्रभावित होकर सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने श्री वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा, श्री जगदीशमित्र मण्डलपति आर्य वीर दल रोहतक को स्वर्ण पदक तथा सर्वश्री बलदीप, शिवकृष्ण, भूपेन्द्र, सतीश, नवनीत, अनिल, पुरुषोत्तम, डा० कृष्णकुमार, देवेन्द्र, उमेश, यशपाल, रोहताश एवं शिक्षा तथा खेलों में उच्चस्थान प्राप्त करनेवाले छात्र तथा छात्राओं को रजत पदक देकर सम्मानित किया है।

श्रीमती सुरक्षादेवी आर्या, श्रीमती ओमवती आर्या, श्रीमती सुवीरादेवी आर्या तथा श्रीमती विमला आर्या आदि महिलाओं ने भी ऋषिलंगर के कार्य में तथा श्री युधिष्ठिरसिंह दयानन्दमठवासी ने पानी की संतोषजनक व्यवस्था करके सभा की सहायता की है। श्रीमती प्रभातशोभा पंडिता तथा उनकी सुपुत्री श्रीमती उज्ज्वला जी ने ऋषिलंगर के संचालन में स्वयं हाथबटाकर अन्य कार्यकर्ताओं को उत्साहित किया तथा हरयाणा और बाहर से आये हुए नशाबन्दी कार्यकर्ताओं को अपनी ओर से मिठाई वितरित की। सोनीपत के मा० रतनसिंह आर्य ने भी ऋषि लंगर में कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सहयोग दिया। प्रि० सत्यवीर विद्यालंकार ने इन दिनों सभा कार्यालय में बैठकर सम्मेलन की व्यवस्था में विशेष योगदान किया।

आर्यजगत् के वयोवृद्ध सर्वमान्य वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा दीनानगर (पंजाब) से चलकर अजमेर आये तथा वहां से इस सम्मेलन में रोहतक पधारे। उन्हें बड़ी आयु में तथा लम्बी यात्रा करने पर जो कष्ट तथा असुविधा हुई है, उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने शराबबन्दी सत्याग्रह की सभा द्वारा तैयारी किये जाने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए आर्यजनता को आशीर्वाद दिया और ओ३म् ध्वजारोहण करते हुए आर्यजनता को आह्वान किया कि आर्यो शराबबन्दी आन्दोलन को तन, मन तथा धन से सभा को सहयोग देकर सफल करो क्योंकि आर्यो आर्यसमाज का कार्य समाजसुधार तथा परोपकार करने का है। आपने स्वर्गीय महाशय भरतसिंह वाटिका बनाने हेतु शिलान्यास भी किया।

आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी आर्यनेता तथा आर्य सत्याग्रहों के प्रमुख संचालक स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने सम्मेलन के अवसर पर पधारकर सभा का मार्गदर्शन किया और सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्यजनता को शराबबन्दी सत्याग्रह करने की अपील की और सफल करने के लिए प्रत्येक ग्राम से ११ सत्याग्रहियों के नाम तथा ११०० रु० सभा को भेजकर अपना योगदान देने के लिए कहा। आपकी इस अपील पर अनेक आर्यसमाजों एवं गुरुकुलों के अधिकारियों ने ११ सत्याग्रहियों के नाम तथा ११०० रु० नकद दान दिया तथा वचन दिया। इसी प्रकार गुरुकुल झज्जर के ब्र० विजयपाल जी, जिला वेदप्रचार मण्डल जीन्द के संयोजक एवं कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के संचालक स्वामी रतनदेव जी अपने गुरुकुलों के छात्रों के साथ इस सम्मेलन में पधारे। गुरुकुल धीरणवास के संचालक स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल आर्यनगर हिसार तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद के अध्यापक एवं छात्रों ने भी सम्मेलन में सम्मिलित होकर आर्यसमाज के संगठन का परिचय दिया। सभा की उपप्रधाना बहन सुभाषिणी देवी अपनी अध्यापिकाओं तथा छात्राओं के साथ सम्मिलित हुई। महारानी किशोरी महिला महाविद्यालय रोहतक, श्री पाल भारतीय उच्च विद्यालय रोहतक ऐवं सैनिक उच्च विद्यालय हनुमान कालोनी रोहतक के छात्रों ने भी सम्मेलन में पहुँचकर शोभा को बढ़ाया।

इस नशाबन्दी सम्मेलन में अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अधिकारी तथा कार्यालय के स्टाफ के अतिरिक्त भारत भर से नशाबन्दी के प्रतिनिधि भी दूर-दूर से यात्रा करके तथा कष्टों को सहन करते हुए रोहतक पधारे। हम विशेषकर मणिपुर राज्य से पधारी महिलाओं के विशेष आभारी हैं जिन्होंने इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर समारोह को चार चांद लगा दिये। गुजरात राज्य के आबकारी मन्त्री श्री गोविन्दभाई ने रोहतक पधारकर हरयाणा की जनता तथा सरकार को नशाबन्दी के समर्थन में जो सन्देश दिया है, वह हमें सदा स्मरण रहेगा।

इस सम्मेलन को सफल करने में हरयाणा नशाबन्दी अभियान के संयोजक श्री विजयकुमार जी (पूर्व उपायुक्त) ने दिनरात एक कर दिया। उन्होंने सभा से बिना किराया लिए अनेक नगरों तथा ग्रामों का अपनी गाडी द्वारा भ्रमण किया तथा सम्मेलन में हरयाणा की जनता को मार्मिक शब्दों में सावधान किया कि यदि हम शराबबन्दी कार्यकर्त्ता संगठित नहीं हुए तो शराबपोषक सरकार तथा शराब के व्यापारी हमारी वैदिक संस्कृति को नष्ट कर देंगे। भ्रष्ट सरकार जनता को शराब के नशे में फंसाकर राज्य करना चाहती है। अतः हमें मिलकर शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करना चाहिये। आपने हरयाणा के आबकारी एवं कराधान मन्त्री ए सी. चौधरी के उस वक्तव्य की निन्दा की जिसमें उन्होंने कहा था कि आर्यसमाज के

(शेष पृष्ठ ४ पर)

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
## दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक १७-११-९२

आदरणीय सरपंच जी,

नमस्ते !

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके गांव में इस समय शराब का ठेका खुला हुआ है जिसे बन्द करने के लिये, आपकी पंचायत ने अपनी मर्जी से प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजा है। ऐसा करके आप लोगों ने बड़ी समझदारी दिखाई है। शराब से सारे समाज का सर्वनाश हो रहा है और अब बच्चे व जवान भी इसकी लत का शिकार हो गये हैं। यदि हमने अपनी वर्तमान तथा आनेवाली पीढ़ियों को बचाना है तो शराब का पूर्ण बहिष्कार करना होगा। लोग शराब पीकर बर्बाद हो रहे हैं और सरकार को यह जहर बेचकर, अपनी आमदनी बढ़ाने की पड़ी है। शराब को आमदनी से सरकार किसका भला करना चाहती है? अब सरकार अपने जिला अधिकारियों के जरिये आप पर अनुचित दबाव डलवायेगी कि आप ठेका बन्द करने के प्रस्ताव को वापस ले लें। इसके लिए आपको धमकी भी दी जा सकती है कि आपके खिलाफ इनक्वारी करवायेंगे या आपके गांव को कोई ग्रान्ट नहीं दी जायेगी। यदि आप अपने लोगों का भला चाहते हैं तो अधिकारियों की इस गीदड़ भभकी से कतई न डरें और शराब का ठेका बन्द करने केलिए जो प्रस्ताव आपकी पंचायत ने अपनी इच्छा से पास किया है उस पर कायम रहें और किसी दबाव में आकर इसे वापस न लें। लोग, सरकार से बड़े हैं और पंचायत को भलाई के काम में उठाये गये कदम से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। जो प्रस्ताव आपकी पंचायत ने पास किया है, उसके लिये पंचायत एक्ट में आपको अधिकार दिया गया है। कुछ दिनों के बाद, आबकारी व कराधान आयुक्त, हरयाणा द्वारा आपको सुनवाई के लिये चण्डीगढ़ या किसी और जगह बुलाया जायेगा। उस समय आपको अपने साथ अपनी पंचायत का कार्यवाही रजिस्टर भी ले जाना होगा जिसमें शराब का ठेका बन्द करने का प्रस्ताव दर्ज है। वहां आपका ब्यान लिखा जायेगा जिसमें आपने शराब की दुकान बन्द करने का प्रस्ताव पास करने की बात कहनी है। आप सुनवाई के लिए जरूर जायें और मजबूती के साथ अपनी बात कहें। इसके लिए आने-जाने का जो भी खर्च होगा वह आपकी पंचायत के फण्ड से ही किया जायेगा। आपको अपनी जेब से कुछ खर्च नहीं होगा। शुभ कामनाओं के साथ।

**(विजयकुमार)**
आई० ए० एस० (रिटायर्ड)
संयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति

## वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार की ओर से दिनांक १३-११-९२ की रात्री को ग्राम धीरणवास, १४-११-९२ को प्रातः हवन दोपहर व रात्री को ग्राम भिराणी १५-११-९२ को दोपहर व रात्री को वेदप्रचार तथा १६-११-९२ को प्रातः हवन डाबड़ी जिला गंगानगर (राज०) में वेदप्रचार का कार्यक्रम बड़े उत्साह एवं शान्त वातारण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती कुलपति गुरुकुल धीरणवास, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, विदुषी बहिन सुनीति आर्या (दिल्ली), महाशय दीवानसिंह आर्यसमाज बालसमन्द आदि विद्वानों ने गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व, राष्ट्ररक्षा, क्रान्तिकारियों की देश की आजादी में विशेष भूमिका, आर्यसमाज का गौरवमय इतिहास, नवयुवकों के कर्तव्य एवं कार्य, नारी उत्थान, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन एवं कार्य, वेदों का महत्त्व, सुखी जीवन जीने की तरतीब, पाखण्ड तथा शराब बन्दी पर विस्तार से प्रकाश डाला। क्रान्तिकारी जी ने विशेष रूप से हरयाणा प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी गतिविधियों तथा शराब मे होनेवाली बर्बादी का दर्दनाक चित्र खींचा। लोगों से शराब धूम्रपान, जुआ, ताश खेलना, आदि बुराई से दूर रहने की पुरजोर अपील की।

महाशय जयपालसिंह तथा पं० जबरसिंह खारी की भजन मण्डली के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। साथ में गुरुकुल के दो छात्रों ने भी समय समय पर भजन प्रस्तुत किए। सभी जगह प्रचार में काफी संख्या में नर नारियों ने बढ़ चढ कर भाग लिया। १६-११-९२ को ग्राम डाबड़ी में हवन पर १० पढ़े लिखे नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिए। तीन शराबियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। दो नवयुवकों ने हुक्का व धूम्रपान की बुराई को छोड़ने की घोषणा की। स्वामी जी ने यज्ञोपवीत व हवन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महाशय रामजी लाल आर्य प्रधान गुरुकुल कार्यकारिणी ने गांव में विधिवत् आर्यसमाज की स्थापना करने तथा साप्ताहिक हवन करने का सुझाव दिया। आर्यसमाज बालसमन्द की ओर से कुछ वैदिक साहित्य भी देने आश्वासन दिया। सभी गांवों में लोगों ने गुरुकुल को तन मन धन से सहायता करने का वचन दिया। कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक रहा। लोग वेदप्रचार से बहुत प्रभावित हुये। विद्वानों की भूरि-भरि प्रशंसा की। सभा को ५०० रु० दान दिया गया।

बलबीरसिंह आर्य, मन्त्री गुरुकुल धीरणवास

## आर्य भजनोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल जीन्द के संयोजक स्वामी रतनदेव जी सरस्वती के निर्देशन में दिनांक २७-१०-९२ को आर्यसमाज रामनगर जीन्द में स्वामी भीष्म आर्य भजनोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन हुआ। प्रातः १० बजे हवन किया गया। तत्पश्चात् स्वामी रतनदेव जी की अध्यक्षता में समारोह हुआ। मुख्य अतिथि सेठ दीपचन्द जी गोयल थे। सर्वप्रथम पं० चन्द्रभान जो को भजन मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुये। उसके बाद स्वामी जी ने विद्यालय की आवश्यकता क्यों हुई व महत्त्व तथा वैदिक धर्म को जन जन तक पहुंचाने एवं सामाजिक बुराइयों को खत्म करने का आह्वान किया। लोगों से इस शुभ कार्य में तन मन धन से सहयोग की अपील भी की। मुख्य अतिथि गोयल साहब ने २१ हजार रुपये की राशि विद्यालय के लिए दी। अन्य उपस्थित लोगों ने दिल खोलकर दान दिया। इसके अतिरिक्त श्री रामधारी शास्त्री, लाला जयकिशनदास आर्य प्रधान जीन्द शहर, मा० बद्री प्रसाद आर्य, श्री देवराज आर्य, मा० रायसिंह आर्य सह संयोजक वेद प्रचार मण्डल जीन्द आदि महानुभावों ने भी विचार रखे।

१ नवम्बर से आर्यसमाज रामनगर जीन्द में विद्यालय का कार्य विधिवत् आरम्भ हो गया। पं० चन्द्रभान आर्य भजनोपदेशक को विद्यालय का प्राचार्य नियुक्त किया गया है। संस्थापक स्वामी रतनदेव जी, कोषाध्यक्ष श्री देवराज आर्य जीन्द तथा वेदप्रचार मण्डल जीन्द के सभी सदस्य व सभी शहर समाजों के अधिकारी एवं शहर के प्रतिष्ठित सज्जनों ने पूर्ण सहयोग देने का अश्वासन दिया है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

कार्यकर्त्ताओं ने सरपंचों पर दबाव डालकर शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार का आर्थिक ढांचा कमजोर करने का षड्यन्त्र रचा है। परन्तु वास्तविकता यह है कि स्वयं सरकार पंचायतों पर दबाव डालकर तथा लालच देकर प्रस्तावों को रद्द करवाने का यत्न कर रही है।

इस सम्मेलन के मंच का सफल संचालन सभा के पुस्तकाध्यक्ष पं० हरिराम आर्य ने किया। इन्होंने सम्मेलन में भारतभर से आए हुए शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं तथा स्कूल कालेजों के छात्र तथा छात्राओं को सभा की ओर से लगभग दस हजार रुपए का हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित वैदिक साहित्य निःशुल्क वितरित करवाया।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मचन्द जी सम्मेलन के अवसर पर कार्यालय में उपस्थित रहे और मंच तथा पंडाल के निर्माण कार्य में कार्यकर्त्ताओं के साथ रात्रि तक स्वयं भी कार्य करते रहे। इसी प्रकार इस सम्मेलन को सफल करने के लिए हमारे अनेक भाई बहिनों ने तन, मन तथा धन देकर हमारा हाथ बटाया है, उनका जितना भी धन्यवाद किया जावे थोड़ा है। मैं सभा की ओर से सभी का हार्दिक धन्यवाद तथा आभार प्रदर्शित करता हूं।

## ईक्कस जिला जीन्द में शराबबन्दी लागू

गांव में शराबियों द्वारा अभद्र व्यवहार एवं हुल्लड़बाजी करने के कारण गांव तंग आ चुका था । गत अगस्त मास से कुछ नवयुवकों व सज्जन आदमियों ने इस शराबबन्दी बीड़े को उठाया । प्रथम गांव इकट्ठा, किया नहीं हुआ । न सरपंच का सहयोग मिला । कुछ नवयुवक गांव की चौपाल में भूख हड़ताल पर बैठ गए । सरपंच का सहयोग फिर भी नही मिला । गांव में सभी बिरादरी के नवयुवकों का समाज सुधार आर्य युवामण्डल का गठन हुआ । सैकड़ों नवयुवक सरपंच के घर गए और कहा त्यागपत्र दो अन्यथा गांव में शराबबन्दी लागू करके जो नवयुवक भूख हड़ताल पर बैठे उन्हें उठावो । सरपंच विवश हो गया । तीन महीने से गांव में पूर्ण शराबबन्दी है । चार चरणों में कार्यक्रम चला रखा है । १) समझाना, २) धरना देना, ३) जुर्माना करना, ४) पुलिस में देना । पीनेवाले के ५० रु०, बेचनेवाले के १०० रुपये तथा फौजी भाई भी बेच नहीं सकते । अब गांव में शान्ति है । मा० भीमसिंह पी.टी.आई. के निर्देशन में युवा संगठन कार्य कर रहा है । प्रधान कमलजीतसिंह, कर्मपालसिंह मन्त्री श्री ताराचन्द, हरिजन सैल के प्रधान श्री कृष्णकुमार आदि विशेष सक्रिय हैं । पंचायत का भी पूर्ण सहयोग एवं समर्थन मिल रहा है । अन्य गाव के नवयुवक भी इस गाव से प्रेरणा ले सकते हैं । शराब से सर्वनाश हो रहा है । इसे बन्द करो वरना बर्बाद हो जाओगे ।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्किारी सभा उपदेशक

## कोथकलां व खुर्द में शराबबन्दी लागू

ग्राम कोथकलां व खुर्द जिला हिसार में प्रतिदिन ९-१० हजार रुपये की शराब पी जाते थे । प्रतिदिन लड़ाई-झगड़े तथा घरों में कलह भी रहती थी । इस प्रकार ग्राम का वातावरण बहुत बिगड़ चुका था और सज्जन मनुष्य एवं महिलाओं का जीना दूभर हो रहा था । खेड़ी नारनोद से ठेकेदार जीप द्वारा बोतलें डाल जाता था । ग्राम में १५-२० घरों व दुकानों में अवैध तरीके से शराब बेची जाती थी ।

दोनों पंचायतों ने विवश होकर ५ अक्तूबर से ग्रम में शराबन्दी लागू करनी पड़ी । बेचनेवाले को ५०० रु० दण्ड, पीनेवाले को १२५ रु० का दण्ड लगाया जाता है । फौजियों पर भी पाबन्दी है । ग्राम में अब पूरी तरह शान्त बातावरण है । सरपंच रणधीरसिंह एवं सरपंच रामस्वरूप तथा वेदपाल आर्य पूरी तरह सक्रिय हैं ।

## शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री गजराम सिंह जी ग्राम मंडोरा जिला मुजफरनगर उत्तरप्रदेश का निधन हृदयगति रुकने से दिनांक ५-११-९२ को होगया । वे ४५ वर्ष के थे उन्होंने उत्तरप्रदेश व हरयाणा प्रान्त में आर्यसमाज व वेद का काफी प्रचार किया । वे कर्तव्यनिष्ठ व चरित्रवान् थे । उनके निधन से आर्यसमाज को काफी क्षति पहुंची है । हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे ।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

**रुकिये !**
**नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती है ।**

# प्रभुभक्ति का आनन्द कब आएगा ?

भक्ति भक्त शब्द की भाववाचक संज्ञा है। भक्त का अर्थ है जोड़ना, मिलाना और इसका विपरीतार्थक शब्द है विभक्त जिसका अर्थ है भाग करना। पृथक् करना। अतः भक्ति शब्द का अर्थ हुआ मिलना। आप किससे मिलना चाहते हो, अर्थात् किसकी भक्ति करना चाहते हैं ? कौन है आपका इष्टदेव या सच्चा साथी जो आपकी सदैव सहायता करता है और कभी धोका नहीं देता जिसपर आपको पूरा भरोसा है। क्या आपके परिवार में या रिश्तेदारों में या कोई मित्र ऐसा है जो विपत्ति में हर समय निःस्वार्थ भाव से आपका साथ देने को तैयार हो। यदि आपको अपने किसी जीवनसाथी पर गर्व है तो आप बड़े सौभाग्यशाली हैं। मैंने अपने जीवन में जो अनुभव प्राप्त किया है उसके अनुसार प्यारे प्रभु के अतिरिक्त और कोई विश्वसनीय साथी नहीं है। परमपिता परमात्मा के जितने उपकार हैं उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसका जितना धन्यवाद किया जावे, थोड़ा है। उसकी भक्ति का रसानन्द वही प्राप्त कर सकता है जो उसका सच्चा भक्त है।

भक्ति के मार्ग पर चलने के लिये भक्ति के दो अंगों का सशक्त होना आवश्यक है। पहला अंग है ज्ञानरूपी चक्षु और दूसरा अंग है श्रद्धारूपी पांव। ज्ञान के बिना भक्ति अन्धी है और श्रद्धा के बिना पंगु (लंगड़ी) है। हम देखते हैं कि पौराणिक भक्तों में श्रद्धा तो है परन्तु अन्धी है ! अन्धविश्वास के कारण भेड़चाल चल रहे हैं। भटक रहे हैं, धक्के खा रहे हैं, कहीं शान्ति प्राप्त नहीं हो रही है। आर्यसमाजी भक्तों में कुछ ज्ञान है तो वह लंगड़ा है अर्थात् श्रद्धा नहीं है। जब तक अन्धे और लंगड़े में एकता नहीं होगी तब तक मार्ग पर चलना कठिन है।

हम प्रायः आर्यसमाज के सत्संग में देखते हैं कि मन्त्रों को जल्दी जल्दी बोलकर घास काटते हैं। जब तक हम मन्त्रों का अर्थ नहीं समझेंगे तब तक उच्चारण शुद्ध नहीं होगा। समिधाएं जो श्रद्धा का प्रतीक हैं उनका साफ सुथरा दुर्गन्धरहित होना आवश्यक है परन्तु हमने देखा एक जगह हवन के लिये पुरानी, मैली, गली हुई समिधाएं रखी हुई थीं। पुरोहित जी ने कुछ कहा नहीं, हम से रहा गया नहीं, कहने का कुछ असर नहीं, ऐसे यज्ञ हवन से कोई लाभ नहीं, जिनमें उत्तम-उत्तम सलिधाएं घृत सामग्री का प्रयोग नहीं। शान्ति पाठ के बाद प्रायः प्रसाद वितरण किया जाता है। प्रसाद की श्रेष्ठता पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। कई बार प्रसाद खाकर जी खराब हो जाता है। देखने में आया, प्रसाद नंगा उघाड़ा रखा रहता है, उस पर मक्खियां बैठ जाती हैं। प्रसाद में पुराने बताशे या घटिया दर्जे की बूंदी जो सस्ती पड़ती है, बांटी जाती है। इस बात को कोई समझदार व्यक्ति हो सोचता है कि घटिया प्रसाद का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यह कुछ अनुभव की बात है जो श्रद्धा न होने के कारण भक्ति को असफल करती है।

भक्ति करने के लिए पहले व्रत लेना चाहिये। व्रत किसे कहते हैं ? सारे दिन भूखे रहने का नाम व्रत नहीं है। व्रत का अर्थ है वर लेना या प्रतिज्ञा करना। जैसे कोई व्यक्ति किसी कार्य के दुष्परिणामस्वरूप यह धार ले कि भविष्य में अब मैं ऐसा दुष्कर्म कभी नहीं करूंगा। ओ३म् विश्वानि देव का प्रार्थना मन्त्र प्रतिदिन रटते रहो, कोई लाभ नहीं है। जैसे गुड़-गुड़ कहने से जीभ मीठी नहीं होती जब तक गुड़ को चखा न जाये। ऐसे ही प्रार्थना करने का लाभ तब होगा जब मन्त्र के अनुसार कार्य करेंगे।

अतः प्यारे प्रभु की भक्ति का रसानन्द प्राप्त करने के लिए अपने को भक्ति के योग्य बनाओ अर्थात् आत्मनिरीक्षण करके दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को निकालो और भक्ति का प्रसाद ग्रहण करने के लिए भद्र भावों से मनरूपी पात्र को उज्ज्वल बनाओ। अमीचन्द जब अपनी समस्त बुराइयों को छोड़कर सच्चा भक्त बन गया तब उसे जो आनन्द प्राप्त हुआ वह लिखता है:—

तेरी कृपा से जो आनन्द पाया ।
वह वाणी से जाये क्योंकर बताया ॥

आओ हम भी इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए जीवन को पवित्र बनायें।

—देशराज आर्य
आर्यसमाज मन्दिर बल्लबगढ़ (फरीदाबाद)

# वेदप्रचार मण्डल जीन्द का द्वितीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक ९-१०-११ अक्तूबर १९९२ को गत वर्ष की भांति उचाना मण्डी (जीन्द) में वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। लोग उत्साह से अपनी-अपनी आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के बेनर लगाकर जयघोष करते हुए पहुंचे। ९ अक्तूबर को दो बजे पाहलू चोपटा से जलूस आरम्भ हुआ जिसका नेतृत्व शिक्षाविद् त्यागमूर्ति स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती संयोजक वेदप्रचार मण्डल जीन्द, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, वैद्य दयाकिशन जी गुरुकुल (कुम्भाखेड़ा) डा० कुमारी दर्शना आचार्या कन्या गुरुकुल खरल तथा श्री सूबेसिंह आर्य (करसिन्धु खेड़ा) आदि कर रहे थे। सर्वप्रथम बैंड बाजा, विद्वानों का काफला, कन्या गुरुकुल की छात्राएं हाथ में तलवार व लाठी लिए हुए व्यायाम प्रदर्शन करती हुई, माताएं बहनें ट्रैक्टरों में भजन गाती हुई, महाशय खेमसिंह क्रान्तिकारी एवं पं० रामनिवास आर्य तथा श्री ओमप्रकाश आर्य (पावटी) की भजनमण्डलियां गीत गाती हुई चल रही थीं। आर्यों ने देश जगाया री कोई मानो या न मानो। सुधार करें आर्य बिगाड़े सारी दुनिया, आई फौज दयानन्द वाली, रास्ता कर दो खाली। फिर गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के छात्र व्यायाम प्रदर्शन व नारे लगाते हुए चल रहे थे। महर्षि दयानन्द की जय हो, ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे, आर्यसमाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, गौमाता की रक्षा हो, शराब हटाओ, देश बचाओ आदि आदि। सब से पीछे गांव व मण्डी के नरनारी चल रहे थे। जलूस का दृश्य देखते ही बनता था। मण्डी व गांव उचाना की नारियां मकान की छतों पर चढ़कर जलूस का कार्यक्रम देख रही थी। मार्ग में पानी आदि की उत्तम व्यवस्था थी।

इस उत्सव में स्वामी रतनदेव जी संस्थापक एवं संचालक (कन्या गुरुकुल खरल व कुम्भाखेड़ा), स्वामी गोरक्षानन्द, स्वामी निर्मलानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द जी, डा० दर्शना जी आचार्या, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक पं० रतनसिंह जी तथा उपदेशिका कुमारी रतनकौर एम. फिल (गेन्दाखेड़ा) आदि ने वेदशिक्षा, राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, नारी शिक्षा, गुरुकुलों का महत्त्व, अन्धविश्वास, पाखण्ड, हवन का महत्त्व, आत्मा-परमात्मा तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। स्वामी रतनदेव जी ने विशेष रूप से लोगों को आह्वान किया कि उठो जागो अब समय आगया है। देश में बहुत बड़ा परिवर्तन होने जा रहा है। ओ३म् के झण्डे के नीचे आओ और शराबबन्दी एवं आर्यराष्ट्र बनाने का संकल्प लो। क्रान्तिकारी जी ने भी शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को समझाया तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी बारे गतिविधियों की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त महाशय खेमसिंह क्रान्तिकारी, पं० चन्द्रभान जी, पं० रामनिवास जी, पं० ओमप्रकाश जी आर्य तथा महाशय झाब्बेराम आदि के समाज सुधार के शिक्षाप्रद क्रान्तिकारी भजन हुए। ग्राम बधाना के स्कूली बच्चों का भजनों व भाषणों का रोचक कार्यक्रम रहा। गुरुकुल खरल एवं गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के छात्र-छात्राओं का कार्यक्रम भी प्रशंसनीय रहा। प्रातःकाल प्रतिदिन हवन यज्ञ किया गया। श्री जयकिशनदास आर्य प्रधान आर्य समाज जीन्द तथा उचाना मण्डी के सेठों ने दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दिया। आर्यसमाज मन्दिर में वैद्य दयाकिशन जी ने भोजन व्यवस्था को सम्भाल रखा था। कार्यक्रम बहुत हो प्रेरणादायक एवं सफल रहा। सभा को ५०० रुपये दान दिया गया।

—मा. रायसिंह आर्य
सह संयोजक वेदप्रचार मण्डल जीन्द

(पृष्ठ २ का शेष)

अनुसार ओषध निर्माता कम्पनी की उस औषधि के पैकेट पर निर्माणक योग लिखना पड़ता है। इस प्रकार केन्द्रीय सरकार एक कानून बनाये, जिसके तहत घी, तेल, मसाले, बिस्कुट आदि खाद्य पदार्थ, टूथ पेस्ट, साबुन, क्रीम आदि प्रसाधनों के पैकटों पर उनके निर्माणक योग का विवरण लिखा होना चाहिए।

आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा समाचारपत्रों को भी उस कानून के तहत पाबन्द किया जावे कि किसी ऐसे पदार्थ के विज्ञापन का प्रसारण व प्रकाशन न करें जिनके बारे में निर्माणक-योग का विवरण उनके साथ न दिया गया हो। इस पर उद्योगपति थोड़ा हुल्ला-गुल्ला इस आड़ में कर सकते हैं कि ऐसा करने से उनकी तकनीक नकल कर ली जाएगी परन्तु आज इन सब वस्तुओं की निर्माण विधियां किसी से छिपी नहीं रह गई हैं। कानून का उद्देश्य केवल उपभोक्ता को उसके निर्माणक योग की जानकारी देना है ताकि वह अपने धर्माधर्म विश्वास आदि के अनुसार उनका प्रयोग कर सके।

गोहत्या बन्द हो इसकी प्रबल आवाज उठाई जा रही है, परन्तु गोहत्या के अतिरिक्त भी कितने ही घोषी (दूध का धन्धा करने वाले) डेयरियों के स्वामी दूध देने वाले पशुओं विशेषतः गायों के साथ अति पापपूर्ण निर्दयता का व्यवहार करते हैं वह भी प्रभावशाली कानून द्वारा बन्द होना चाहिए। क्योंकि सहज धन प्राप्ति के पेसा पंथी व्यापारी अपनी कुटिलता सहज नही त्यागेंगे।

गाय छः सात मास दूध देते रहने के बाद गर्भवती होकर जब वह सूखने लगती है तो आततायी डेयरी वाला (सब ऐसे नहीं होते) अधिक दूध प्राप्त करने के लिए अमानुषिक तरीके अपनाता है।

१- सूचिका द्वारा टीका लगाकर दूध झारता है, ऐसा करने से कई बार दूध के साथ रक्त भी झरने लगता है। यह आधुनिक विज्ञान का अभिशाप है।

२- गौ की जिननेन्द्रिय में बांस की थोथी नली चढ़ाकर फूंक मारता है जिससे गाय का शरीर ढीला पड़कर थोड़ा बहुत दूध निस्र जाता है।

३- कपड़े की गेंद बनाकर गाय की योनि में ठूंसता है। गेंद एक डोर से बन्धी होती है। फिर उस गेंद को निकालकर गाय के सामने चाटने के लिए डाल देता है। ममतामयी गाय अपना बछड़ा समझ उसे चाटने लगती है और अपनी देह ढीली छोड़ देती है।

४- पाशविक शक्ति के प्रयोग से भी दूध निकाला जाता है। दो चार व्यक्ति अपनी कोहनियों को अड़ाकर गाय को विवश कर दूध निकालने का प्रयत्न करते हैं। बड़े नगरों में दूध देने वाले पशुओं को अस्वस्थ स्थानों पर तंग मकानों में रखा जाता है। खान पान में भी उनके स्वास्थ्य का नही अधिक दूध प्राप्ति के विचार को मुख्य रखने की परिपाटी सी बन गई है।

गौ सब प्रकार के अत्याचारों को सहन करती हुई भी अपना अमृत लोगों को बांटती है किन्तु विज्ञान व शास्त्रों और आयुर्विज्ञान की यह धारणा सत्य है कि पशुबल तथा अत्याचारों से प्राप्त किया, भयभीत व आतंकित गौ का दूध स्वास्थ्यलाभ के स्थान पर स्वास्थ्य पर अत्यन्त हानिकारक प्रभाव डालता है। गौ के साथ अन्याय की सीमा उस समय टूट जाती है जब आठ नौ माह दूध देने के बाद वह दूध से सूख जाती है और उसका निर्मोही, स्वार्थी, अन्यायी, कृतघ्न स्वामी उस गौ को कसाई के हाथ बेचकर नई ब्याई गाय ले आता है।

गौ मानवमात्र के लिए इतना उपयोगी पशु होते हुए, न जाने क्यों पाषाणहृदय भारत सरकार, लालची व्यापारियों की उपेक्षा का शिकार बनी हुई है। भारतवंशियों को वे देश में हों अथवा विदेश में गाय की महत्ता और श्रद्धा को नही भूलना चाहिए। आज देश में जो शोषण, भ्रष्टाचार, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, स्वार्थ पनप रहा है इसके अन्य कारणों के साथ-साथ गोमाता के प्रति बरती जाने वाली घिनौनी उपेक्षा भी है। यह एक प्रमुख प्रश्न है जिस पर हमें विचार करना चाहिए। गाय कह रही है:—

तृण खा स्वयं जीवित रहूं पर पेय पिलाती प्यार से।
प्रतिकार इसका है यही निशिदिन कटूं असिधार से॥

## बेरोजगार नवयुकों के लिए सुनहरी अवसर

आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार को गति देने के लिए वेदप्रचार मण्डल जीन्द की ओर से १ नवम्बर १९९२ को आर्यसमाज रामनगर में स्वामी भीष्म वैदिक भजनोपदेशक विद्यालय का कार्यक्रम विधिवत् आरम्भ हो चुका है। पं० चन्द्रभान जी आर्य भजनोपदेशक विद्यालय के प्राचार्य हैं। ८वीं व १०वीं कक्षा पास संगीत में रुचि रखने वाला, सुरीली आवाज में गाने गानेवाला, चरित्रवान्, ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा अनुशासन का पालन करनेवाला नवयुवक हरमोनियम बाजा, ढोलक, चिमटा (खड़ताल) बजाने की ट्रेनिंग लेकर कुछ ही महीनों में आर्यसमाज के भजनोपदेशक बनकर कम से कम एक हजार रुपये मासिक का रोजगार प्राप्त कर सकता है। प्रवेश शुल्क केवल मात्र २१ रुपये है। इच्छुक नवयुवक नीचे लिखे पते पर शीघ्र सम्पर्क करें।

चन्द्रभान आर्य प्राचार्य
स्वामी भीष्म वैदिक आर्य भजनोपदेशक विद्यालय,
आर्यसमाज, रामनगर
रोतक रोड जीन्द (हरयाणा)

(पृष्ठ १ का शेष)

## पंजाबकेसरी

लालाजी बढ़-चढ़कर समाजसेवा के कार्यों में भाग लेते थे। अपनी आमदनी के धन को दान में दे देते थे। तप-त्याग का जीवन बिताते थे। पंजाब की जनता भी आपकी आज्ञा पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहती थी। आपने अपनी कमाई में से पचास हजार रुपए शिक्षण संस्थाओं में दान में दिए। विशेषकर निर्धन गरीब छात्रों की आप बहुत ही सहायता करते थे। भारत की स्वतन्त्रता के लिए उनकी बलिदान की भावना और सभाओं में सिंहगर्जना के कारण जनता उन्हें "पंजाबकेसरी" के नाम से पुकारने लगी।

## समाजसेवा

शिक्षा के क्षेत्र के अतिरिक्त लाजपतराय समाजसेवा तथा देशसेवा के कार्य में आगे बढ़कर भाग लेते थे। सन् १८९६ में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा। लाजपतराय ने आर्यसमाज के माध्यम से अन्न-वस्त्र पीड़ितों को देकर बहुत बड़ा कार्य किया। सन् १८९९ में बंगाल, मध्यभारत और राजस्थान में कहत फैल गया। हजारों नरनारी भूखे मरने लगे। हजारों बालक भूखे मर गए। अंग्रेजी सरकार ने कोई सहायता न की। लाजपतराय ने वहां आर्यसमाज के सहायता शिविर खोलकर अन्न-धन-वस्त्र से लोगों की जान बचाई। इसी प्रकार १९०७ व १९०८ में भी उड़ीसा में अकाल पड़ा वहां भी आपने खूब सेवा की। पंजाब के कांगड़ा के भूकम्प में भी आपने वहां जाकर लोगों की खूब सेवा की।

## अछूतोद्धार

सन् १९१२ में अछूतोद्धार सम्मेलन किया गया। दीन-हीन गरीब अछूतों की सेवा व शिक्षा के लिए भी अपने पास से ४० हजार रुपये दान में दिए।

आर्यसमाज व लाजपतराय द्वारा अछूतों के लिए शिक्षासंस्थाएं खोली गई। इस दिशा में भी आर्यसमाज ने बहुत कार्य किया है। आर्यसमाज व स्वामी श्रद्धानन्द से प्रेरणा पाकर ही म० गांधी जी ने हरिजनोद्धार में बहुत कार्य किया है। आर्यसमाज ने अपनी शिक्षण संस्थाओं गुरुकुलों आदि में हरिजनों को प्रवेश दिलाकर इस कलंक को मिटाने का भरसक प्रयत्न किया है। किन्तु आर्यसमाज ने कभी भी गरीबों के लिए "हरिजन" शब्द को स्वीकार नहीं किया। हरिजन शब्द से एक अलग वर्ग एवं जाति को बढ़ावा मिला है। आर्यसमाज इन्हें अछूत-दलित-पिछड़े हुए ही कहकर पुकारता रहा है। समाज में इन्हें समानता दिलाने के लिए पूरा प्रयत्न करता रहा है।

## कांग्रेस में प्रवेश

सन् १८८५ में लार्ड डफरिन की सम्मति से, जो उस समय वायसराय थे, मि० ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की थी। इसका पहला अधिवेशन बम्बई में, दूसरा १८८६ में कलकत्ता में, चौथा १८८८ में प्रयाग में हुआ। लाला जी इसमें शामिल हुए तब वे २३ वर्ष के थे। आपने इस उठती जवानी में कौन्सिल सुधार का बिल उपस्थित किया। कांग्रेस मे शामिल होते ही लाजपतराय ने इसमें जान डाल दी। लाजपतराय ने १८९७ में विक्टोरिया महारानी के राज्य की हीरक-जयन्ती मनाने तथा रानी की मूर्ति स्थापित करने का डटकर विरोध किया। इसे पराधीनता का उपहार बताया। इधर महाराष्ट्र में तिलकजी ने भी इसका विरोध किया। वे दोनों गर्मस्वभाव के थे। स्वराज्य की भिक्षा मांगने के विरोधी थे। सरकारी नीतियों का विरोध करते थे। सरकार लाजपत को गिरफ्तार कर देश निकाला देना चाहती थी। इसी प्रकार तिलक को भी।

## देश निकाला

१९०५ में अंग्रेजी सरकार ने बंगाल को विभाजित करने का षड्यन्त्र रचा। इसके विरोध में आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। इधर पंजाब में भी अंग्रेज सरकार ने जमीन पर किसानों पर भारी टैक्स लगा दिए। लाजपतराय ने तथा सरदार अजीतसिंह ने जनता का आन्दोलन खड़ा कर दिया। टैक्स न देने का आह्वान किया। इस अपराध में दोनों को ही पकड़कर बर्मा में माण्डले जेल में बन्द कर दिया गया। यह १६ मई १९०७ का साल था। यह देशनिकाला हुआ। अन्त में ये दोनों ११ नवम्बर १९०७ को छोड़ दिए गए। फिर १९१४ में भारत की स्थिति रखने के लिए इंग्लैण्ड गए किन्तु सरकार ने भारत वापस आने में पाबन्दी लगादी, वे वहां से अमेरिका चले गये। भारत की आजादी का प्रचार करते रहे। यह भी पांच वर्ष का देशनिकाला ही रहा।

## साईमन कमीशन

भारत को आजादी देनी चाहिए या नहीं, इसकी जांच करने के लिए ३० अक्तूबर १९२७ को साईमन कमीशन भारत आया। इसमें सब अंग्रेज थे। भारत का कोई भी सदस्य न था। जब लाहौर में यह कमीशन पहुंचा तो लाजपतराय के नेतृत्व में इस कमीशन का यह कहकर साईमन कमीशन वापिस जाओ इसका बहिष्कार किया गया। लाखों लोग काले झण्डे लेकर जलूस में खड़े होगए। पुलिस के एस.पी.मि० स्काट ने जनता पर लाठी चार्ज करने का आदेश दिया। पुलिस अधिकारी साण्डरस ने जनता पर लाठियां मारी। लाजपतराय पर भी लाठियों के वार किए गए। जिससे उनकी छाती पर भी लाठियों के घाव आए। इससे १७ नवम्बर १९२८ को लाजपतराय देश के लिए बलिदान होगए।

यदि आज लाजपतराय होते तो पंजाब के ये हाल न होते। इस लिए आज वे बहुत याद आते हैं।

बलिदान से पहले लाजपतराय ने दिल्ली की एक विशाल सभा में बोलते हुए कहा था—

मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की एक-एक चोट ब्रिटिशराज्य के कफन की कील सिद्ध होगी।

अमर शहीद बिस्मिल के शब्दों में—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही निशां होगा।

# आर्यसमाज क्या है ?

सनातनधर्म के एक विद्वान् ने बड़ा सुन्दर कहा था कि हमारे अन्दर अविद्या के कारण, अन्धविश्वास, कुरीतियां, अवैदिक मान्यताएं और जहालत रूपी कूड़ा-कर्कट इकट्ठा हो गया था, जिसको महर्षि दयानन्द ने स्वयं और उसके बाद आर्यसमाज ने जमादार बनकर यह सब कूड़ा-कर्कट निकालकर संसार के सामने हमारा सही स्वरूप सत्य सनातन वैदिक धर्म का दिग्दर्शन कराया।

**मेरी दृष्टि में आर्यसमाज**

१. घोर निद्रा में सो रहे हिन्दुओं का आर्यसमाज चौकीदार है।
२. रोगग्रस्त हिन्दुओं का आर्यसमाज डाक्टर है।
३. विधवा, अनाथों, दलितों, गौ आदि पशुओं का वकील है।
४. दुःखियों और पीड़ितों का सहायक है।
५. ईश्वर उपासना, सन्ध्या, हवन, यज्ञ एवं वेद का प्रचारक है।
६. जहालत, अविद्या, अन्धविश्वास, कुरीतियों को दूर करने वाला है।
७. सारे संसार (पशु-पक्षियों तक) का उपकारक है।
८. पञ्च यज्ञ, सोलह संस्कार, वर्ण व्यवस्था (जन्म से नहीं, गुण कर्म, स्वभाव से) चार आश्रमों को पुनः प्रचलित करके सभी पुरुषों को देवता के रूप में देखने का इच्छुक है।
९. हमारे पूर्वजों पर मिथ्या दोष लगाने वालों को ललकारने वाला है।
१०. केवल एक ईश्वर (जिसका नाम ओ३म् है) का उपासक है।
११. कोई भी स्त्री पुरुष जो आर्यसमाज के दस नियमों को स्वीकार कर आर्यसमाज का सभासद् बन सकता है,

ओमप्रकाश वानप्रस्थी
गुरुकुल बठिण्डा (पंजाब)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० K-४१ फोन नं० ७७०७२ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २ २८ नवम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

# नारायणगढ़ जि० अम्बाला में शराबबन्दी सम्मेलन में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह का भाषण

आर्यसमाज नारायणगढ जि० अम्बाला के वार्षिक उत्सव पर दिनांक २१ नवम्बर ९२ को उपस्थित आर्य सज्जनों को सम्बोधित करते हुए, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष, प्रो० शेरसिंह ने इतिहास के उदाहरणों द्वारा विस्तार से बताया कि प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजो के हाथों जर्मनी की पराजय और द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी के सामने, फ्रांस की हार का मुख्य कारण, उनके सनिकों में शराब सेवन की प्रवृत्ति व इससे उपजने वाली अय्याशी ही था। उन्होने बताया कि स्वामी दयानन्द एवं महात्मा गांधी दो युगपुरुष भारत की भूमि पर आये। इन दोनों ने ही शराब से होनेवाले भयंकर परिणामों से समाजवासियों को खबरदार किया। परन्तु गांधी के नाम लेवा सभी मुख्य दलों की राज्य सरकारों ने, राष्ट्रपिता की शराबबन्दी के प्रति अटूट निष्ठा का सम्मान करने की बजाय शराब के प्रचलन को लगातार बढ़ाने की ही जनविरोधी नीति अपनाकर गाधी जी का घोर अपमान किया है। आज सरकार एवं समाज दोनों ही शराब के गुलाम बन चुके हैं जबकि गाधी जी बड़ा से बड़ी कीमत देकर भी पूर्ण शराबबन्दी लागू किये जाने के पक्षधर थे। हालत यह है कि शराब के कारण करोड़ों परिवार नारकीय जीवन भोग रहे हैं और सरकार को शराब बेचकर, धन बटोरने की लगी है। लोगों को शराब में पागल बनाकर, सरकार इन्हें दिन दहाड़ लूट रही है। प्रो० शेरसिंह ने आन्ध्रप्रदेश में महिलाओं द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन की चर्चा करते हुए आह्वान किया कि हरयाणा की महिलाओं को भी इसी तरह शराब के विरुद्ध आन्दोलन का नेतृत्व करना चाहिये ताकि हरयाणा प्रदेश को शराब मुक्त बनाकर, इसे पवित्र व अन्यों के लिये एक आदर्श बनाया जाये। उन्होंने यह मांग की कि हरयाणा सरकार तुरन्त प्रभाव से राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करे ताकि लोग सुख व शान्ति से जी सकें। आर्यसमाज नारायणगढ़ की ओर से सभा को शराबबन्दी आन्दोलन हेतु ११०० रु० की राशि भेंट की गई तथा ११ सत्याग्रही भेजने का वचन दिया गया।

इस अवसर पर हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार ने भी शराब को एक अत्यन्त खतरनाक व घातक पेय बताते हुए कहा कि हरयाणा सरकार द्वारा शराब के प्रचलन को लगातार बढ़ाने की नीति अपनाकर संविधान की धारा-४७ का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया जा रहा है। इस धारा में सरकारों को यह निर्देश दिया गया है कि वे सब नशीले पदार्थों के उत्पादन एवं सेवन पर रोक लगायेंगी। श्री विजयकुमार ने मांग की कि हरयाणा की अनेक पंचायतों द्वारा उनके यहां चल रहे शराब के ठेकों को बन्द किये जाने के पारित प्रस्तावों के दृष्टिगत, सरकार को पूरे हरयाणा राज्य में शराबबन्दी लागू करनी चाहिये। १९४२ के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती के वर्ष में महात्मा गांधी जी की शराबबन्दी में अडिग आस्था का आदर करते हुये, राज्य सरकार को बिना किसी हिचकिचाहट के यह जनकल्याण नीति अपनानी चाहिये। यदि इस पर भी राज्य सरकार ध्यान नहीं देती तो प्रदेश के माथे से शराब का कलंक धोने के लिये एक जन आन्दोलन चलाया जायेगा जिसके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा पहले ही सारे राज्य में व्यापक अभियान छेड़ा गया है। उत्सव पर पं० शेरसिंह तथा प० चिरंजीलाल भजनोपदेशक आदि के भी कार्यक्रम प्रभावशाली रहे।

## ग्राम क्योड़क (कैथल) में शराब के ठेके पर धरना जारी

ग्राम क्योड़क में बस अड्डे पर शराब का ठेका है। ठेकेदार गांव में भी १०-१५ घरों में अवैध शराब की बिक्री करवाने लगे। गांव में आये दिन शराब पीकर लड़ाई झगड़ा करते रहते हैं। पंचायत ने ठेकेदार को समझाया कि आप गांव में दुकान न चलाये। लेकिन कान पर जूं तक नहीं रेंगी। इस वर्ष का ठेका ३५ लाख का है। गांव भी बहुत बड़ा है। लगभग २५ हजार की आबादी है। गांव में सरपंच श्री सुरेन्द्रसिंह जी ने पंचायत की सर्वसम्मति से फसला किया किया कि ठेके को बन्द करवाने के लिए धरना दिया जाए। जिसमें आर्यसमाज क्योड़क, ग्राम सुधार सभा, महिला मण्डल आदि सभी संगठनों ने बढ़ चढ़कर भाग लेने का विश्वास दिलाया। दिनांक ५-११-९२ को सायं ५ बजे अपने मोटो, ओ३म् के झण्डे लगाकर धरने पर बैठ गए। माताएं बहनें भी काफी संख्या में भाग ले रही हैं। बाबा बसंतगिरि के नेतृत्व में बाबा दुदाधारी के मन्दिर में ऋषि लंगर चला रखा है। सुबह शाम बच्चे शराबबन्दी नारे लगाते हैं। प्रतिदिन हवन होता है। सत्संग एवं भजनों का कार्यक्रम चलता रहता है।

दिनांक १७-११-९२ को सभा की ओर से स्वामी देवानन्द जी तथा पं० मुरारीलाल बेचैन के शिक्षाप्रद समाजसुधार के भजन हुए। दिनांक १९-११-९२ को इन पंक्तियों के लेखक भी धरने पर पहुँचे। सायं व प्रातः अपने अनुभव के आधार पर शराबबन्दी प्रचार एवं धरनों की जानकारी दी। धरने पर बैठे लोगों में काफी उत्साह है। उनका दृढ़ निश्चय है कि जब तक ठेका बन्द नहीं होगा तब तक धरना जारी रहेगा। शराब खरीदने वालों को हाथ जोड़कर समझा रहे हैं। एक दो शराबियों ने जबरन शराब खरीदने की चेष्टा की व हुल्लड़बाजी की तो बहादुर आर्यवीरों ने उनकी जमकर पिटाई की। अब एक भी बोतल नहीं बिक रही है। ठेकेदार बौखला उठा है। उपमण्डल अधिकारी, थानाध्यक्ष तथा आबकारी तथा कराधान के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# बाईबल में वेद, राम और ऋषि दयानन्द

## (मेरी केरल यात्रा के कुछ रोचक संस्मरण)

लेखक—प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर

गत अस्सी वर्षों से केरल में एक हिन्दू कन्वेंशन का आयोजन होता है। यह महासम्मेलन पम्पा नदी के तट पर बड़े सुरम्य स्थान पर होता है। केरल के वेद-निष्ठ तपस्वी महात्मा चट्टम्पि स्वामी जी महाराज ने कभी इसी स्थान पर इस सम्मेलन को सम्बोधित किया था। अब यह सम्मेलन उन्हों की स्मृति में प्रतिवर्ष सोत्साह धूमधाम से किया जाता है। केरल में वेद-प्रचार आन्दोलन के प्राण आचार्य नरेन्द्रभूषण जी प्रतिवर्ष इस महासम्मेलन में आमन्त्रित होते हैं। इस वर्ष हमें मञ्च से यह शब्द सुनकर बड़ा गौरव हुआ कि इस कन्वेंशन की जान महापण्डित आचार्य नरेन्द्रभूषण जी का व्याख्यान होगा। इससे हमारे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि आज केरल में आचार्य नरेन्द्रभूषण अपनी योग्यता, सेवा व तपोबल से कहा पहुंच चुके हैं।

इस बार महासम्मेलन के प्रबन्धकों ने योगदर्शन महाविद्यालय गुजरात के सुयोग्य आययुवक ब्र० विवेकभूषण जी को व मुझे आमन्त्रित किया। मैंने श्री धर्मपाल जी मन्त्री आर्यसमाज नयाबांस को अपना आरक्षण करवाने के लिए पत्र लिखा। उन्होंने बड़े धर्मभाव व स्नेह से यह काम करके मुझे चिन्तामुक्त किया। मैं २२ फरवरी को चेंगन्नूर पहुंचा। उस दिन सायंकाल देवस्वम बोर्ड के मण्डप में चट्टम्पि स्वामी जी महाराज की स्मृति में एक न्यास की स्थापना के सम्बन्ध में एक सभा में ब्रह्मचारी जी का व मेरा एक एक व्याख्यान हुआ। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी ही इस न्यास अध्यक्ष चुने गये। आपने ही इन तपस्वी महात्मा का पाण्डित्यपूर्ण पुस्तक वेदाधिकार-निरूपणम् की टीका लिखकर छपवाई है। महात्मा जी की वेद विषयक मान्यताय वही हैं जो महर्षि दयानन्द की है।

२३ फरवरी को महासम्मेलन का उद्घाटन समारोह था। इसकी अध्यक्षता हमारे विद्वान् ब्रह्मचारी जी ने की। आपका भाषण संस्कृत में हुआ। इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। दैनिक पत्रों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण समाचार था कि परिषद् के इतिहास में प्रथम बार संस्कृत में भाषण दिया गया। आपने बहुत योग्यता से वेद की महिमा पर अपने विचार रखे। मैंने अपने उद्घाटन भाषण में वेद की नित्यता, ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता व ज्ञान का मूल वेद आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए यह सिद्ध किया कि सब मत पन्थों का स्रोत वेद ही है। इस्लाम व ईसाई मत के मान्य ग्रन्थों में वेद की महिमा गाई गई है।

अपने कथन की पुष्टि में मैंने कुरान के प्रमाण दिये, बाईबल के प्रमाण दिये तथा मुस्लिम व ईसाई विद्वानों के प्रमाणों की झड़ी लगा दी। मैंने बाईबल से दो प्रमाण प्रस्तुत करते हुए ईसाई भाइयों को निमन्त्रण दिया कि वे हमसे दूर न जाते हुए वेद की शरण में आवें। बाईबल में आता है कि आदि में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द ही परमात्मा था। परमात्मा ने आदि सृष्टि में अपने शब्द प्रमाण वेद का प्रकाश किया, गुण गुणी के साथ रहता है और परमात्मा अपने इसी गुण के कारण ज्ञान स्वरूप कहलाता है। सो बाईबल का कथन सत्य है।

दो बार बाईबल में यह भविष्यवाणी की गई है कि आने वाला नबी Prophet अग्नि से दीक्षा देगा। ईसाई तो जल से ही दीक्षा देते है। यह भी लिखा है कि वह महाबली होगा सो यह भी सत्य है। ऋषि के ब्रह्मचर्य बल को कौन नहीं जानता? इन भविष्यवाणियों की शेष बात भी ऋषि पर पूरी चरितार्थ होती है। हम न तो फलित ज्योतिष को मानते हैं और न भविष्यवाणियों को। बाईबल की यह भविष्यवाणियां ईसाइयों के लिए तो प्रमाण है। हम यह मानते हैं कि ये एक दूरदर्शी व्यक्ति का कथन है जो सत्य सिद्ध हुआ। इसलिए सब ईसाइयों को महर्षि के झण्डे के नीचे आ जाना चाहिये। इसी में विश्व-कल्याण है।

मैंने अपने उद्घाटन भाषण में यह भी कहा कि ईसाई पादरी वेद में ईसा सिद्ध करने का प्रयत्न किया करते थे। वेद में सर्वव्यापक ईश (ईशावास्य) की तो महिमा है परन्तु मनुष्य वेदधारी Christ ईसा की कहीं चर्चा नहीं है। मैंने कहा बाईबल में 'राम' की तो चर्चा अवश्य है। मैंने भारी सभा में बाईबल का एक प्रामाणिक संस्करण खोलकर दिखाया कि यह लीजिये बाईबल में राम का नाम पढ़ लीजिए। राम शब्द हमारी देववाणी का है। अंग्रेजी; फ्रेंच, लेटिन या हैब्रियू भाषा में 'राम' शब्द है ही नहीं। बाईबल में 'राम' व्यक्ति-वाचक संज्ञा है। यह वाल्मीकि के राम की ओर स्पष्ट संकेत है। रामायण की कहानी का ही इसमें सार है।

उस समय सभा में हमारे माननीय केन्द्रीय मन्त्री श्री प० व० कुरियन भी उपस्थित थे। उन्होंने मुझ से यह प्रमाण पूछा तो मैंने कहा कि लीजिए यह है बाईबल। दैनिक पत्रों में हम दोनों के भाषण प्रकाशित हुए। देश के सबसे बड़े पत्र मलयालम मनोरमा (ईसाई पत्र है) ने प्रथम पृष्ठ पर मेरे व्याख्यान का यह अंश दिया।

मैंने अपने उद्घाटन भाषण में विश्व-कल्याण के लिये वेद का आहार सम्बन्धी उपदेश सन्देश भी दिया। मांसाहार विश्व में अशांति व रोगों का कारण है। शाकाहार प्रत्येक दृष्टि से हितकर, सस्ता, पौष्टिक, स्वास्थ्यवर्द्धक व शान्ति देने वाला है। मैंने फिर बाईबल के प्रमाण देकर कहा कि सृष्टि की उत्पत्ति या मानव-सृष्टि अदन (उद्यान) के बाग में ही हुई। प्रभु ने मनुष्य को तब अन्न फल वनस्पतियां खाने की आज्ञा दी। वहाँ मांस, अण्डे आदि का कतई वर्णन नहीं। इस कथन का भी विशेष प्रभाव पड़ा।

२४ व २५ फरवरी को भी ब्रह्मचारी जी के मुख से वेद की ऋचाओं, दर्शनों के सूत्रों व उपनिषदों के प्रमाण सुन-सुनकर श्रोता गद्-गद् होते रहे। मैंने भी २४ फरवरी को ईश्वर के स्वरूप व उसकी रचना पर एक व्याख्यान दिया। २५ को धर्म व राष्ट्रीयता विषय पर व्याख्यान दिया। मैं अपने व्याख्यानों में वहां प्राय: केरल के इतिहास की घटनाओं को ही अपने कथन की पुष्टि में पेश करता रहा। इसका केरलीय जनता पर गहरा व अच्छा प्रभाव पड़ा। उनके लिए यह आश्चर्य का विषय था कि मुझे केरल के बारे इतना व्यापक और सूक्ष्म ज्ञान कैसे है। मैं इसका सारा श्रेय पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज व मेहता जैमिनि जी को देता हूं। उन्हीं से मैंने यह विद्या सीखी। श्रद्धेय आचार्य नरेन्द्रभूषण जी की प्रेरणा से केरल के साहित्य व इतिहास को पढ़ता चला आया हूं। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी बिजली को मात कर देनेवाली तेजी से जब हमारे व्याख्यानों का मलयालम में अनुवाद करते थे तो श्रोता भाव-विभोर हो जाते थे। ऐसा लगता था जैसे आचार्य जी को पहले से ही हमारे भाषण का एक-एक वाक्य कण्ठस्थ है। महर्षि दयानन्द की शिष्यपरम्परा में ऐसे तपस्वी मनस्वी विद्वान् का होना बड़े गौरव का विषय है।

महासम्मेलन के प्रबन्धकों ने मेरे व्याख्यानों पर मुग्ध होकर मेरा एक और व्याख्यान रखा परन्तु राष्ट्रसंघियों को हमारा इतना सम्मान व आर्यसमाज का प्रभाव चुभा। जिस व्यक्ति ने व्याख्यान के लिए न कर दी थी, वे किसी प्रकार से उसे ले आए। महासम्मेलन की समाप्ति से एक दिन पूर्व मञ्च से घोषणा हुई कि राष्ट्रसंघ के बालप्रमुख श्रीरामचन्द्रन व कन्वेंशन की जान महापण्डित आचार्य नरेन्द्रभूषण जी के व्याख्यान होंगे। संघ के रामचन्द्रन जी ने एक घण्टे की बजाए पौने दो घण्टे तक भाषण जारी रखा। संकेत करने पर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

## ऋषि दयानन्द और चौ० छोटूराम मिशन के दीवाने—
# प्रिंसिपल होशियारसिंह आर्य

(डा० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार, प्रिंसिपल छाजूराम जाट कालेज, हिसार)

हरयाणावासी लोगों के जीवन पर सब से अधिक प्रभाव ऋषि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा का पड़ा। इसलिये इस इलाके के लोग बड़ी मात्रा में आर्यसमाजी बने। उनके बाद दूसरे महापुरुष जिनका अधिक प्रभाव पड़ा वह थे चौ० छोटूराम। यों तो ये दोनों महान् हस्तियाँ ऐसी हैं कि जिनके यहां के जनजीवन पर प्रभाव को विस्तार से अध्ययन करने की आवश्यकता है, परन्तु संक्षेप मे कहे तो इनके प्रभाव से हरयाणा के लोगों के जीवन में जागृति आई तथा महान् परिवर्तन हुआ। उपर्युक्त महापुरुषों के उद्देश्य को पूरा करने के लिये अनेक लोगों ने अपने अपने ढंग से कार्य किया है, किन्तु प्रिंसिपल होशियारसिंह आर्य जैसे मिशनरी भावना वाले व्यक्ति विरले ही हैं।

श्री होशियारसिंह आर्य का जन्म दिल्ली के गाव बाजिदपुर मे एक इज्जतमन्द किसान परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा विधिवत् हुई। पढ़ने लिखने में तीव्र बुद्धि होने के कारण आपने एम० ए०, बी० टी० की उपाधियां अच्छे अंकों से प्राप्त कीं। गहन अध्ययन के द्वारा आपने हिन्दी, अंग्रेजी तथा इतिहास में विशेष योग्यता एवं विद्वत्ता प्राप्त की। सादा वेशभूषा तथा उच्च विचार-धारा वाले नवयुवक होशियारसिंह अपनी योग्यता के आधार पर पहले अध्यापक और फिर हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल बने। अपने सर्विसकाल में ही इन्होंने समाजसेवा के क्षेत्र को अपनाया। स्वाध्यायशील तथा समाजसेवा की भावना होने के कारण इन पर ऋषि दयानन्द और चौ० छोटूराम का विशेष प्रभाव पड़ा, जो स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सम्पर्क के कारण और अधिक गहरा हो गया।

अप्रतिम कर्मठता तथा ईमानदारी के कारण कन्या गुरुकुल नरेला की सभा ने इनको वर्षों तक मन्त्री बनाये रखा। इस गुरुकुल की उन्नति में इनका विशेष सहयोग रहा है। सेवाभावी जीवन तथा कर्मकुशलता के कारण इन्हें दिल्ली और उसके समीपवर्ती हरयाणा में अत्यधिक ख्याति मिली। चौ० छोटूराम तथा चौ० टीकाराम की स्मृति में स्थापित सोनीपत की शिक्षा संस्थाओं के प्रधान आप रहे। इस समय लाखों रुपये के भवन इन संस्थाओं में बने। आपके निमन्त्रण पर भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी भी चौ० टीकाराम को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सोनीपत पधारे।

प्रिंसिपल साहब के मन में देश के युवक युवतियों को ऊंचा उठाने की प्रबल कामना है। यही कारण था कि इन्होंने चौ० छोटूराम की स्मृति में मुरथल (सोनीपत) में इन्जीनियरिंग कालेज बनाने का प्रोग्राम बनाया। इनकी निष्ठा तथा लगन को देखकर जनता ने धन संग्रह हेतु सहयोग दिया। इसमे तनिक भी सन्देह नहीं कि इनके अनथक प्रयासों से १२५० बीघा जमीन मुरथल की पंचायत ने दान में दे दी और कालेज का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया। कुछ समय बाद हरयाणा सरकार ने अपने नियन्त्रण में विकास का कार्य शुरू किया। यह छोटूराम इन्जियरिंग कालेज इनकी बहुत बड़ी देन है।

इसके बाद इन्होंने छोटूराम रूरल टैक्नीकल इन्स्टीच्यूट कंझावला की स्थापना की। उपर्युक्त संस्थाओं के निर्माण एवं विकास कार्यों हेतु सरकारी सर्विस में प्रिंसिपल रहते हुए धनसंग्रह तथा अन्य काम किया। दिन रात भाग-भाग कर लोगों से सम्पर्क करना और पैसा मांगना बच्चों का खेल नहीं है। परिणामस्वरूप कझावला में टैक्नीकल संस्था बनी जो प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

भारतीय परम्परा में अच्छे कार्यों के लिये लग्नशील, परिश्रमी, ईमानदार, त्यागी तथा कर्मठ नर-नारियो का विशेष आदर-मान करने की सुन्दर परम्परा है, जिसका निर्वाह होते रहना चाहिये।

प्रिंसिपल साहब दृढ़ ईश्वरविश्वासी तथा आर्य मिशनरी है। वे सुख दुःख और मान-अपमान की कोई परवाह नहीं करते। इनका जीवन पवित्र तथा व्यवहार उत्तम है जो दूसरों के लिये प्रेरणाप्रद है। प्रभु इन्हें दीर्घायुष्य तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे जिससे ये मानव जाति की और अधिक सेवा कर सकें। ॐ

## स्वामी ओमानन्द जी के नाम पत्र

आदरणीय स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

आपको याद होगा कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन आपके करकमलों द्वारा हुआ था। उस समय आपने आशीर्वाद दिया था कि परमात्मा करे इस यज्ञशाला से यज्ञ की महक और वेदोपदेश प्राणिमात्र के कल्याण के लिए संसार मे फैले। परिस्थितियाँ जैसी रही, उनकी चर्चा करना नही चाहता, किन्तु उद्घाटन के पश्चात् यज्ञशाला में यज्ञ एवं वेदोपदेश न हो सका। किन्तु मैंने अपना प्रयत्न जारी रखा। कुलपति, प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव ने मेरी प्रार्थना पर पूरा-पूरा सहयोग देने का वचन दिया एवं अब भी सहयोग दे रहे हैं। मेरी प्रार्थना पर आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक ने यज्ञ की सारी व्यवस्था अपने कन्धों पर ले ली है और अब यज्ञ एवं वेदोपदेश प्रति सप्ताह प्रत्येक शुक्रवार को सायंकाल ५ बजे से ६-३० तक किया जाता है। आपसे प्रार्थना है कि जब भी आप रोहतक के आसपास हों, कृपया इस कार्यक्रम में, हमें वेदोपदेश देवें एवं हमारा मार्गदर्शन करें। आपके आने से हमारे कार्यक्रम को शक्ति मिलेगी।

एक बात जिसके लिये मैं आपको पत्र लिख रहा हूं, वह अत्यन्त दुःखदायक है। वह यह है कि इस यज्ञ में जहां और लोग सम्मिलित होते हैं, वहा गुरुकुलों से पढे हुए छात्र-छात्राए चाहे वह रोहतक मे किसी रूप में कार्य कर रहे हों गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक डॉ० श्री सुरेन्द्र जी एवं डॉ० श्री बलवीर आचार्य को छोड़कर कोई भी सम्मिलित नही होता। गुरुकुलों के विद्यार्थी, रोहतक में अध्यापक, विद्यार्थी, प्रिंटिंग प्रेस के मालिक, अधिकारी, सभा के उपदेशक तथा अन्य कार्यों पर हजारों नहीं तो सैंकड़ों की संख्या मे अवश्य हैं। आप उन सभी व्यक्तियों जिनका सम्बन्ध किसी न किसी गुरुकुल से रहा है, के नाम हुक्मनामा, आदेश, निर्देश अथवा अपील जो भी आप उचित समझें जारी कर। इसमे मेरी भी गलती है कि मैं सबको सूचित नहीं कर पाया हू।

आपका
राममेहर एडवोकेट रोहतक

आदरणीय केदारसिंह जी,

सादर नमस्ते।

श्री राममेहर जी वकील का पत्र आप यथामति प्रकाशित कर सकते हैं। मेरा तो इस विषय में इतना ही कथन है—

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय परिसर मे जो यज्ञशाला बनी है उसमें कुलपति के आदेश से प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ होना चाहिये और उस यज्ञ में प्रत्येक उस परिवार को जो विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है वा जो वहा रहते हैं, एक व्यक्ति अवश्य सम्मिलित हो। जब लोग दूरदर्शन आदि के सम्मुख बैठकर घण्टों व्यर्थ बिता देते हैं तो क्या इस यज्ञ सदृश पवित्र और आवश्यक कार्य हेतु आधा घण्टा भी नही निकाला जा सकता? इसलिये प्रत्येक आर्य व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे शुभ कार्यों में अवश्य सम्मिलित हुआ करे। यह भोजन से भी आवश्यक कार्य है। इस कार्य हेतु अवकाश का भी प्रावधान नहीं है।

भवदीय
ओमानन्द सरस्वती

# ग्राम मथाना जिला कुरुक्षेत्र में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक २०-११-९२ को रात्रि में ग्राम मथाना में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों तथा शराब से होने वाली बुराइयों पर विस्तार से विचार रखे। महाशय हरध्यानसिंह, पं० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द जी महाशय मामचन्द जी के समाज सुधार के प्रेरणादायक भजन हुए। प्रातः ८ बजे चौपाल में हवन किया गया।

दिनांक २१-११-९२ को सायं ३ बजे शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम भजनों का उत्तम कार्यक्रम हुआ। उसके बाद नशामुक्ति संगठन मथाना के प्रधान डा० अजमेरा ने आने वाले आर्यनेताओं का स्वागत किया। चौ० अमरसिंह एडवोकेट, चौ० मुलतानसिंह एडवोकेट, चौ० जोगेन्द्रसिंह एडवोकेट कुरुक्षेत्र ने भी शराबबन्दी पर अपने विचार रखे। श्री रणधीरसिंह जी उपप्रधान नशामुक्ति संगठन मथाना ने गांव में गत अक्तूबर मास में शराब के ठेके को बन्द करवाने बारे एक महीने तक धरना चलाया। कुरुक्षेत्र में उपायुक्त को ज्ञापन दिया तथा प्रदर्शन किया। गांव में भी शराबबन्दी नारे लगाये। सरपंच चौ० अमरसिंह जी ने भी बताया कि हमने पंचायत प्रस्ताव सितम्बर मास में कर दिया है। अगले वर्ष मार्च में ठेका किसी भी कीमत पर यहां नहीं खुलने देंगे। चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा ने अनेक गाव के उदाहरण देकर शराब से होने वाली बर्बादी से अवगत कराया। सरकार की शराबबढ़ावा नीति का विरोध करते हुए कहा चाहे किसी की सरकार हो, हम व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं हैं। सरकार एक साजिश रचके किसान मजदूर को बर्बाद करने पर तुली हुई है। गांव-गाव में शराब की नदी बहा दी है। गांव में सायंकाल महिलाओं तथा सज्जन मनुष्यों का घरों से निकलना बन्द हो गया है। आप अपनी शक्ति को पहचानो। स्वयं बुराई छोड़कर शराबबन्दी आन्दोलन में तन-मन-धन से सहयोग करो।

मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह जी ने कहा कि हमने १३ वर्ष संघर्ष करके हरयाणा प्रान्त को अलग बनवाया। हम सारे देश में सबसे पवित्र प्रदेश हरयाणा को बनाना चाहते थे। लेकिन भ्रष्ट राजनेताओं ने इसको बदनाम कर दिया। २६ वर्ष में ३५ गुणी शराब बढ़ाई। एम. एल. ए. की खरीद फरोख्त एवं दलबदल का मुहिम भी हरयाणा से आरम्भ हुई। पंचायतों को भी ठेकेदारों को शराब बिकवाने का दलाली का कार्य भी सारे देश में कहीं नहीं हरयाणा में हो है। हरयाणा हर तरह से बदनाम हो चुका है। हमें इसे बचाना है। इस शराब के कलंक को मिटाना है। प्रो० साहब ने आगे कहा कि हमें अंग्रेजों से तो आजादी मिल गई लेकिन हम शराब के गुलाम हो गए हैं। जर्मनी, फ्रांस, पाकिस्तान व बंगला देश की लड़ाई का हवाला देकर बताया कि शराब व सुन्दरी के दुर्व्यसनों के कारण हार हुई। अतः यदि हम भी नहीं संभले तो गुलाम हो जावेंगे। पहले ५० करोड़ की आय थी शराब से। देश में अब १० हजार करोड़ की शराब से आमदनी है। देश कैसे बचेगा। एक लाख गांवों में आज भी पीने का पानी नहीं पहुंच पाया है लेकिन शराब सब गाँवों में पहुंचा दी है। आपके गांव में सुना है २० हजार की शराब प्रतिदिन ठेके से बिकती है। कितना पैसा बर्बाद हो रहा है। बच्चे दुःखी हैं, महिलाएं नरक भोग रही हैं। अतः आप मार्च तक इन्तजार मत करो। अपने गांव से धरना देकर यह शराब का ठेका बन्द करवाओ। हम भी सभा की ओर से सहयोग देंगे। नशा मुक्ति संगठन के नवयुवकों ने आश्वासन दिया कि हम गेहूं की बिजाई के तुरन्त बाद १०-१५ दिन में ठेके पर पुनः धरना देंगे। इसे उठाकर ही दम लेंगे। सरपंच चौ० अमरसिंह ने ११०० रु० शराबबन्दी आन्दोलन हेतु दान दिये। मंच का संचालन क्रान्तिकारी जी ने किया।

मन्त्री, नशा मुक्ति संगठन मथाना

# आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला रोहतक का वार्षिक उत्सव

१० अक्टूबर १९९२ से १० नवम्बर तक यज्ञ, ६-७-८ नवम्बर के वार्षिकोत्सव में निम्नलिखित सम्मेलन हुए—

१- युवक सम्मेलन एवं स्कूल के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता।
२- आर्य महिला सम्मेलन एवं दहेज विरोधी सम्मेलन।
३- नशा विरोधी सम्मेलन।
४- वेद सम्मेलन रविवार ८ नवम्बर को।

श्री डा० सर्वदानन्द जी आर्य कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री सुभाष जी बत्रा मुख्य सांसद सचिव हरयाणा सरकार आमन्त्रित थे।

डा० सर्वदानन्द जी ने आर्यों को उद्बोधन करते हुए देशरक्षा के लिये बलिदानी होने की प्रेरणा दी। आदरणीय बत्रा जी ने आर्यों के इतिहास को दोहराते हुए बताया कि स्वतन्त्रता संग्राम में ऋषि दयानन्द जी के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जी, ला० लाजपतराय आदि अनेक वीरों ने स्वतन्त्रता की वेदी पर अपनी बलि दी।

आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान डा० गणेशदास जी, महामन्त्री श्री चमनलाल जी, श्री जगदीशचन्द्र जी वसु, श्री ज्ञानेश्वर जी भारती, स्वामी संजीवनी आनन्द जी, स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती, यज्ञपाल जी शास्त्री, छाजूराम जी शास्त्री, ऋतमुनि जी, महात्मा कपूरचन्द जी भजनमण्डली आदि अनेक विद्वान् सन्यासीगण ने अपने विचारों से जनता को ऋषि दयानन्द के सन्देश से अवगत किया।

उत्सव के अन्त में श्री गुरुदत्त जी प्रधान ने उत्सव में पधारे सभी विद्वानों तथा जनता का धन्यवाद किया।

मन्त्री, नन्दलाल गांधी

# ग्राम सांघी [रोहतक] में शराबबन्दी लागू

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम सांघी में युवा क्लब की ओर से पूर्ण नशाबन्दी लागू की गई है। इस जनहित कार्य में आर्यसमाज तथा ग्रामीण पूरा सहयोग दे रहे हैं। युवा क्लब के कार्यकर्त्ता इस कार्य हेतु रात्रि को भी चौकसी रखते हैं। शराब पीने वाले पर १०० तथा बेचने वाले पर ५०० रु० दण्ड किया जाता है।

गत दिनों किलोई ग्राम का शराब का ठेकेदार श्रीकृष्ण सांघी में रात्रि को २२ पेटियां श्री नफेसिंह के घर पर उतारता हुआ पकड़ा गया। उसे उसी समय ५१०० रु० का दण्ड दिया गया और चेतावनी देकर छोड़ दिया कि भविष्य में शराब बेचते पकड़ा गया तो ५१०० रु० दण्ड के साथ काला मुँह करके ग्राम में घुमाया जावेगा।

—ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज

# पाखण्ड उन्मूलन के लिए युवक आगे बढ़ें वेदोपदेशक विद्यालय का आह्वान

वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट (मुक्तेश्वर) में उपदेशक श्रेणी की पढ़ाई आरम्भ हो चुकी है। प्रवेश के लिये कुछ स्थान रिक्त हैं। निःशुल्क शिक्षा तथा आवास के अतिरिक्त निःशुल्क भोजनादि की उत्तम व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त निर्धन और योग्य विद्यार्थियों को २५ रु० मासिक की छात्रवृत्ति भी दी जाती है। न्यून से न्यून दसवीं श्रेणी की योग्यता वाले वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखने वाले योग्य और उत्साही युवक ही शीघ्रातिशीघ्र आवेदन करें।

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री

# लुलोढ जिला रेवाड़ी में वेदप्रचार

वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना श्रेष्ठ व्यक्तियों का कर्त्तव्य है। आर्यसमाज लुलोढ की ओर से गांव में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री स्वामी देवानन्द ने प्रचार किया। ग्रामवासियों पर प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा। समाज की तरफ से सभा को ५३२ रु० का दान दिया।

## हजार घोड़ों का सवार सीरियल पर आर्यसमाज को आपत्ति

सितम्बर १९९२ के मनोरमा पाक्षिक के पृष्ठ ९२ पर दूरदर्शन द्वारा भविष्य में प्रसारित किये जाने वाले सीरियल 'हजार घोड़ो का सवार' विषय में विवरण पढ़कर आश्चर्य हुआ। कहानी के पैरा तीन में लिखा है कि—"गीधू धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने की कसम खाता है और साधु बनकर आर्यसमाज के मन्दिर में रहने लगता है। परन्तु वह देखता है कि यहां के महन्त ही औरतों के साथ कुकर्म व अनाचार करते हैं। गीधू इसका विरोध करता है, लेकिन उसे ही जेल की हवा खानी पड़ती है।

धारावाहिक में आर्यसमाज के प्रसंग पर आर्य जनता को बडी आपत्ति है क्योंकि आर्यसमाज मन्दिरों में महन्त नहीं होते हैं। आर्य-समाज मठ और महन्तों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता है, इसलिये आर्यसमाज के साथ महन्त जोड़कर इस धारावाहिक द्वारा पाठ कथा के लेखक और सीरियल के निर्माता ने जानबूझकर आर्य-समाज की छवि को अपमानित करने का प्रयास किया है।

यह बताना आवश्यक है कि आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम हरिजनों व दलितों को ऊंचा उठाने, छुआछूत मिटाने और समाज में उन्हें समानता का व्यवहार दिलाने के लिये अनेक कार्य किये हैं। आर्य-समाज ने ही उन्हें यज्ञोपवीत देकर वेद पढ़ने तथा पढ़ाने का अधिकार दिया है। आज आर्यसमाज मन्दिरों में पंडित बनकर पुरोहित का कार्य कर रहे है।

भारत सरकार से निवेदन है कि इस सीरियल से आर्यसमाज सम्बन्धी सभी प्रसंगों को तुरन्त निकाल दिया जावे। यदि ऐसा नही किया गया तो आर्यसमाज को दूरदर्शन के विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन करना पड़ेगा। हम नहीं चाहते कि देश के सामने कोई नई समस्या खड़ी करें। अतः प्रसारण से पूर्व इस सीरियल में उचित संशोधन करके हमें सूचित करने का कष्ट करें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

### शराब की दुकानें बन्द करने हेतु पारित प्रस्तावों के सन्दर्भ में सम्बद्ध ग्राम पंचायतों को सुनवाई का अवसर देने की मांग

उल्लेख है कि हरयाणा राज्य की अनेक ग्राम पचायतों द्वारा उनके क्षेत्र में इस समय खुली शराब की दुकानों को बन्द करने हेतु दिनांक ३०-९-९२ तक प्रस्ताव पास करके आपके कार्यालय में भेजे गये हैं।

अब आप द्वारा इन पंचायतों के सरपंचों को व्यक्तिगत सुनवाई के लिए अपने सामने बुलवाया जाना है। हर वर्ष इसके लिए सम्बद्ध सरपंचों को रिकार्ड के साथ चण्डीगढ़ में स्थित आपके कार्यालय में बुलवाया जाता रहा है। इन्हे चण्डीगढ़ आने जाने में बडी असुविधा होती है। राजधानी में रात को ठहरने के लिए स्थान भी आसानी से नहीं मिल पाता, जिस कारण सरपचों को बड़ी परेशानी झेलनी पड़ती है तथा चण्डीगढ़ आने जाने में खर्च भी बहुत होता है। इससे ग्राम पंचायतों पर अनावश्यक बोझ पड़ता है।

अतः अनुरोध है कि आप कृपया विभिन्न जिला मुख्यालयो पर आकर सम्बद्ध पंचायतों के सरपंचों को सुनने का कष्ट करे। यदि किसी जिला के शराबबन्दी प्रस्तावों की संख्या बहुत कम है तो वहां के सरपंचों को साथ लगते दूसरे जिले के मुख्यालय पर बुलाया जा सकता है। आप को तो अकेले को अपने कुछ स्टाफ के साथ आने का कष्ट होगा, उधर चण्डीगढ़ जाने में कई सौ सरपंचों को परेशानी होगी। आशा है आप इस उचित एवं स्वस्थ सुझाव को मानने की कृपा करते हुए तदनुसार इस मामले में आवश्यक कार्यवाही करगे।

सूबेसिह (सभामन्त्री)

## हरयाणा शराबबन्दी समिति ने सत्याग्रहियों की भर्ती शुरू की

करनाल, २० नवम्बर। प्रदेश में शराब के खिलाफ व्यापक अभियान चला रही हरयाणा शराबबन्दी समिति और राज्य सरकार के बीच टकराव के आसार बन रहे हैं और सरकारी अड़चनों से निपटने के लिये समिति ने सत्याग्रहियों की भर्ती चालू कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार समिति ने ३०० ग्राम पंचायतों से प्रस्ताव पारित करवाकर सरकार से आग्रह किया है कि उन गावों में आगामी वर्ष ठेके न खोले जायें। ग्राम पंचायत एक्ट की धारा २६ के तहत पारित इन प्रस्तावों को यदि सरकार मान ले तो प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्र के आधे से भी अधिक शराब के ठेके बन्द करने पड़ेंगे जिससे सरकार को राजस्व की भारी हानि होगी। पिछले वर्ष राज्य में शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में कुल ८२१ ठेके नीलाम किये गये थे।

समिति के संयोजक रिटायर आई.ए.एस. अधिकारी विजयकुमार के अनुसार पंचायतों द्वारा पारित इन प्रस्तावों को रद्द करवाने के लिए आबकारी एवं कराधान मन्त्री ए. सी. चौधरी जिलों में जाकर अधिकारियों पर दबाव डाल रहे है। सरकार के इन कथित हथकंडों का विरोध करने के लिये समिति ने प्रत्येक गांव से ११ सत्याग्रही भर्ती करने प्रारम्भ कर दिये हैं।

पता चला है कि आर्य प्रतिनिधि सभा से संबद्ध हरयाणा शराबबन्दी समिति का एक प्रतिनिधिमंडल इन दिनों आन्ध्रप्रदेश का दौरा करने की तैयारी में जुटा है ताकि हरयाणा में भी आन्ध्रप्रदेश की तरह शराबबन्दी के लिए प्रभावी लड़ाई लड़ी जा सके। प्राप्त जानकारी के अनुसार समिति सदस्यों के आन्ध्रप्रदेश दौरे का मुख्य उद्देश्य शराबबन्दी के खिलाफ वहां हुए महिला आंदोलन की जानकारी लेना है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार समिति ने प्रदेश में 'महिला जत्थे' तैयार करने का निर्णय लिया है, जो 'बोतल के खिलाफ संघर्ष' नाम की इस लड़ाई में अहम् भूमिका अदा करेंगे।

(दैनिक ट्रिब्यून २१.११.९२)

## जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित वेदप्रचार मण्डल के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष लाला रामानन्द जी सिंगल के निर्देशन में पं० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली ने निम्नलिखित ग्रामों में वेद प्रचार किया। कुछ शिथिल आर्यसमाजों में चेतना पैदा की तथा कुछ ग्रामों में पुरानी समाजों की कड़ी फिर से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित की एवं कुछ नवीन आर्यसमाजों की स्थापना भी की। जिन-जिन विषयों पर प्रकाश डाला गया—दहेजप्रथा, जातपात मिटाने, छुआछूत समाप्त करने, बालविवाह, मूर्तिपूजा, स्त्री-शिक्षा। नवयुवकों को यज्ञवेदी पर यज्ञोपवीत देकर आर्यसमाज में दीक्षित किया। नशे-विषयों से तंग आकर दर्जनों युवकों ने प्रतिज्ञाएं की। शराब पर पूर्ण पाबन्दी लगवाने सम्बन्धी सभा द्वारा चलाए जा रहे अभियान की ओर आकर्षित करके सत्याग्रह के लिये भी तैयार किया। ग्रामवासियों ने बड़ी श्रद्धा से तन-मन-धन से अपना विशेष सहयोग भी दिया। जिन-जिन ग्रामों में पं० रामकुमार जी की भजनमण्डली द्वारा प्रचार हुआ वह इस प्रकार है—

१- नुरनखेड़ा में नवीन आर्यसमाज की स्थापना की। डा० जयपाल आर्य ने विशेष सहयोग देकर प्रचार सफल करवाया। हर रोज हाजरी बढ़ती रही। कुल राशि सभा को १४०० रु० दी गई।

२- ग्राम चिडाना में—प्रधान श्री जिलेसिंह जी आर्य एवं सुनहरासिंह जी सूबेदार ने विशेष सहयोग देकर सभा को कुल धनराशि २१० रु० धन्यवाद सहित दी।

३- आर्यसमाज कैथ जि० पानीपत में प्रधान श्री दयानन्द जी आर्य रघुवीरसिंह सरपंच, श्री पूर्णसिंह जी हरिजन एवं श्री कवरभान जी आदि ने विशेष सहयोग दिया। हरिजन चौपाल में भी प्रचार किया। गाव वालों ने खुश होकर ५६८ रु० की राशि भेंट की।

४- ग्राम भंडारी जि० पानीपत में श्री प्रेमसिंह जी आर्य ने तथा सरदारसिंह जी सु० देईचन्द जी के विशेष सहयोग से प्रचार सफल हुआ। वेदप्रचार मण्डल को धन्यवाद सहित २३९ रु० की राशि दी।

५- ग्राम नैन में सरदारसिंह जी आर्य नकलीराम जी आर्य के सहयोग से मण्डल को २६८ रु० की राशि दी।

६- आर्यसमाज ग्वालड़ा में प्रधान लखमीचन्द जी आर्य, मन्त्री श्री भूपसिंह जी आर्य के समस्त परिवार ने बड़े चाव से प्रचार का प्रबन्ध किया। महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए ३८१ रु० की राशि दी।

७- किवाना में श्री कालाराम जी आर्य सु० भीखन जी ने प्रचार का सुन्दर प्रबन्ध किया। वेदप्रचार मण्डल के लिए २५७ रु० की राशि दी।

ग्राम परढाणा में वैदिक प्रचार चल रहा है। लोग बड़ी रुचि से प्रचार सुनते हैं।

रामानन्द
संयोजक, वेदप्रचार मण्डल पानीपत

## जयप्रकाशनारायण के जन्मदिवस पर समाज सुधार सम्मेलन का आयोजन

दिनांक ११ अक्तूबर १९९२ को ग्राम लाडवा जि० हिसार की चौपाल में लाला बलवन्तराय तायल पूर्व वित्तमन्त्री की अध्यक्षता में समाज सुधार सम्मेलन आरम्भ हुआ जिसमें स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास आर्य, चौ० रामस्वरूप (सिरसा), चौ० जवाहरसिंह आर्य (ढाणी पाल), चौ० संग्रामसिंह आर्य (दड़ौली), मा० पतराम आर्य (सिकारपुर), स्वतन्त्रता सेनानी पं० सन्तलाल (लाडवा), श्री रामस्वरूप सचिव सर्वोदय मण्डल, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि ने जयप्रकाशनारायण के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ में गोरक्षा एवं शराबबन्दी पर भी विचार रखे गए। श्री अतरसिंह क्रांतिकारी जी ने शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराया तथा गांव के लोगों से शराब का ठेका बन्द कराने की पुरजोर अपील की और धरना आदि का हमने पंचायत प्रस्ताव दे दिया है। एक महीने में ठेका बन्द हो जावेगा। यदि बन्द नहीं हुआ तो हम धरना देंगे। भगत जी ने भी धरने में सहयोग का आश्वासन दिया। अन्त में तायल साहब ने अध्यक्षीय भाषण में भ्रष्ट राजनेताओं से सावधान रहने तथा चुनाव में जाति-पांति से ऊपर उठ कर अच्छे लोगों को वोट दो। शराब-धूम्रपान से कोसों दूर रहो वरना बर्बाद हो जाओगे। उन्होंने बताया कि जयप्रकाशनारायण जी सदा कुर्सी से दूर रहे। उनका चरित्र बहुत ऊंचा था। सदा राष्ट्ररक्षा एवं समाज सुधार के कार्यों में निस्वार्थ भाव से तत्पर रहे। हमें उनके बताए रस्ते पर चलना चाहिए। दलीपसिंह नम्बरदार, लाडवा

## महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस

आर्यसमाज सैनिक हाई स्कूल सुखपुरा चौक हनुमान कालोनी रोहतक में महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर विद्यालय में सांस्कृतिक प्रोग्राम किया गया जिसमें स्कूल के बच्चों ने महर्षि के जीवन के विषय में भाषण व भजन प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि चौ० उदयसिंह दलाल ने बच्चों को पुरस्कार वितरण किये। श्री जयपाल भजनोपदेशक ने प्रातः हवन किया व वेदप्रचार द्वारा बच्चों को उपदेश दिया। स्कूल के मुख्याध्यापक श्री सुखवीरसिंह शास्त्री जी ने ५१ रु० सभा को दान दिया। प्रचारमन्त्री—बलराज आर्य

## आर्यसमाज का प्रचार प्रभाव

यमुनानगर—यहां के निकटवर्ती गांव चालड़ धनौरा में विगत दिनों आर्यसमाज द्वारा वेदप्रचार का कार्य श्री महाशय हरलाल जी वानप्रस्थी ने किया। इनके प्रचार का गांव में जादू जैसा प्रभाव पड़ा व नवयुवकों ने उनसे प्रेरणा पाकर ग्राम सुधार का गठन किया। सभा ने निर्णय लिया कि गांव में किसी व्यक्ति को शराब बनाने, पीने व बेचने पर १००० रु० का अर्थदण्ड दिया जाएगा व एक सौ जूते भी मारे जाएंगे। —इन्द्रजित्‌देव

(पृष्ठ २ का शेष)

भी वह बोलते हो गये। जब वह उठे तो सब स्वयंसेवक भी योजना के अनुसार उठ खड़े हुए। रात्रि का अन्तिम भाषण नरेन्द्र जी का था। वह यह कुचाल समझ गये। पन्द्रह मिनट बोलकर उन्होंने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा, यह मेरी संस्कृति नहीं और न मेरा संस्कार ही ऐसा है कि मैं अब देर तक जंगल में आपको बिठाए रखूं। सबको संघियों की यह सभ्यता बहुत अखरी। एक ऐतिहासिक मन्दिर में आचार्य जी को उसी अधूरे छोड़े गये विषय पर बोलने का निमन्त्रण मिला।

हमारी यह प्रचार-यात्रा कितनी सफल रही इसका एक प्रमाण घर लौटते ही मिला। केरल की राजधानी में रामनवमी पर एक विराट् हिन्दू महासम्मेलन का निमन्त्रण श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने दिया। इस वर्ष तो वहां जा नहीं सका। अगले वर्ष ही जाऊंगा। दूरदर्शन ने भी हमारे भाषण व समाचार दिये। दैनिक पत्र तो बार-बार आचार्य जी से हमारे अगले कार्यक्रम व व्याख्यानों के बारे में पूछते रहते थे। आर्यसमाज यदि आचार्य जी को ठोस आर्थिक सहायता करे तो केरल में ऋषि मिशन के प्रसार से वहां नवजीवन आ जावेगा। आर्यसमाज को वहां से कई सुयोग्य युवक, विद्वान् व नेता मिल सकते हैं।

महासम्मेलन के प्रबन्धकों ने कहा, आप दोनों तो इस वर्ष कन्वेंशन का आभूषण बन गये। केरल में नई जागृति व उत्साह आपने भर दिया है। आपने कन्वेंशन में जान डाल दी।" हम दोनों ने इस स्नेह के लिए सबको धन्यवाद दिया। सफलता का श्रेय वहां अपनी जवानी का सुख साज वार कर वेदप्रचार करने वाले आचार्य नरेन्द्रभूषण जी व उनके परिवार को जाता है।

महासम्मेलन के अवसर पर हमारा साहित्य भी बिक्री अर्थ वहां गया था। हमारे स्टाल से बहुत साहित्य गया। कुछ मुफ्त भी बांटा। कुछ पुस्तकें समाप्त हो चुकी थी उनकी बड़ी मांग थी। ऋषि जीवन की मांग बढ़ रही है। प्रकाशन के लिए ग्रन्थ तैयार है। धन कहाँ से आवे? नरेन्द्र जी ने पुरुषार्थ करके देवस्वम बोर्ड के सब पुस्तकालयों में सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ पहुंचा दिये हैं। मेरे होते ही केरल साहित्य अकादमी ने आचार्य जी को पुरस्कृत करने की घोषणा की। हमने आकाशवाणी से यह समाचार सुना। पत्रों में भी छपा कि वैदिक साहित्य के लिए वे सम्मानित होंगे।

ऋषि बोध पर्व पर एक मन्दिर मे मेरा व्याख्यान रखा गया। वहां ग्रामीण लोगों ने बड़ी श्रद्धा से हमारे विचार सुने। प्रथम मार्च को एरणाकुलम में आर्यों का आदि देश विषय पर मेरा व्याख्यान था। प्रायः सभी श्रोता युवक युवतियां थे।

इस समय केरल में हमारे संस्कृत पत्राचार के कोर्स में ग्यारह सौ परीक्षार्थी हैं। इनमें उच्च पदों पर आसीन लोग भी है। एक व्यक्ति इतना कार्य कैसे कर लेता है? यही आश्चर्य का विषय है। इसके लिये वे किसी से कुछ लेते नहीं। आर्यसमाज में कोई इस कार्य का भार उठा ले तो यह बड़ा सस्ता गुरुकुल है।

देश-विदेश के संस्कृतप्रेमी शोधकर्ता महर्षि दयानन्द भवन आते रहते हैं। लिथोनिया की एक संस्कृतप्रेमी युवती की हम आगे कभी चर्चा करेंगे। जितनी विदेशी स्त्रियां पुरुष इस समय आचार्य नरेन्द्रभूषण जी के सम्पर्क में है, इतने विदेशियों का सम्बन्ध किसी और आर्य विद्वान् से नहीं होगा।

मेरी उपस्थिति में दो फ्रेंच देवियों ने आचार्य जी से कहा कि हमारी एक सहेली आने वाली है वह भी आपसे कुछ पढ़ना सीखना चाहती है। देश विदेश से आये हुए पत्रों का उत्तर देना, साहित्य सृजन, पत्रिका का सम्पादन, प्रचार, संस्कृत पत्राचार का काम, विरोधियों का उत्तर देना, शुद्धि का कार्य, टाईप भी करना और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं प्रेस में मशीन चलाना—ये सब कार्य वे पति पत्नी दिनरात करते है। रात्रि में जब चाहें उठ जाते हैं। कभी टाईप कर रहे हैं तो कभी लेखन कार्य। मुझे प्रथम बार यह पता चला कि उनकी धर्मपत्नी भी टाईप करती है। क्लर्क की आवश्यकता है। पैसा कौन दे? उन्हें मांगना नहीं आता। लूटना वे जानते नहीं।

मैं इस बार भी आनन्दवाड़ी आश्रम में गया। एक बार ब्र० विवेकभूषण जी के साथ और दूसरी बार उनके चले आने के बाद। आश्रम के महात्मा अद्वैयानन्द जी के दर्शन किए। वे बड़े शान्त स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनके आश्रम में कोई दो सौ विदेशी हर समय रहते हैं। सब आर्य धर्म की दीक्षा लेते हैं। सभी शाकाहार का व्रत लेते हैं। मैंने महात्मा जी से पूछा कि आप इन विदेशियों का एकदम कैसे बदल लेते हैं? ये मांसाहार कैसे तज देते है? अपने देश में तो अण्डे मछली का प्रचार बहुत किया जा रहा है। आपने कहा कि जो भी इस वातावरण में आता है आत्मोन्नति के लिए अपने आप इस महापाप को छोड़ देता है। इस आश्रम के सचिव भी बड़े सज्जन पुरुष हैं। केरल में प्राकृतिक चिकित्सा की एक पत्रिका निकलती है। इसके डा० वर्मा भी शाकाहार का सफल प्रचार कर रहे हैं। कृषि सम्बन्धी एक पत्रिका में वेद में कृषि-विज्ञान पर आचार्य नरेन्द्रभूषण जी के खोजपूर्ण लेख छप रहे हैं। केरल में अब एक गुरुकुल व साधन आश्रम चाहिए। यह कैसे बनेगा? कब बनेगा? इसका मुझे उत्तर चाहिए। ❀

## 'गायत्री' मन्त्र साम्प्रदायिक नहीं है?

गायत्री मन्त्र द्वारा शुभकामनायें व्यक्त करना भारतीय संविधान की साम्प्रदायिक भावनाओं के विरुद्ध नहीं है। मद्रास उच्च न्यायालय ने अपने एक निर्णय में इसे 'शब्द-ब्रह्म' के रूप में वर्णित किया है।

सार्वजनिक क्षेत्र की संस्था युनाइटेड कम्पनी ने अपने दीपावली शुभकामना-कार्ड मे गायत्री मन्त्र और उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था, जो किसी भी दशा में संविधान में निहित साम्प्रदायिक सद्भावना के विरुद्ध नहीं है। ऐसा निर्णय मद्रास उच्च न्यायालय ने दिया।

द्रविड कजगम (डी० के०) ने मद्रास उच्च न्यायालय मे दावा प्रस्तुत किया था कि सन् १९८३ में उपर्युक्त एन्श्योरेंस कम्पनी ने अपने ५००० दीपावली शुभकामना-कार्ड में गायत्री मन्त्र प्रकाशित करके साम्प्रदायिकतापूर्ण कार्य किया है। उनके सचिव के दावे के अनुसार एन्श्योरेन्स ने २५,०००/- के धन का अपव्यय किया है और न्यायालय से प्रार्थना की कि सार्वजनिक क्षेत्र को कम्पनी को आदेश दिया जाये कि वे इस प्रकार की साम्प्रदायिक दुर्भावना से स्वयं को दूर रखे।

उच्च न्यायालय के विद्वान् न्यायाधीश श्री राजू ने प्रस्तुत दावे को रद्द करते हुए अपने निर्णय में कहा कि यह मन्त्र ऋग्वेद से लिया गया है, जो वैदिक ज्ञान की कुंजी है। समस्त वेद सदा से ही मानवता के प्रतीक रहे है, जिनका सम्बन्ध किसी भी धर्म-विशेष, जाति या सम्प्रदाय से नहीं है। न्यायाधीश श्री राजू ने दावेदार के इस तर्क को मानने से इन्कार कर दिया कि गायत्री मन्त्र ब्राह्मणों के लिये ही है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का तर्क भ्रामक मिथ्या है। किसी भी स्थान पर ऐसा उद्धृत नहीं है कि यह मन्त्र केवल ब्राह्मणों की बपौती है या किसी भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय विशेष की सम्पत्ति है। —कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान आर्यसमाज सांताक्रूज

## कन्या गुरु० विद्यापीठ पंचगांव (भिवानी) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक ३१ अक्तूबर १ नवम्बर १९९२ को कन्या गुरुकुल पंचगांव का ग्यारहवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी (गुरुकुल धीरणवास), स्वामी धर्मानन्द (पानीपत, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर, श्रीमती सावित्रीदेवी एडवोकेट (भिवानी), नैष्ठिक ब्र० जीवानन्द जी (गुरुकुल झज्जर) तथा राव वंशीसिंह जी विकास एवं पंचायत मन्त्री हरयाणा आदि ने गुरुकुलों का महत्त्व, नारी शिक्षा, गोरक्षा, राष्ट्ररक्षा, पाखण्ड तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। मन्त्री महोदय ने ८० हजार रुपये कमरे बनवाने हेतु, ५० हजार रुपये चारदिवारी हेतु, ३० हजार रुपये पानी की टंकी हेतु, ५१ सौ रुपये यज्ञशाला हेतु देने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त पं० जगन्नाथ शास्त्री (बेरला) ने गुरुकुल में दान दिया। मन्त्री जी ने मैंचिंग ग्रांट द्वारा ४० हजार रुपये भी देने की स्वीकृति प्रदान की। अन्य लोगों ने भी दिल खोल कर गुरुकुल में दान दिया। अतिरिक्त उपायुक्त चौ० देवेन्द्रसिंह (भिवानी) ने प्राथमिकता के आधार पर कन्या गुरुकुल में कार्य करवाने का आश्वासन दिया। विधायिका बहिन चन्द्रावती ने भी सम्बोधित किया तथा २०० रु० छात्राओं के फलों के लिए दान दिया।

क्रान्तिकारी श्री अतरसिंह ने भी अपने व्याख्यान में शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। सभा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन में तन, मन, धन से सहयोग की अपील की।

पं० जयपालसिंह बेधड़क, स्वामी दयानन्द, पं० मुरारीलाल बेचैन, श्री आजादसिंह तथा पं० दीपचन्द आर्य के समाजसुधार के शिक्षाप्रद रोचक भजनों का कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। गुरुकुल की छात्राओं का समय-समय पर अन्त्याक्षरी, भाषण, भजन, संवाद का कार्यक्रम प्रेरणादायक रहा। कन्या गुरुकुल गैन्दाखेडा की छात्राओं का भी भजनों का कार्यक्रम उत्तम रहा। श्री अजीतसिंह जी शास्त्री (काकड़ोली हुकर्मा) भी गांव के कई बच्चे उत्सव पर लाये। बच्चों ने ४२७ रु० दान भी गुरुकुल के उत्सव पर दिया। १५ बच्चों ने यज्ञोपवीत लिया। श्री धर्मपाल शास्त्री (भाण्डवा) भी नैंघा गांव के स्कूल के बच्चों को उत्सव पर लाए। १ नवम्बर को सायं ४ बजे कन्या गुरुकुल की छात्राओं का आसन, व्यायाम, पीटी, बेलजियम, डम्बल तथा लाठी चलाना आदि का व्यायाम प्रदर्शन हुआ। व्यायाम प्रदर्शन से लोग काफी प्रभावित हुए। इस अवसर पर ८३३ रुपये नर-नारियों ने दान देकर प्रोत्साहित किया। गुरुकुल में प्रातः सायं दोनों समय श्रद्धा से हवन किया गया। वास्तव में जंगल में मंगल हो रहा था। वेद ऋचाएं गूंज रही थीं। गांव गुवाण्ड के नरनारियों ने काफी संख्या में भाग लिया। इस वर्ष कार्यकारिणी के सदस्यों ने निकट के गांव से १०० क्विटल अन्न इकट्ठा किया। इस गुरुकुल में आचार्या बहिन विमला शास्त्री के संरक्षण में १३० छात्राएं विद्या ग्रहण कर रही हैं। सभा को ६०० रु० दान दिया गया।

मन्त्री, कन्या गुरुकुल पंचगांव

## शोक समाचार

श्री उमरावसिंह जी जौणधि निवासी जिला रोहतक का २२ अक्तूबर को निधन हो गया है आप ७५ वर्ष के थे। आप आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे। आपका परिवार भी आपकी भांति कट्टर आर्य विचारों का है। आप के निधन पर यज्ञ का आयोजन किया गया तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

## श्री परमानन्द तुली का निधन

रोहतक नगरपालिका पार्षद श्री परमानन्द तुली का ६५ वर्ष की आयु में ३ नवम्बर ९२ को हृदय गति बन्द होने पर निधन हो गया। वे धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक नेता थे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में सक्रिय रूप से इन्होंने भाग लिया था।

## शोक समाचार

आर्यसमाज नरवाना के पूर्वप्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य के कनिष्ठ भ्राता कर्णपाल जी आर्य का अकस्मात् दो गाड़ियों की भिड़ंत में मौके पर ही निधन हो गया। आप ४० वर्षीय युवक निःशुल्क और निःस्वार्थ जनों के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करते रहते थे। एक कर्मठ और साहसी कार्यकर्ता थे। आपके निधन से आर्यसमाज को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है।

रामकुमार

३-११-९२ मन्त्री, आर्यसमाज नरवाना

## शोक समाचार

आर्यसमाज फतेहबाबाद के कर्मठ एवं दानवीर भूतपूर्व प्रधान श्री ओंकारमल जी (मै० मिठ्ठनलाल ओंकारमल) फतेहाबाद (हिसार) का ३०-१०-९२ को आकस्मिक निधन हो गया है। आप श्री स्व० ओंकारमल जी गुरुकुल वेदमन्दिर फतेहाबाद के प्रधान भी थे और कई सामाजिक संस्थाओं के सदस्य भी थे।

सत्यपाल बंसल

मन्त्री, आर्यसमाज फतेहाबाद

(पृष्ठ १ का शेष)

अधिकारी कई बार आ चुके। धरने पर बैठे लोगों ने साफ कह दिया है कि जब तक ठेका बन्द नहीं होगा तब तक हम यहां से नहीं उठेंगे। प्रचार से प्रभावित होकर अब तक ४०० लोग शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं। शराबबन्दी आन्दोलन से महिलाओं में खुशी की लहर दौड़ गई है।

दिनांक २०-११-९२ को मध्याह्न २ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा धरने पर पधारे। धरने पर शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। सर्वप्रथम महाशय हरध्यानसिंह जी के भजन हुए। आर्यसमाज क्योड़क के पूर्व प्रधान श्री हुकमचन्द जी आर्य ने आर्यनेताओं का स्वागत किया तथा धरने की रूपरेखा रखी। चौ० विजयकुमार जी ने शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया तथा हिसार में मुख्यमन्त्री के दामाद की फैक्ट्री को उनके माथे पर कलंक बताया। प्रो० साहब ने सरकार की शराबबढ़ावा नीति की कटु आलोचना की तथा लोगों से शराबबन्दी संघर्ष में तन-मन-धन से सहयोग की अपील की। धरने पर सभा की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। क्योड़क के लोगों की धरने पर बैठने के लिये प्रशंसा की। सरपंच श्री सुरेन्द्रसिंह जी ने अन्त में धन्यवाद किया। आर्यसमाज क्योड़क ने ११११ रु० शराबबन्दी आन्दोलन में सहयोग हेतु प्रो० जी को दिये। प्रमुख आदमियों ने वचन दिया। धरने में सभी गांव का सहयोग है। प्रमुख श्री तेजराम, सिताबसिंह, श्री हुकमचन्द, बाबा बसन्तगिरि, हरफूल आर्य, ज्ञानचन्द आर्य, दिलबाग आर्य, रामसिंह आर्य, निशानसिंह पंच, श्यामसिंह पंच, प्रेमसिंह पंच, सुदेशरानी, चमेलीदेवी आदि। गांव में शराब बेचने व निकालने वाले पर ११०० रु० दण्ड, बताने वाले को ५०० रु० इनाम है।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० न० P/RT

सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३



ओ३म् सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामंत्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ३ ७ दिसम्बर १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

## वेद भगवान् कहते हैं—

# माता के मंदिर में प्रवेश के अधिकारी—संपूर्ण प्रजाजन

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. १/६६ राप्तीनगर कालोनी, आरोग्य मन्दिर गोरखपुर)

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु ।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यताम् नः ॥

(यस्याः) जिस मातृभूमि के (मानवानां) मननशील मनुष्यों के (मध्यतः) अन्दर (उद्वतः) उच्चता और (प्रवतः) नीचता तथा (समं) समता के विषय में (बहु) बहुत ही (असंबाध) निर्वैरता है और (या) जो (नानावीर्या ओषधी.) नाना प्रकार के वीर्यों से युक्त औषधियों को (बिभर्ति) धारण पोषण करता है वह (नः पृथिवी) हमारी मातृभूमि (नः प्रथता) हमारी कीर्ति का (राध्यताम्) साधन होवे ।

इस मन्त्र में बतलाया गया है कि हमारे राष्ट्र के विचारशील मनुष्यों में परस्पर द्रोह भाव न हो, उनमें एकता हो, उनमें उच्चता, नीचता और समता के विषय में झगडे न हों। यह विविध गुणों वाली, अनेक प्रकार के अन्न और वनस्पतियों को बढ़ाने वाली और महान् व्यक्तियों को जन्म देने वाली प्यारी मातृभूमि हमारे यश को फैलाने की कारणीभूत हो।

सत्यनिष्ठा, संवर्धन की योजना, न्याय व्यवहार, प्रबल क्षात्र तेज कर्तव्य दक्षता, तप, ज्ञान और यज्ञ इन आठ खंभों पर आधारित भारतमाता—जो माता हमें अन्न, फल, फूल, दूध और घी देती है कितनी मनोरम और कितना सुन्दर होगा ? जब हम इसके सौंदर्य की कल्पना करते हुए भावना की उत्ताल तरंगों में जाकर इसके विशाल रूप का दर्शन करते हैं अनायास ही यह शब्द स्मरण हो आते हैं और कवि के शब्दों में गुनगुनाने लगते हैं—

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे राम, हिम कोतवालवा से
तीन द्वारा घहरावे सिन्धु रे बटोहिया ।
जाहु जाहु भैया रे, बटोही हिन्द देखि आओ,
जहां ऋषि चारों वेद गावे रे बटोहिया।
व्यास, बाल्मीकि ऋषि, गौतम, कपिलदेव,
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया ।
जाइ जाइ भैया रे बटोही, हिन्द देखि आओ,
जहां सुख झूले धान खेत रे बटोहिया।
दयानन्द, लेखराम, श्रद्धानन्द स्वामी जो के.
फिर फिर हिम सुधि आवे रे बटोहिया।
अमर प्रदेश देश, सुभग सुघर वेश
मोरे हिन्द जग के निचोड रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
थामे मोरे प्राण ये, बसे हैं बटोहिया।

इस भारत माता के मन्दिर में वेद मन्त्र कहता है कि ऊंच-नीच, छोटे-बड़े और अमीर-गरीब, हिन्दू-मुस्लिम मजदूर-कृषक और पूंजीपति के भेदभाव को तोड़कर सबको सब कार्य करते हुए एकसमान प्रवेश का अधिकार है। यह माता अपने सभी पुत्रों को एक भाव से देखती है। उसकी गोद में जो भी आता है वह समर्थ-असमर्थ सभी को बैठने का अधिकार है। यही कारण है कि वैदिक पद्धति के अनुसार भारत माता के मन्दिर में ऊंच नीच के भेद को मिटाने के लिए भावनात्मक ऐक्य के निर्माण के लिए, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना की गई थी। यह भावनात्मक ऐक्य कानून या बल प्रयोग द्वारा नहीं निर्मित किया जा सकता, इसके लिए वर्णाश्रम पद्धति का प्रयोग ही करना होगा।

वर्णाश्रम व्यवस्था इस संस्कृति का प्राण थी। यह व्यवस्था ब्राह्मण को क्षत्रिय से, क्षत्रिय को वैश्य से, वैश्य को शूद्र से तथा शूद्र को ब्राह्मण से अर्थात् मानव को मानव से पृथक् नहीं करती। यह वैदिक व्यवस्था ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर का, छूत और अछूत का संग्राम जारी नहीं करती। यह जात-पात के झगडों को दूर कर वर्गहीन समाज का निर्माण करती है। वास्तव में यह वर्ण-व्यवस्था मानव समाज के उन महान् आध्यात्मिक सिद्धान्तों का वर्गीकरण और नियमन था जिनके बिना आज देश में छुआछूत, ऊंचनीच, जातीयता और इन्हीं का फल प्रान्तीयता एवं भाषावाद का जन्म हुआ है। इसी व्यवस्था का प्रभाव है कि माता के अंगों का छेदन हो रहा है। कहीं पर बंगालिस्तान, कहीं खालिस्तान, कहीं पर द्राविडस्तान और कहीं इस्लामिस्तान के नारे लगाए जा रहे है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हमारी जीवन विषयक वैयक्तिक आवश्यकताए अकेले रहते हुए पूर्ण नहीं हो सकती। अतः उसने श्रम विभाग तथा परस्पर सहयोग का सहारा लिया और अपनी आवश्यकता की पूर्ति की।

इसका मतलब यह हुआ कि कार्य की दृष्टि से जितना महत्त्व एक न्यायाधीश एवं अध्यापक का है उतना ही एक व्यापारी और एक भंगी का भी है। कार्य की दृष्टि से कोई छोटा और कोई बड़ा नहीं। भारतीय वर्णव्यवस्था का आधार मनोवैज्ञानिक है। मनोविज्ञान में मनुष्य चार प्रकार के कहे गए है—१. सात्विक, २. सात्विक-राजसिक, ३. राजसिक तामसिक और ४. तामसिक और स्वभावानुसार यही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। इसलिए भावनात्मक एकता के लिए राष्ट्र में कार्य की दृष्टि से विभाजन करना होगा और किसी को छोटा या बड़ा नहीं मानना होगा। वास्तव में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कर्त्तव्य है और क्रमशः इज्जत, हुकूमत, दौलत और खेलकूद अधिकार हैं। यही भारत का सामाजिक न्याय की मूल भावना है। अगड़े-पिछड़े, हिन्दू-मुसलमान के झगडे समाप्त करने का ढंग है। त्याग की भावना का आदर होने से त्यागियों की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# कर्मयोगी आचार्य महामुनि जी

(सत्यपाल शास्त्री, आचार्य गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा' भैंसवाल जि० सोनीपत)

जीन्द जिले के गांव शाहपुर (कण्डेला) के एक छोटे से कृषक परिवार में श्री चौ० जुगलाल जी के घर श्रीमती नन्हीदेवी की कोख से सन् १९१२ ई० में एक बालक ने जन्म लिया। धार्मिक रीतिरिवाज के अनुसार बालक का नामकरण संस्कार किया गया। नामकरण संस्कार के बाद बालक मुसद्दी नाम से पुकारा जाने लगा।

मुसद्दी के नाना करनाल जिले के गांव सींख के निवासी थे। उन दिनों उत्तर भारत में आर्यसमाज का प्रचार जोरों पर था। मुसद्दी के नाना कट्टर आर्यसमाजी थे। सींख गाव के ही चौ० केहरसिंह जी भी आर्यसमाज में रंगे हुए थे। मुसद्दी के नाना तथा उनका परस्पर प्रेम था। सींख गांव के निकट ही उरलाना गांव स्थित है। भारत विभाजन से पूर्व इसमें मुसलमान रांघड़ रहते थे। उस गाव में श्री फूलसिंह जी पटवारी के रूप में नियुक्त थे। उस समय प्लेग की महामारी फैली हुई थी। इस दौरान श्री फूलसिंह जी ने रांघड़ों की जो सेवा की उसकी प्रशंसा आस-पास के देहात में सर्वत्र होने लगी। रांघड़ों के गांव में रहने के कारण श्री फूलसिंह जी में मांस आदि के दुर्व्यसन लग गये थे। यह बात उनके कुछ आर्यसमाजी मित्रों को चुभती थी। अब उनके मित्र आर्यबन्धुओं को एक उपाय सूझा कि क्यों न फूलसिंह पटवारी को आर्यसमाज के सत्संगों में उत्सवों में अपने साथ ले जाया जावे। इस कार्य मे प्रमुख भूमिका अदा की श्री ख्यालीराम नम्बरदार जुलाना लाखू निवासी तथा श्री प्रीतसिंह पटवारी इसराणा निवासी ने। आर्यसमाज के उत्सवों सत्सगों में भाग लेने के कारण श्री फूलसिंह पटवारी के मस्तिष्क मे आर्य उपदेशकों के उपदेश घर कर गये। एक बार पानीपत आर्यसमाज का वार्षिक महोत्सव हो रहा था। उसमें श्री ख्यालीराम नम्बरदार तथा प्रीतसिंह पटवारी श्री फूलसिंह पटवारी को साथ लेकर उत्सव में सम्मिलित हुए। उत्सव मे भव्य मूर्त्ति संन्यासी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का ओजस्वी वाणी मे व्याख्यान चल रहा था। श्री फूलसिंह पटवारी पर उसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह कट्टर आर्यसमाजी बन गया। आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द का ऐसा दीवाना बना कि महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में वर्णित पाठविधि के अनुसार गुरुकुल खोलने की धारणा मन में पक्की कर ली। इस धारणा को लेकर वे गांव-गांव में घूमने लगे। पटवार का पद त्याग दिया। अब वे महात्मा भक्त फूलसिंह कहलाने लगे। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी धारणा को कार्यरूप में परिणत करते हुए रोहतक जिले के भैंसवाल कलां गांव में गुरुकुल की २ मार्च १९२० ई० में स्थापना की। जिसकी आधारशिला अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के कर कमलों द्वारा रखी गई।

गुरुकुल की स्थापना के बाद आर्यसमाजी लोग अपने बालकों को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराने लगे। इसी के फलस्वरूप बालक मुसद्दी के नाना जी ने भी सींख निवासी अपने मित्र चौ० केहरसिंह के कहने पर मुसद्दी को गुरुकुल भैंसवाल मे सन् १९२१ ई० मे प्रविष्ट करा दिया।

गुरुकुल में प्रवेश लेने के बाद आचार्य जी द्वारा बालक का विधिपूर्वक वेदारम्भ संस्कार किया गया। वेदारम्भ संस्कार के बाद मुसद्दी का नाम महामुनि रखा गया। आगे चलकर बालक मुसद्दी ने अपने महामुनि नाम को सार्थक बनाया।

गुरुकुल की दिनचर्या के अनुसार पढ़ाई लिखाई का क्रम जारी हो गया। सुयोग्य आचार्य ब्रह्मचारी युधिष्ठिर जी तथा पं० विश्वनाथ जी शास्त्री सांख्य काव्य तीर्थ अध्यापन कार्य के साथ-साथ आचार-विचार की भी शिक्षा देने लगे। ब्रह्मचारी शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि से उन्नति को प्राप्त करने लगे।

महात्मा भक्त फूलसिंह जी सामाजिक तथा पंचायती कार्यों में अधिक व्यस्त रहने लगे। ऐसी स्थिति मे गुरुकुल की आर्थिक स्थिति अत्यन्त बिगड़ गई। गुरुकुल कोष मे कार्ड लेने को भी पैसा नहीं रहा। सभी कर्मचारी धीरे धीरे गुरुकुल छोड़कर चले गये। अब ब्रह्मचारी ही गुरुकुल का सारा काम स्वयं ही करने लगे। वे काम करने के साथ-साथ अपना अध्ययन का कार्य भी पूर्ण मनोयोग से करते थे। इसी के फलस्वरूप छात्र पूर्ण रूप से विद्या में निपुण हो गये। अब श्री पं० विश्वनाथ जी शास्त्री सांख्य एवं काव्यतीर्थ ने श्री महात्मा भक्त फूलसिंह जी को सलाह दी कि आपके गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्रत्येक दृष्टि से योग्य एवं विद्वान् बन गये हैं। आप इन्हें स्नातक बनाकर गुरुकुल का कार्यभार इनके सुपुर्द कर दो। इससे गुरुकुल की आर्थिक स्थिति को सुधारने में तो सहयोग मिलेगा ही साथ ही साथ गुरुकुल के स्नातकों में कर्त्तव्यनिष्ठा तथा अपनी कुल भूमि के प्रति स्नेह भी उत्पन्न होगा। इससे आप गुरुकुल कार्य के विषय में पूर्ण निश्चिन्त होकर सामाजिक कार्यों में अधिक ध्यान दे सकोगे। भक्त जी महाराज को पण्डित विश्वनाथ जी की बात समझ में आ गई।

सन् १९३२ ई० में होने वाले गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर छात्रों को स्नातक बनाने का निश्चय किया गया। तीन ब्रह्मचारी अपने अपने विषयों में पूर्णरूपेण दक्षता प्राप्त कर गुरुकुल से स्नातक होकर निकले। वे थे श्री आचार्य हरिश्चन्द्र, आचार्य विद्यानिधि तथा वैद्य सत्यवीरसिंह। इस प्रकार से गुरुकुल से स्नातक बनने का क्रम प्रारम्भ हो गया। सन् १९३३ ई० में श्री आचार्य महामुनि जी, विष्णुमित्र आदि सात स्नातक बने। अब स्नातकमण्डल को गुरुकुल का कार्यभार सुपुर्द करके भक्त जी महाराज निश्चिन्त होकर सामाजिक कार्यों में अधिक व्यस्त रहने लगे।

गुरुकुल के सर्वप्रथम स्नातक श्री हरिश्चन्द्र जी को गुरुकुल का आचार्य बनाया गया। श्री आचार्य हरिश्चन्द्र के साथ श्री महामुनि जी, श्री विष्णुमित्र जी, श्री धर्मभानु जी तथा श्री धर्मदत्त जी गुरुकुल कार्य में जुट गये। इन्हीं की टीम में श्री मुंशी प्रभुदयाल जी भी जो कि गुरुकुल के कार्यालयाध्यक्ष के साथ-साथ अध्यापनकार्य भी करते थे सम्मिलित हो गये। अब धीरे-धीरे गुरुकुल का आर्थिक संकट भी दूर हो गया तथा गुरुकुल की चहुंमुखी उन्नति होने लगी। इधर भक्त जी महाराज का प्रभाव भी सामाजिक क्षेत्र में निरन्तर बढ़ता जा रहा था। इससे कुछ लोग गुरुकुल से तथा भक्त जी महाराज से ईर्ष्या करने लगे। इसी के फलस्वरूप मुस्लिम आततायियों ने श्री महात्मा फूलसिंह जी का सन् १९४२ ई० मे वध कर दिया। इससे गुरुकुल को बड़ा वज्रघात लगा। स्नातकबन्धु इस वज्रघात को सहकर भी गुरुकुल कार्य में तल्लीन रहे। सन् १९४७ ई० में श्री आचार्य हरिश्चन्द्र जी के नेतृत्व में गुरुकुल भैंसवाल का रजत जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसके बाद श्री आचार्य हरिश्चन्द्र जी गुरुकुल को सब प्रकार से समुन्नत करके बाहर चले गये। बाहर रहकर भी आजीवन किसी न किसी रूप में वे गुरुकुल की सेवा करते रहे।

सन् १९४८ ई० में श्री महामुनि जी को गुरुकुल भैंसवाल का आचार्य बनाया गया। उन्होंने आचार्यपद का कार्यभार निरन्तर तीस वर्ष तक वहन किया। अपने कार्यकाल में वे छात्रों की चारित्रिक एवं बौद्धिक सभी प्रकार की गतिविधियों का पूर्ण ध्यान रखते थे। ये जाड़े की ऋतु में छोटे ब्रह्मचारियों के पैर स्वयं धोते। कभी कोई बच्चा आश्रम में टट्टी कर देता तो उसके संरक्षक को उसे पीटने धमकाने नहीं देते थे अपितु टट्टी स्वयं उठा देते थे। उन्होंने छात्रों को माता-पिता का प्यार दिया तथा गुरु का स्नेह।

आचार्य महामुनि ने गुरुकुल से स्नातक बनने के बाद 'विद्या प्रभाकर' की उपाधि ग्रहण की थी। इसके बाद पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा दर्शनशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में लेकर उत्तीर्ण की। दर्शन शास्त्र मे उनकी विशेष रुचि थी। निरन्तर स्वाध्याय करना उनके जीवन का प्रमुख अंग था। क्योंकि स्नातक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

## प्रधानमन्त्री के नाम पत्र

महोदय जी,

भारत के संविधान में लिखा गया है कि किसी भी व्यक्ति को आत्महत्या ही नहीं उसका प्रयास करना भी दण्डनीय अपराध है।

दूसरी तरफ संविधान को कार्यान्वित करनेवाली सरकार हर वर्ष करोड़ों रुपया खर्च कर आम लोगों के हित में प्रचार करती है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

सरकार के प्रचार माध्यम से ही स्वयं प्रमाणित हो जाता है कि शराब पीने से मनुष्य अपना स्वास्थ्य खोकर आहिस्ता-आहिस्ता मृत्यु की ओर बढ़ता चला जाता है जो प्रत्यक्ष आत्महत्या ही है।

ऐसी स्थिति में सरकार खुद शराब बेचकर अपराध नहीं कर रही है क्या ?

शराब बनाने वाली फेक्टरियों को सरकार लाइसेन्स देती है और इसी तरह बेचने वालों को भी लाइसेन्स दिया जाता है किन्तु शराब पीने वाले व्यक्ति को लाइसेन्स नहीं दिया जाता कि इस व्यक्ति की सेहत पर शराब पीने का बुरा प्रभाव तो नहीं पड़ेगा तथा इसकी आर्थिक स्थिति शराब पर खर्च होने वाले धन के लिये पर्याप्त है।

शराब भोजन नही लत है जिससे हमारा मानसिक चरित्र गिरकर भ्रष्टाचार की जड़ें सींचकर अन्धकार की ओर ले जाता है।

सरकार को धन प्राप्ति का सबसे सहज माध्यम शराब की दुकान खोलना ही लगा ताकि विकास योजना चलाई जा सके किन्तु दूसरा पहलू अनदेखा कर दिया कि शराब को प्रोत्साहन देकर भारतवासियों के इन कमजोर वर्ग के लोगों को विनाश की ओर अग्रसर होने का रास्ता तैयार किया जा रहा है।

दुनिया के हर पदार्थ से पेट भर जाता है किन्तु शराब ही एक ऐसा पेय है कि आदमी होश रहते सा नहीं कह पावेगा।

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है। इन्हें अपने शराबी पिता, भाई, पति, लड़के से कितनी यातनाएं झेलनी पड़ती हैं कि रोज ही घर, मोहल्लों में कोहराम मचा रहता है।

हिन्दू हो या मुस्लिम इनके स्वधर्मों में मद्यपान करना निषेध है किन्तु शराब पीने के लिये वे सभी धर्मनिरपेक्ष बन जाते हैं।

हर परिवार के लोग मन से चाहते हैं कि हमारा परिवारी कोई शराब न पीवे किन्तु परिवार में कोई न कोई सोहबत का शिकार बन जाता है।

ब्रिटिशकाल में श्री गांधी जी द्वारा शराब की दुकानों के विरोध में महिलाओं को शराब की दुकान पर धरना देने पर नियुक्त किया था। किसी गांधी अनुयायी ने गांधी जी से पूछा था कि आपको भारत का डिक्टेटर बना दिया जावे तो आप सबसे पहले किस काम को प्राथमिकता देंगे। गांधी जी ने तुरन्त कहा मैं सबसे पहले भारत में बिना मुआवजा दिये शराब के ठेके बन्द करा दूंगा। उन्हें मालूम था कि शराब भारतवासियों को इतना कमजोर कर देगी कि उन्हें शराब की कमजोरी का सदियों ज्ञान नहीं हो पावेगा।

आजादी मिलते ही गांधी अनुयाइयों को क्या सुरखाब के पर लग गये कि इन्होंने हर चौराहे पर शराब की दुकान खुलवाकर गांधी जी की आत्मा को सन्तोष देने में ही हित समझा।

एक फायदा शराब से जरूर हुआ कि जो लोग भ्रष्टाचार से पैसा बनाते हैं वे लोग शाम को शराब के माध्यम से कुछ रुपया सरकारी खजाने में पहुंचा देते हैं।

मेरे अतिरिक्त भारतवासियों ने शराब के बाबत आपको अवगत कराया होगा। आपको या आप जैसे लोगों को भारतवासियों की शराब ने क्या दशा बना दी कि सही जानकारी नहीं है और हम लोगों की आवाज में इतनी शक्ति नहीं कि आपके हृदय तक बात का असर हो सके।

अतः आप से पुनः निवेदन है आप भारत की भोली भाली जनता को आने वाली विपत्तियों से बचाने मे शराब बन्द करवाकर जनहित की रक्षा की दायित्वपूर्ण कार्यवाही करने की कृपा करें।

—शेरसिंह रावत मट्ठा गांव डा० बार्लूगंज जि० देहरादून

## भगवान् श्रीकृष्ण की अमर वाणी कर्मयोग का ज्ञान—गीता जिसका आदर सारे संसार में किया जाता है और जिसपर भारतीय संस्कृति का महल खडा है।

(डा० शान्तिस्वरूप शर्मा जरनलिस्ट, कुरुक्षेत्र)

पांच हजार वर्ष बीत गये कुरुक्षेत्र के इस ऐतिहासिक स्थल के ४८ कोस के क्षेत्र में जब कौरवों और पाडवों की सेनाएं आमने-सामने मरने-मारने को तैयार खड़ी थीं। भगवान् कृष्ण ने कौरवों के महाराज दुर्योधन को बहुत समझाया कि वह अपने भाइयों पांडवों पर अत्याचार और अन्याय बन्द कर दे परन्तु वह न माना। जिस पर महाभारत में संसार के सारे देशों की सेनाओं ने भाग लिया। भगवान् कृष्ण ने अन्याय के विरुद्ध पाडवों की सहायता करने की घोषणा कर दी। भगवान् कृष्ण वीर अर्जुन को रथ मे बैठाकर युद्धस्थल में पहुँच गये। वीर अर्जुन ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और वह यह देखकर कि उसके सामने उसी के भाई गुरु और सभी सम्बन्धी मारने मरने को खड़े हैं तो वह घबराया और कायरता से अपना धनुषबाण नीचे रखकर भगवान् कृष्ण को हाथ जोड़कर बोला "कि मुझे ऐसा राज्य नहीं चाहिए जिसमें मुझे अपने सगे सम्बन्धियों को मारना पड़े।"

युगपुरुष भगवान् कृष्ण ने कहा कि हे पृथापुत्र अर्जुन ! जिस जीवन और मृत्यु का तुझे भ्रम हो गया है वह वास्तव में कुछ नहीं है। यह बात ठीक नहीं है कि इससे पहले तू नहीं था तथा भविष्य में नहीं होगा। यह बात भी गलत है कि तू शरीर है। तू तो आत्मा है जो अजन्मा, नित्य, चेतन व स्थिर रहने वाला है। यह अदाह्य अभेद्य व अशोक्य है। यह अव्यक्त, अचिंत्य तथा विकाररहित है। शरीर के समाप्त होने पर कदापि नहीं मरता। जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ों का परित्याग करके नए वस्त्रों को धारण करता है इसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। कर्म करना ही तेरा परम कर्त्तव्य है। फल की इच्छा करना तेरे लिये ठीक नहीं है। धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर दूसरा कोई भी कल्याणकारक कर्त्तव्य क्षत्रिय के लिए नहीं है। कायरता व मोह को त्याग। लोभ, अहंकार, काम व क्रोध के बन्धनों को तोड़ डाल। कर्त्तव्य का पालन कर युद्ध कर। यही तेरा श्रेयस्कर है।

गीता एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसके महत्त्व को वाणीमात्र से व्यक्त करना किसी के भी सामर्थ्य की बात नहीं है। इसमें तो चारों वेदों का सार संग्रहीत है। भगवान् के गुण, प्रभाव और मर्म का जैसा विलक्षण वर्णन इस ग्रन्थ में है संसार के और किसी भी ग्रन्थ में मिलना कठिन है। यह ग्रन्थ तो ज्ञान का अथाह समुद्र है जिसका एक-एक शब्द सदुपयोग से ओतप्रोत है। इस ग्रन्थ का कितना महत्त्व है यह बात भगवान् कृष्ण द्वारा इस विस्तृत उपदेश के अन्त में कहे गये शब्दों से बिल्कुल स्पष्ट है—जो पुरुष मेरे में परम प्रेम करके इस परमरहस्ययुक्त गीता शास्त्र को निष्काम भावना से प्रेम पूर्वक मेरे भक्तों को पढायेगा या अर्थ की व्याख्या कर इसका प्रचार करेगा वह निःसन्देह मेरे को ही प्राप्त होगा।

यह उपदेश केवल अर्जुन के लिये ही नहीं था यह तो सभी के लिए है तब तक जब तक इस पृथ्वी पर मानव का जीवन सम्भव रहेगा। कर्मयोग व निष्काम भाव का यह उपदेश अनुपमेय है जिसकी सार्थकता के प्रति किंचित्मात्र भी सन्देह कोई नहीं कर सकता। इस महान् ग्रन्थ के प्रणेता भगवान् कृष्ण स्वयं एक क्रांतिकारी थे। उनके जीवन से पग-पग पर क्रान्ति का सन्देश मिलता है। उनका बचपन, जवानी और सारा जीवन पाप अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने में बीता। उन्होंने अत्याचारियों और भारतीय संस्कृति को पांव के नीचे रौंदने वाले दुष्टों का सर्वनाश करना अपना धर्म समझा। कर्मयोगी भगवान् कृष्ण की महानता अलौकिक ज्ञान शक्ति और महान् व्यक्तित्व की छाप महाभारत में हमें पग-पग पर मिलती है। उन्होंने बड़ी बुद्धिमत्ता, समझदारी और नीति मे दुष्टों का नाश किया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

# शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि सत्याग्रह की तैयारी के लिए प्रत्येक आर्यसमाज ग्राम से कम से कम ११ सत्याग्रहियों की सूची तथा ११०० रुपये सभा को यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। जो आर्यसमाजें सत्याग्रह की तैयारी के लिए अपने यहां शराबबन्दी सम्मेलन अथवा प्रचार करवाना चाहें वे तुरन्त सभा को पत्र लिखने का कष्ट करें जिससे अधिकारियों तथा सभा उपदेशकों का कार्यक्रम बनाया जाहें।

# स्वतन्त्रता सेनानी लाला हरदेवसहाय का जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न

स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी लाडवा निवासी की प्रेरणा एवं पुरुषार्थ से दिनांक २६-११-९२ को ग्राम सातरोड खुर्द (हिसार) मे लाला जी का जन्म शताब्दी समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी गोरक्षानन्द जी ने की। मंच संचालन मा० सीताराम शर्मा ने किया। स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री मनीराम बागड़ी पूर्व सांसद, श्री जयनारायण वर्मा, श्री बलवन्तराय तायल पूर्व मन्त्री, श्री बाबूनन्द जी, श्री मांगेराम शीतल, स्वतन्त्रता-सेनानी श्री रामस्वरूप, श्री प० कोकचन्द शास्त्री, श्री बिशनस्वरूप दाल वाला, पत्रकार श्री दीवानसिंह आर्य, भगत जी तथा सभाउपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि विद्वान् वक्ताओं ने श्री हरदेव सहाय के जीवन एवं कार्यों पर देश की आजादी में योगदान, गोरक्षक एवं पालक, विधवा विवाह, छुआछूत, हिन्दी प्रेमी विद्या प्रचारणी सभा के नाम से ६५ स्कूल अलग-अलग गाव मे खोले, हिन्दी भाषा पर बल दिया, शराबबन्दी, धूम्रपान छुड़वाना, अकाल पड़ने पर गरीबों की सेवा करना आदि अनेक पहलुओं पर विस्तार से विचार रखे। लाला जी अनेक बार जेल गए। क्रान्तिकारी जी ने कहा गुजरात प्रान्त जहा स्वामी दयानन्द जी, महात्मा गांधी, सरदार पटेल आदि महापुरुषों का जन्म हुआ वहा शराबन्दी लागू है। इस प्रकार हरयाणा सरकार को गाव सातरोड से मुख्यमन्त्री के जमाई की शराब की फैक्ट्री का कलंक मिटाना चाहिए। यह गांव लाला जी की जन्मभूमि है। अगर लाला जी को हरयाणा का गांधी कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। तायल साहब ने भी पुरजोर अपील की कि निकट के ५-१० गांवों के नरनारी सगठित होकर फैक्ट्री पर धावा बोलना चाहिए, तभी समस्या हल होगी। महाशय सुण्डाराम व राजकवि भाई परमानन्द जी के भजन व कविता हुई। समाजसेवी सम्मानित किए गए। लाला जी के परिवार वालों ने प्रीतिभोज दिया।

—सुरेशकुमार शर्मा, सातरोड निवासी

# सत्संग एवं स्वाध्याय का चमत्कार

ग्राम नलवा जि० हिसार के दो नवयुवक प० कृष्णकुमार जी तथा पं० नित्यानन्द जी कुसग में बैठकर बेहद शराब पीने लग गए। कई महीनो से सभा उपदेशक क्रान्तिकारी इनको समझा रहे थे कि आप ब्राह्मण हो शराब पीना ब्राह्मणो का कर्म नहीं है। साथ मे उनको सर्वहितकारी पत्रिका तथा अपने जीवन एवं कार्यों पर आधारित स्मारिकों संघर्षों से जूझता जीवन पढ़ने को दी। उनकी प्रेरणा एवं स्वाध्याय से पं० नित्यानन्द जी ने ५ महीनों से तथा पं० कृष्णकुमार ने एक महीने से शराब पीनी छोड़ दी है। दिनांक २६-११-९२ को प्रातः ७ बजे नलवा बस अड्डे पर दोनो नवयुवकों ने क्रांतिकारी से कहा कि अब हमने आपकी बात मान ली है। शराब बिल्कुल छोड़कर शुद्ध ब्राह्मण हो गए है। हमने आपके संघर्षों की पुस्तक बड़ी श्रद्धा से पढा है। पत्रिका में शराब सब पापों की जड़ है। शराब मनुष्य का हर प्रकार नाश करती है। हम अच्छे सुझावों के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। अतः यह कटु सत्य है सत्संग से मनुष्य बनते हैं और कुसंग से मनुष्य बिगड़ते हैं। मैंने भी चार वर्ष पहले क्रान्तिकारी जी की प्रेरणा एवं सुझावों पर ही शराब व धूम्रपान की लत छोड़ी थी। आज मैं हर प्रकार से सुखी हूं। अन्यथा मेरी सेहत खराब हो चुकी थी। कृषि का कार्य करता तो दम चढ़ जाता था। अब सब बीमारी दूर हो गई हैं।

—भलेराम आर्य ढाणी निवासी नलवा (हिसार)

# स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर १९९२ को मनाया जा रा है। आर्यसमाजें अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार बलिदान दिवस को शराबबन्दी सम्मेलन के रूप में निम्नलिखित तिथियों में मना रही हैं।

| | |
|---|---|
| आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द | २३ दिसम्बर |
| आर्यसमाज पुण्डरी जिला कैथल | २२ से २४ दिसम्बर |
| आर्यसमाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़ | २० से २७ दिसम्बर |
| आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव | २६ दिसम्बर |
| स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय पलवल | २७ दिसम्बर |

इन सम्मेलनों पर सभा के अधिकारी, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा अन्य आर्यनेता पधारेंगे।

# महाशय ज्ञानचन्द आर्य दिवंगत

आर्यसमाज भापड़ोदा जि० रोहतक के कर्मठ नेता महाशय ज्ञानचन्द जी आर्य २२ नवम्बर ९२ को दिवंगत हो गये। उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी। इन्होंने आर्यसमाज की आयु भर सेवा की तथा आर्यसमाज के आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। आपने अपने ग्राम में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन करवाया था।

३-१२-९२ को उनके ग्राम में शान्ति यज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन किया गया। केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमारे स्वतन्त्रता संग्राम में गीता के महान् उपदेश की छाप है। बाल गंगाधर तिलक ने मांडले जेल में बैठकर गीता रहस्य नामक ग्रन्थ की रचना की थी। आपने कहा था गीता सारे धार्मिक ग्रन्थों में एक चमत्कार और बहुमूल्य हीरा दिखाई देता है।

महान् देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने कहा था "राष्ट्रीय जीवन की गाड़ी गीता की अमर ज्योति से चलती रही है" राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लिखा है यदि कभी स्वतन्त्रता संग्राम और सत्याग्रह में मेरा मन डांवाडोल नहीं हुआ तो यह सब गीता मां का चमत्कार है। भारतीय संस्कृति का महल गीता के अनमोल उपदेशों पर खड़ा है। कर्म के सिद्धान्त पर इससे अच्छा और प्रभावशाली ग्रन्थ आज तक नही लिखा गया है। आज संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं में यह महान् ग्रन्थ लिखा जा चुका है।

गीता जयन्ती के शुभ अवसर पर हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि इस महान् उपदेश के प्रकाश में हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ते चलें।

गीता भूमि कुरुक्षेत्र में २५ नवम्बर सन् १९९२ से ५ दिसम्बर सन् १९९२ तक गीता जयन्ती के उपलक्ष में श्री जयराम विद्यापीठ के संचालक ब्रह्मचारी देवेन्द्रस्वरूप तथा कुरुक्षेत्र विकासबोर्ड के चेयरमैन श्री धनिकलाल मंडल जो हरयाणा के राज्यपाल भी हैं मिलकर ऊंचे स्तर पर बड़ा धूमधाम से यह समारोह मना रहे हैं। इसी उपलक्ष में संसार विख्यात श्री रमेश ओझा यहाँ एक बड़े पंडाल में भागवत कथा और गीता कथा करने आ रहे हैं। यहां एक बड़ा जलूस भी निकाला जाएगा और सामूहिक विवाह का आयोजन किया जा रहा है।

## बहादुरगढ़ में ध्यान योग शिविर एवं योग सम्मेलन

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आत्मशुद्धि आश्रम में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी 'सरस्वती' अध्यक्ष योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार की अध्यक्षता में २० दिसम्बर से २७ दिसम्बर १९९२ तक "ध्यान योग शिविर" का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें माताएं भी भाग ले सकती हैं। शिविर मध्ये यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण महर्षि पतञ्जलि के आधार पर दिया जायेगा।

अतः योगिक क्षेत्र के पथिकों के लिये सुअवसर प्राप्त है। ऋतु अनुसार बिस्तर, साधना में बैठने के लिए गद्दी, लेखनार्थ कापी-पैन आदि साथ लेकर २० दिसम्बर सायं ३ बजे इष्टमित्रों सहित पधारें। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

फोन : ८-३१०१९५ स्वामी धर्ममुनि मुख्याधिष्ठाता

## आर्यसमाज नारायणगढ़ का वार्षिक उत्सव

दिनांक २० से २२ नवम्बर ९२ तक आर्यसमाज नारायणगढ़ जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् प्रो० रतनसिंह जी तथा प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु के वेदोपदेश तथा श्री बेमोल, पं० चिरंजीलाल तथा पं० शेरसिंह जी के भजन हुए। दिनांक २१ नवम्बर को नशाबन्दी सम्मेलन भी हुआ। जिसका समाचार २८ नवम्बर के अंक में प्रकाशित हो चुका है। रामनिरंजन मन्त्री

## गोशाला लेघां जीतनवास का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री हरद्वारीमल हेतमपुरिया, मन्त्री—श्री कृष्णकुमार आर्य (लेघां), कोषाध्यक्ष—श्री दीपचन्द लेघां।

## आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के तत्वाधान में वेदप्रचार की धूम

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के तत्वाधान में मेवात क्षेत्र के तेतालीस स्थानों पर वेदप्रचार कार्यक्रम की धूम सकुशल सम्पन्न हुई। मेवात क्षेत्र में प्रतिदिन हजारों की सख्या में गौवध हो रहा है तथा अपहरण एवं धर्म परिवर्तन की बाढ़ आ रही है। इतना ही नहीं बंगलादेशीय घुसपैठिए भी सैकड़ों की संख्या में मेवात क्षेत्र के कस्बों में सरेआम सीना ताने घूमते देखे जा सकते हैं। बार-बार प्रशासन को इस विषय में चेताया जा चुका है परन्तु मेव मन्त्रियों के सरक्षण के कारण इन घुसपैठियों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा है। इतना ही नहीं इन घुसपैठियों ने राशनकार्ड भी बनवाने शुरू कर दिए हैं तथा वोटर लिस्ट में नाम दर्ज कराकर स्थायी नागरिक बनने की भरपूर पेशकस जारी है। मेवात के अल्पसंख्यकों का अस्तित्व दिन प्रतिदिन संकटमय होता जा रहा है।

इन सभी समस्याओं को मुद्दा बनाकर आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में १२ सुयोग्य प्रचारकों द्वारा धुआंधार प्रचार कराया था जो बहुत ही सफल रहा। प्रचार कार्यक्रम लगभग दो मास तक निरन्तर चलता रहा। ग्रामीण हिन्दू जनमानस में इस बार नई चेतना जागी है। तथा इस प्रकार का निरन्तर प्रचार कराने की मांग की जा रही है।

## आर्यसमाज लुलोढ का चुनाव

प्रधान—श्री शुभराम, उपप्रधान—श्री रामसरूप, मन्त्री—श्री यज्ञदेव शास्त्री, उपमन्त्री—श्री ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—श्री प्रभुदयाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल, लेखानिरीक्षक—श्री हरीसिंह।

## यह कोई ज़िन्दगी है ?

(नाज़ सोनीपती)

जिसे जोमे-खुदी है।
वह कैसा आदमी है ?
यह रहमत मौत की है।
हयाते-नौ मिली है ॥
यह कोई ज़िन्दगी है ?
जो बुत बनकर खड़ी है।
यह कैसी ज़िन्दगी है ?
अमानत मौत की है ॥
न घर में रौशनी है।
न बाहर चाँदनी है ॥
अन्धेरों का है गलबा।
गली, सूनी पड़ी है ॥
चमन में दर हक़ीकत।
बहारों की कमी है ॥
न गुन्चा मुस्कराया।
न दिल पर ताज़गी है।
उठाकर 'नाज़' उसके।
यह मैंने भूल की है ॥

(पृष्ठ २ का शेष)

बनाते समय उन्हें आचार्य ने उपदेश दिया था कि "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" इस उपदेश का उन्होंने जीवनपर्यन्त निर्वाह किया। दर्शन शास्त्र में विशेष गति रखने के कारण उन्हें दर्शनशास्त्र के अध्यापन काय के लिये अन्य गुरुकुलों में समय-समय पर बुलाया जाता रहा। इनमें प्रमुख हैं गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर तथा गुरुकुल चित्तौड़गढ़।

गुरुकुल कार्यों में अधिक व्यस्त रहने के कारण वे अधिक साहित्य का सृजन तो नहीं कर सके पर समय-समय पर आर्य पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहते थे। उनका स्वाध्याय गहन था। उन्होंने श्री पूज्य स्वामी ओमानन्द जी तथा पण्डित जगदेव जी सिद्धांती के कहने पर श्री ओम्प्रकाश शास्त्री महोपदेशक खतोली जिला मुजफ्फरनगर की पुस्तक "वृक्ष जड़ है" का युक्तियुक्त उत्तर "स्थावर जीव मीमांसा" पुस्तक लिखकर दिया। जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा श्री प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आचार्य एवं कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार ने अपनी सम्मति लिखकर प्रकट की। उनके गहन स्वाध्याय का इसी से पता चलता है कि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में छूटे हुए कुछ प्रसंगों की ओर आर्य विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ जि० सोनीपत हरयाणा से प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश में उन प्रसंगों को स्थान देकर आचार्य जी का सम्मान बढ़ाया।

आचार्य महामुनि जी ने महात्मा भक्त फूलसिंह जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर गुरुकुल की सेवा करने का व्रत लिया था। उसका उन्होंने अक्षरशः पालन किया। वे हमेशा अपने हाथ से चक्की द्वारा पीसा गया आटा ही प्रयोग में लाते थे। हाथ से बने शुद्ध खादी के वस्त्र पहनते थे। किसी वस्तु की स्पृहा उन्हें नहीं थी। किसी भी छात्र की किसी प्रकार की सेवा आदि ग्रहण न करके अपना कार्य स्वयं करते थे। उन्हें अन्त काल तक अपनी कुल-भूमि की चिन्ता रही। घर का जरा भी मोह उन्हें नहीं था। अपने पूज्य पिता श्री जुगलाल जी के आदेशानुसार उन्होंने अपने भाइयों के सुपुत्रों एवं पुत्रियों को शिक्षा दिलाई। इसी कारण आज उनका सारा परिवार पूर्ण शिक्षित है। उस परिवार का समाज में आदर है। यह सब आचार्य महामुनि जी की तपस्या का ही सुफल है।

उनके सब से बड़े भतीजे श्री प्रो० इन्द्रदेव जी शास्त्री छोटूराम किसान कालेज जीन्द में प्राध्यापक पद पर कार्य कर रहे हैं। उनका समाज मे अपना विशिष्ट सम्मान है। एक भतीजा श्री प्रतापसिंह वकील है उसकी समाज में प्रतिष्ठा है।

इस प्रकार से हम देख सकते हैं कि श्री आचार्य महामुनि जी ने गृह मोह से निर्लिप्त रहकर भी अपने परिवार को समुन्नति के शिखर पर चढ़ाया। गुरुकुल में प्रवेश लेने के बाद उनका गुरुकुल ही सब कुछ था।

अन्त में कालिदास की इस उक्ति के अनुसार जो उन्होंने इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रियों का वर्णन करते हुए रघुवंश में दी है। "वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्" के अनुसार २१ दिसम्बर १९९१ दिन के १० बजे उन्होंने इस नश्वर देह का त्याग किया।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

श्रीकृष्ण द्वारा कहे गये गीता के इस वचन के अनुसार वे अन्त काल तक कर्म करने में ही विश्वास रखते रहे। फल की आकांक्षा उन्होंने कभी नहीं की। अतएव ऐसे कर्मयोगी महामनीषी विद्वान् को शतशत प्रणाम। गुरुकुल भैसवाल उनका चिरऋणी रहेगा। ❀

# भारतीय जीवन दृष्टि क्या है ?

(डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार पलवल, हरयाणा)

आजकल एक बात प्राय: कही जाती है कि वर्तमान युग संघर्ष का युग है। राष्ट्र-राष्ट्रों के मध्य, जातियां जातियों के मध्य व वर्गों के मध्य में संघर्ष जारी है। इतना ही नहीं भाई-भाइयों और पति-पत्नी के मध्य भी संघर्ष चल रहा है। इससे भी आगे बढ़कर आज तो व्यक्ति के अपने अन्तर्मन में भी द्वन्द्व जारी है। चारों ओर विघटन और टूट-फूट है। कोई भी राष्ट्र या परिवार संघर्ष के इस रोग से अछूता नहीं है। आखिर इतने बड़े विश्वव्यापी बिखराव और तनाव का कारण क्या है ? यह हमको जानना ही होगा।

हमारे अनुसार इसका सबसे पहला कारण युग का बदलाव है। युग परिवर्तन से युगबोध बदला है और उसके बदलने से जीवन-मूल्य या जीवन दृष्टि बदली है। आज हम मूल्यों के चौराहे पर खड़े हैं। न तो हम अभी तक पुरातन जीवन-मूल्यों को छोड़ ही सके हैं और न नवीन मूल्यों को पूर्णतया आत्मसात् ही कर सके हैं। ऐसी स्थिति में एक प्रकार का सांस्कृतिक संकट उपस्थित हो गया है। नूतन और पुरातन का यह दृष्टिगत संघर्ष ही आज के हमारे संघर्ष का मूल कारण है। यहां पर सनातन मूल्यों से तात्पर्य भारतीय जीवन-दृष्टि से है और नूतन से आशय पाश्चात्य-दृष्टि का है। इसमें से हम अभी एक भी दृष्टि को न तो पूर्णतया स्वीकार कर सके हैं और न ही पूर्णतया नकार सके हैं। ये दोनों जीवन दृष्टियां दो विरोधी दिशाओं में जाने वाली सरल रेखाओं की भांति हैं। इनके अन्तर को समझ लेने से हमारी बात स्पष्ट हो सकती है।

भारतीय या वैदिक सनातन दृष्टि जीवन-प्रवाह को चिरंतन और अखण्ड मानती है। जबकि आधुनिकतावादी पाश्चात्य दृष्टि जीवन को क्षणों में जीने की अभिलाषा है। इसी प्रकार से भारतीय जीवन-दृष्टि मानव जीवन का मूलोद्देश्य आनन्द या मुक्ति मानती है, जबकि पाश्चात्य दृष्टि जीवन का उद्देश्य केवल शारीरिक सुख तक सीमित करती है। भारतीय जीवन-दृष्टि विकास के लिए सहयोग को अनिवार्य मानती है। वह प्रत्येक वस्तु अथवा व्यक्ति को एक दूसरे का विरोधी न मानकर उसका पूरक ही स्वीकार करती है। उन्हें ज्ञान के दो दिशाओं के ध्रुव मानकर उसके विकास में सहायक मानती है। लेकिन पाश्चात्य दृष्टि व्यक्ति-व्यक्ति, वर्ग-वर्ग, जाति-जाति, राष्ट्र-राष्ट्र, पदार्थ और पदार्थ, विचार और विचार तथा व्यवस्था-व्यवस्था के मध्य संघर्ष को जरूरी मानती है। उसके यहां तो विकासवादी सिद्धान्त की प्रक्रिया ही वाद-विवाद और संवाद की है। वहां सहयोग के लिए गुंजाइश नहीं, वहां तो केवल सतत संघर्ष की प्रेरणा है। और तो क्या धर्म के विषय में भी उसका यही चिन्तन है। भारतीय जीवन-दृष्टि यह मानती है कि हमने जो भी कुछ पाया है, वह प्रकृति और परमात्मा के उपहार के रूप में पाया है। अत: हमें उसका धन्यवादी होना चाहिए। इस विषय में विकासवादी और मार्क्सवादी अथवा आधुनिकतावादियों का यह कथन है कि मनुष्य ने जो कुछ पाया है, वह केवल और केवल उसके संघर्ष का ही प्रतिफल है। कोई ईश्वर या खुदा जैसी वस्तु नहीं है। जो कुछ है सो मनुष्य है। बल्कि उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि "खुदा ने इन्सान को नहीं बनाया बल्कि आदमी ने ही खुदा को अपनी कल्पना द्वारा बनाया है।" ऐसी स्थिति में ऐसे लोग आत्मा-परमात्मा की बात कैसे करेंगे या मानेंगे। कैसे उस पर भरोसा करेंगे ? कैसे जीवन में सन्तोष और अपरिग्रह के नियमों का पालन करेंगे।

एक और बात। भारतीय जीवन दृष्टि मूलत: निवृत्तिवादी अथवा त्यागवादी रही है। उसने त्यागपूर्वक भोग को उचित माना है। जबकि पाश्चात्य दृष्टि में त्याग या संयम के लिए कहीं पर कोई स्थान ही नहीं है। वहां पर तो उन्मुक्त उपयोगितावाद या उपभोक्तावाद है। यहां पर प्रत्येक वस्तु का भौतिक प्रयोजन है। अतएव सब कुछ संसाधन है और तो क्या स्त्री और पुरुष भी संसाधनमात्र हैं। ऐसी स्थिति में नियम संयम और सदाचार का क्या मूल्य हो सकता है ? जब जीवन का एकमात्र चरम लक्ष्य भोगवाद रह गया हो तो फिर समाज में बलात्कार और अपहरण तथा हिंसाचार ही होगा। संयम और सदाचार कैसे होंगे ?

भारतीय जीवन दृष्टि ने प्रवृत्ति का सर्वथा विरोध नहीं किया है। बल्कि प्रवृत्ति और निवृत्ति का समुचित विधान किया है। मानव जीवन के चार परम पुरुषार्थ, धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष निर्धारित किये। इनमें से बीच के प्रवृत्तिपरक हैं जबकि आदि और अन्तिम निवृत्ति-मूलक हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे यहां जीवन में भोग और योग (त्याग) का समुचित सामंजस्य रहा है। जबकि पश्चिम में उन्मुक्त उपभोगवाद है। हमारी दृष्टि यह रही कि निरन्तर भोग करने से हमारी कामनायें तृप्त नहीं होतीं बल्कि अभिलाषाएं और ज्यादा उमड़ती हैं। जैसा कि मनु महाराज ने कहा कि—

"न जातु कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।"

अर्थात् जिस प्रकार से यज्ञाग्नि में घी की आहुतियां डालने से वह और भी प्रचण्ड हो जाती है उसी प्रकार से कामनाओं की निरन्तर पूर्ति से वे घटती नहीं बल्कि और भी बढ़ती हैं। यह हम व्यवहार में भी देख सकते हैं। जिसके पास साइकल है वह स्कूटर मोटर साइकल पर चढ़ने की बात सोचता है। जिसपर ये हैं वह कार की बात सोचता है। कार वाला वायुयान की बात सोचता है। इसी प्रकार से जिसके पास हजार रुपये हैं वह लाखों की इच्छा करता है। लाख वाला अरबपति और खरबपति बनने का स्वप्न देखता रहता है। कहने का तात्पर्य यही है कि कामनाओं का कहीं अन्त ही नहीं है। तभी तो हमारे उपनिषत्कार ने कहा कि—न हि वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य:। कबीर जी ने भी कहा—

तन की भूख तनक है आध पाव या सेर।
मन की भूख अनन्त है भक्ष जाय सुमेर॥

इसी भोगवादी जीवनदृष्टि के कारण जीवन में उद्दाम भोग लालसा जगी है। सुख-सामग्री के संचय की अंधी होड़ लग गई है। जब एक ही वस्तु के अनेक ग्राहक हों तो वहां संघर्ष तो होगा ही। त्याग और समर्पण अथवा सेवा और सहकार आज बीते युग की बातें हो गई हैं। सब स्वार्थी हो चले हैं। जहां भी स्वार्थ टकराता है तो संघर्ष हो जाता है। वह परिवार क्षेत्र हो या समाज क्षेत्र। आय के साधन स्रोत सीमित हैं लेकिन आवश्यकताएं असीमित हैं। ऐसी स्थिति में समाज में खिचाव और तनाव तथा आपा-धापी है।

बल्कि पति पत्नी के मध्य से स्नेह-सहकार की भावना समाप्त हो गई। आज की पत्नी पहली जैसी समर्पित भारतीय नारी नहीं है। आज वह प्यार की तुलना में अधिकार को अधिक महत्त्व देती है। सन्तान भी आज माता-पिता के उपकार को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। वह अपने को मिलनेवाली सुविधाओं को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती है। जिस समाज के अन्दर सारे मानवीय मूल्य स्वार्थ की सूली से टांग दिये गये हों उस समाज को जीवित जाग्रत समाज नहीं कहा जा सकता। ऐसे समाज को तो मृत समाज ही कहा जा सकता है।

जिस समाज ने अपने चिरंतन मूल्यों को तिलांजलि देकर संघर्ष मूलक पाश्चात्य संस्कृति के मूल्य अपना लिये हों, वह समाज तो आत्मघाती समाज है। आज पश्चिम में रुपया है, पैसा है। सुख-सामग्री है, सब कुछ है लेकिन शान्ति नहीं है क्योंकि वहां की जीवन-दृष्टि संघर्षमूलक है। हमारे यहां पर पहले चाहे इतने सुख साधन नहीं थे क्योंकि हमारी दृष्टि सहयोग मूलक थी। यहां पर जाति-जाति में सहयोग, व्यक्ति-व्यक्ति में सहयोग तथा पति-पत्नी में सहयोग था। आज सहयोग के स्थान पर उन्मुक्त भोग आ गया है। परमार्थ के स्थान पर नग्न स्वार्थ नाच रहा है। समर्पण और सेवा तथा [illegible] के स्थान पर अवसरवाद का बोलबाला है। जहां पर जीवन-दृष्टि इतनी विघातक हो चुकी है, ऐसे समाज में सुख-शान्ति अथवा समरसता की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# स्मैक का मतलब मौत

स्मैक, हैरोइन, ब्राउन शुगर या पुड़िया इन सबका एक ही मतलब है। बर्बादी और मौत। बर्बादी अपने शरीर, अपने भविष्य की, अपने परिवार की अपने समाज की और अपने देश की। स्मैक की पुड़िया आपकी बर्बादी के सिवा कुछ नहीं है।

**जो स्मैक दे वह दोस्त नहीं दुश्मन है**

जो तुम्हें इस पुड़िया को लेने के लिए कहता है वह तुम्हारा दोस्त नहीं है। वह तुम्हारा दुश्मन है। वह तुम्हारे परिवार, समाज और तुम्हारे देश का दुश्मन है। स्मैक या हैरोइन किसी भी रूप में कभी न लें। यह जानने के लिए भी कि उसका प्रभाव क्या होता है। इसका एक ही अन्त है मौत। इसका एक ही मतलब है बर्बादी।

**स्मैक क्या है ?**

स्मैक और हैरोइन, अफीम से बनती है। यह पदार्थ अफीम से कई गुना अधिक खतरनाक है। इसके जाल में फंस जाने के बाद उससे निकल पाना बहुत मुश्किल है। ये जहरीले पदार्थ आपका दिमाग खराब कर देंगे। इनके इस्तेमाल से आपका शरीर बर्बाद होगा। आपका पेट और आंतें खराब हो जाएंगी। ये पदार्थ आपको नपुसक बना देंगे। आपको नौकरी, कामकाज, परिवार, समाज सबसे अलग कर देंगे।

**यह एक बहुत मंहगा नशा है**

यह नशा बहुत मंहगा है। यह धनवानों को भी कंगाल बना देता है। इसके लिये चोरी करनी पड़ सकती है, पहले घर में फिर बाहर। तथा इस नशे को खरीदने के लिये नशा बेचना पड़ेगा। यदि इस नशे ने एक घर बर्बाद कर दिया तो अब आप खुद दूसरों के कितने घर बर्बाद करने के लिए मजबूर होंगे।

**इस नशे के जाल में न फंसे**

नशा बेचना या चोरी करते समय पकड़े जाने पर जेल होगी। स्मैक, हैरोइन आदि का धन्धा करने पर पकड़े जाने पर कम से कम दस साल तक की सजा और एक लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। दुबारा या उसके बाद पकड़े जाने पर यह सजा तीस साल की और तीन लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।

**यह नशा मकड़ी का जाल है**

जेल काटकर निकलने के बाद नौकरी कौन देगा। किस घर में चले जायेंगे। कौन अपनाएगा। इसलिये फिर नशा बेचने वालों के जाल में फंसना पड़ेगा। तड़पकर भी इससे नहीं निकला जा सकता। अन्त में कीड़े-मकौडों की तरह इसी जाल में फंसे रहना होगा और इससे केवल मौत ही छुटकारा दिला सकेगी।

**नशे के व्यापारी देश के दुश्मन हैं**

आप जानना चाहेंगे कि इन नशीले पदार्थों को कौन देश में ला रहा है। ये वे लोग हैं जो देश के दुश्मन हैं। ये वे लोग हैं जो देश को बर्बाद करना चाहते हैं। ये देश की युवा पीढ़ी को बर्बाद देखना चाहते हैं। ये ही वे लोग हैं जो तस्करी करके विदेशी हथियार देश में ला रहे हैं। इन्हीं हथियारों के लिये पैसा स्मैक, हैरोइन जैसे खतरनाक नशीले पदार्थों को बेचकर इकट्ठा किया जा रहा है। इन पदार्थों से एक ओर पीढ़ी की पीढ़ी, परिवारों के परिवार बर्बाद हो रहे हैं वहीं इस पैसे से लाए गए हथियारों से सैकड़ों बेगुनाहों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। इन्हीं हथियारों से हमारे पूजा घरों को अपवित्र किया जा रहा है। इन हथियारों का उपयोग भाई-भाई में फूट डालना, देश में साम्प्रदायिकता का नंगा नाच करने के लिए किया जा रहा है। इसका एक ही मकसद है देश के टुकड़े कर देना।

**सावधान**

क्या आप चाहते हैं कि आपका शरीर, आपका परिवार, आपका समाज, आपका देश बर्बाद हो। नहीं, नहीं कभी नहीं तो बस स्मैक ब्राउन शुगर या हैरोइन के लिए एक ही जवाब है नहीं कभी नहीं।

**आप क्या कर सकते हैं**

यदि कोई स्मैक बेचता मिले तो पुलिस के हवाले कर। यदि कोई इन जहरीले पदार्थों के चंगुल में फंस गया है तो उसे बचाने में मदद करे। इन पदार्थों का नशा करने वाले मरीज हैं। उन्हें घृणा नहीं आपकी मदद, आपके प्यार और आपकी सहानुभूति की जरूरत है। इन मरीजों का इलाज कराएं। इन्हें मनोचिकित्सक के पास ले जाये। यदि कोई इन पदार्थों के चगुल से निकल पाया है तो उसे काम दे। उस पर एक बार विश्वास करके तो देखें हो सकता है वह सुधरना चाहता हो, जो इस पीड़ा से मुक्त चुके हैं। उन्हें अपने भाइयों की ओर भी मदद करनी चाहिये। जिसके बच्चे इस जाल में फंस गये हैं उसपर पर्दा न डालकर उसका इलाज कराएं। ❀

# आर्यसमाज श्रद्धानन्दनगर पलवल का वार्षिक चुनाव

संरक्षक चौ० हरदेव जी श्री लालचन्द सचदेवा, प्रधान श्री अजीतकुमार आर्य, उपप्रधान श्री प्रभुदयाल सचदेवा, मंत्री श्री सत्यपाल आर्य, उपमंत्री श्री हरीशचन्द्र सरदाना, प्रचारमंत्री श्री लेखराज आर्य, कोषाध्यक्ष मा० मदनलाल जी, लेखानिरीक्षक श्री धर्मचन्द सचदेवा, पुस्तकाध्यक्ष श्री गोपालदास गांधी, अधिष्ठाता आर्यवीर दल, श्री नरेन्द्रकुमार आर्य, संरक्षक कुमार सभा : श्री रणजीतकुमार नागीया, प्रबन्धक विद्यालय श्री सुन्दरदास गांधी, भण्डारी श्री चांदनराम सरदाना।

(पृष्ठ १ का शेष)

संख्या बढ़ेगी और पूर्ण स्वार्थ पर आश्रित ऊँच, नीच, प्रान्तीयता और भाषावाद का भेद समाप्त होगा, मन्त्र का पूर्वार्ध इसी भावना का द्योतक है।

मन्त्र के उत्तरार्ध में बताया गया है कि इस राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को जाति और धर्म की भावना से रहित यह माता नाना प्रकार की औषधियों, फलों, फूलों, वनस्पतियों से सबको समान रूप से संरक्षित करेगी। भ्रातृत्व एवं बन्धुत्व की भावना से रहने वाले, नाना प्रकार के फल फूलों को खाने वाले, अनेक प्रकार के अन्नों का समान रूप से सेवन करने वाले सुपुष्ट, ज्ञानी, यशस्वी वीर भारत की कीर्तिपताका देश-देशान्तरों में फैलायेंगे और इस कीर्ति का श्रेय अपनी मातृभूमि को प्रदान करेंगे। यह कीर्ति ही सुनकर देवता भी हमारी मातृभूमि के दर्शन की कामना करेंगे।

गायन्ति देवा: किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

और मानव धर्मशास्त्रप्रणेता मनु के शब्दों में हम यह कहेंगे—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशदग्रजन्मन: ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ।

एक कवि के शब्दों में हम कहेंगे—

जो ऊंची नीची निर्जन है, लम्बी चौड़ी महद् विशाल।
ओषधियों की पालक पोषक, वही हमारो हो प्रतिपाल ।।

(पृष्ठ ७ का शेष)

सार्थक कल्पना नहीं की जा सकती। यदि इस समाज को सुख का सागर बनाना है तो इसमें स्नेह और सहकार के मोती उगाने पड़ेंगे। वेदों के संगठन सूत्र का सिंहावलोकन करना पड़ेगा और उसका आचरण करना पड़ेगा। जिसमें सभी मनुष्यों को परस्पर में भाइयों की तरह से रहने का उपदेश दिया गया है। पति-पत्नी में मधुर संलाप को बात कही गयी है। भाई-बहन में स्नेह-सूत्र के बन्धन का विधान है। महाभारत को मानवीय दृष्टि, आत्मन: प्रतिकूलं परेषां न समाचरेत्। हमारे आज के सामाजिक या पारस्परिक संघर्षों को शांत करने वाली सुधा सिद्ध हो सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३   सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०   अंक ४   १४ दिसम्बर, १९९२   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

## देवालय—महर्षि दयानन्द की दृष्टि में

(यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद—२४४०३२)

साधारणतया देवालय का अर्थ उन देवमन्दिरों से लिया जाता है, जहां किसी तथाकथित देवता की मूर्ति स्थापित कर उसका पूजन किया जाता हो। किन्तु यह इसका रूढ़ अर्थ है, मूल अर्थ नहीं। देव चेतन भी हैं और जड़ भी। किन्तु पूजा केवल चेतन देवों की ही होती है, जड़ की नहीं। यह इसलिये कि पूजा का अर्थ सत्कार है और सत्कार केवल चेतन का ही हो सकता है, जड़ का नहीं। महर्षि दयानन्द की ऐसी ही मान्यता है। पूना के अपने सातवें प्रवचन में स्पष्ट रूप से उद्घोषित करते हैं कि—"चेतन पदार्थों ही का केवल सत्कार सम्भावित है, जड़ पदार्थों का अर्थात् मूर्तियों का सत्कार नहीं सम्भव होता।"

यज्ञ का एक अर्थ देवपूजा भी है। देवपूजा से क्या तात्पर्य है, यह विचारणीय है। इस सम्बन्ध में महर्षि ने जो विचार किये हैं, वह उल्लेखनीय हैं। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में 'देव' का अर्थ विद्वान् करते हुए महर्षि आगे लिखते हैं कि—"उन्हीं विद्वानों, माता, पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना देवपूजा कहाती है। इससे विपरीत अदेवपूजा।" पूना के यज्ञ और संस्कार विषयक सातवें प्रवचन में महर्षि इस सम्बन्ध में निम्न विचार व्यक्त करते हैं—"अब प्रथम देवपूजा के विषय में विचार कर। केवल देव का मूल अर्थ द्योतक अर्थात् प्रकाशस्वरूप है, और वेदमन्त्रों की भी देव संज्ञा है, क्योंकि उनके कारण विद्याओं का द्योतन अर्थात् प्रकाश होता है। ··· देव शब्द का अर्थ परमात्मा भी है, क्योंकि उसने वेद का अर्थात् ज्ञान का और सूर्यादि जड़ों का प्रकाश किया है। देव अर्थात् विद्वान् ऐसा भी अर्थ होता है, क्योंकि शतपथ ब्राह्मण नामक ग्रन्थ में 'विद्वांसो हि देवाः' ऐसा वर्णन किया है।"

पूजा का अर्थ सत्कार है। इस प्रकार—"देव की पूजा कहने से परमात्मा का सत्कार करना, यह अर्थ होता है।" (वही) यह हम पूर्व ही लिख आये हैं कि सत्कार केवल चेतन का ही होता है, जड़ का नहीं। अब ईश्वर का सत्कार कैसे होता है, इस विषय में महर्षि के विचार देख। वे अपने इसी प्रवचन में आगे कहते हैं कि—"मुख्य तत्त्व से वेदमन्त्र के पठन से ईश्वर का सत्कार होता है, इसलिये प्राचीन आर्य लोगों ने होम के स्थल में मन्त्रों की योजना की है।" इसी आधार पर महर्षि ने "यज्ञशाला को देवायतन अथवा देवालय कहा है।" (वही) महर्षि मनु का निम्न श्लोक उद्धृत करके लिखते हैं कि—"स्वाध्यायेनार्च्चयेतर्षीन् होमैर्देवान्यथाविधि।"

**इस कथन से अर्वाचीन देवालय अर्थात् मन्दिरों को कोई न समझे देवालय का अर्थ तो यज्ञशाला ही है। (वही)**

चेतन देवताओं की पूजा सत्कार से होती है और जड़ देवों की पूजा पुष्टि, शोधन और वर्धन से होनी है। देव-यज्ञ से ये दोनों कार्य साध जाते हैं। वेदमन्त्रों के पाठ में ईश्वर का सत्कार और ब्रह्मा, होता आदि विभिन्न यज्ञ के लिये आवश्यक पदों पर विद्वानों की नियुक्ति एवं दक्षिणा आदि से उनका सत्कार किया जाता है। यज्ञ में घृतादि हव्य पदार्थों की आहुति देने से जड़ देवों की पुष्टि, वर्धन तथा शोधन होने से वह भी देवपूजा ही है। अग्नि को देवों का मुख कहा गया है। अग्नि में डाला यज्ञीय पदार्थ वैसे ही समस्त देवों को पहुँचता है, जैसे हम अपने मुख में कोई खाद्य पदार्थ डालते हैं तो वह शरीर के समस्त अंगों को पहुंच जाता है।

पौराणिक लोग ऐसा माने बैठे हैं कि देवलोक से देवगण हमारे यज्ञ की हवि लेने यज्ञशाला में आते हैं। महर्षि इसे सर्वथा कपोलकल्पित मानते हैं। उनका कथन है कि—"कोई-कोई कहते हैं कि होम अर्थात् देवतोद्देश त्याग है। देवता लोग यजनदेश में आकर सुगन्ध लेते हैं, इसलिए होम करना चाहिये, तो यह कहना अप्रशस्त है। क्या देवलोक में कुछ सुगन्धि की न्यूनता है जो वे हमारे क्षुद्र हविर्द्रव्य की अपेक्षा करते हैं?" इसी तरह कोई-कोई कहते हैं कि श्राद्ध आदिकों में पितृ लोग आते हैं और यदि उन्हें श्राद्धान्न और तर्पण का जल न मिले तो वे तृषार्त्त रहते हैं? तो क्या वे प्यासे रहकर भूखों मरेंगे? और पितृलोक में सब दरिद्रता ही दरिद्रता है? सारांश यह कि सब समझ और विचार ठीक नहीं है। क्योंकि देव-लोक में वा पितृ-लोक में कुछ न्यूनता नहीं है। होम हवन उनके उद्देश्य से कर्त्तव्य नहीं है, किन्तु सुवृष्टि और वायु शुद्धि होम-हवनादि से होती है, इसलिये होम करना चाहिये। क्योंकि सब प्रकार के नैरोग्य और बुद्धि-वैशुद्ध्य को वायु और जल का ही आधार है।" (वही)

हवन से परमेश्वर की सेवा की बात महर्षि ने स्वीकारी है। उनका कथन है कि—"होम-हवन में परमेश्वर की सेवा कैसे होती है, ऐसा यदि कोई कहे तो उसे विचार करना चाहिये कि सेवा का अर्थ प्रिय आचरण है। परमेश्वर की सेवा अर्थात् उसको जो प्रिय है, वह आचरण करने से वह न्यायकारी होने के कारण उसके द्वारा योग्य प्रत्युपकार होता है, ऐसा एक नियम ही है। (वही) यज्ञशाला में यज्ञ करते समय वेदमन्त्रों का जो पाठ किया जाता है, इससे जहां ईश्वर का सत्कार होता है, वहां वेद की रक्षा होने से सर्व विद्याओं का पालन करने वाले देव का भी सत्कार होता है।

उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यज्ञ ही वास्तविक देवपूजा है और यज्ञशाला ही वास्तविक देवालय या देवायतन है। कल्पित देवी-देवताओं की मूर्तियों वाले मन्दिर वास्तविक देवालय नहीं। महर्षि का यही मन्तव्य है। ❀

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

प्रतिवर्ष की भांति २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धा से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सर्वहितकारी की ओर से २१ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा।

व्यवस्थापक

# महा विनाशकारी शराब

(मा० दीपचन्द आर्य, कासनी जि० रोहतक)

यह बात सर्वविदित है कि शराब ने राजे महाराजों को ही नहीं, इसने यादव जाति को बर्बाद कर दिया था। यह बताने हेतु मैं अपने विचार नहीं लिख रहा। यह तो ऋषियों, महात्माओं, मुनियों और वैद्य डाक्टरों ने विधिपूर्वक बता दिया है।

यह मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि जिनका विनाश करना हो, उन्हें शराब पीने को आदत डाल दो, वे स्वयं ही नहीं अपने कुल का भविष्य भी चौपट कर जावेंगे। सरकार जो रियायती शराब अपने जवानों और पेंसनरों को दे रही है, इसके पीछे यही भाव है। बड़े अधिकारी इन्हें चिन्तन से दूर रखना चाहते हैं, जिसके बल पर उनकी सुख सुविधा बनी रहे। हो सकता है वे भी शराब का सेवन करते हों, पर यह बुद्धिनाशनी वह नहीं पीते। यदि यह शराब जो ठेकों पर दी जाती है, यह देश के सब ऊंचे पदों पर बैठों को दी जावे सभी मन्त्री तथा सांसद, और सरकार को चलाने वाले राष्ट्रपति, उसके सभी बड़े अधिकारी जो फाइलों से लिपटे रहते हैं, उन्हें प्रातः सायं पिलाई जावे। तब उन्हें पता चलेगा कि यह क्या वीरता देती है, क्या संयम रखना सिखाती है। जब तक वे इसका सेवन नहीं करेंगे, तब तक मैं यह मानता हूं कि वे हमें और हमारे से नित्य सम्पर्क रखनेवाले कर्मचारियों को भुलावे में रख अपना उल्लू सीधा करना चाहते है। इस विधि में देश के पूंजीपति अगुआ हैं। यदि शराब सेवन के बाद उनका एक भी लड़का अच्छी तरह पढ़ जावे तो मैं गारन्टी लेता हूं। वे शीघ्र ही नष्ट हो जावेंगे।

यदि उनकी भावना देश के विकास की होती तो आज छोटे कर्मचारी सहयोग तथा प्यार से काम करते। सरकार विकास के नाम पर कुछ धन फेंकती है, वह भी यह कर्मचारी ही बर्बाद कर देते हैं। जो थोडा बहुत लगता है, वह भी फिर नहीं संभाला जाता। सरकार की बनाई सडकें तथा बांध जो बने हैं, वह बर्बाद हो रहे हैं। सडकों और बांधों पर छोटे अधिकारी मिलकर कब्जा करा देते हैं। इन कामों पर भी शराब ही काम करती है। शराब का सेवन करने वाले ही दूसरों का हक हड़प सकते हैं। पापों की जड़ शराब ही है।

यदि सरकार विकास चाहती तो शिक्षा विभाग में चुने हुए आदर्श अध्यापक अध्यापिका नियुक्त करती। आज तो सभी सरकारी कर्मचारी भोग भोगते हैं। जहां अधिक सुख मिले, वहां अपने आदमियों की नियुक्तियां करते हैं। विधायकों या बड़े अधिकारियों के रिश्तेदार ही सुविधा वाली जगहों पर नियुक्त हैं। उनके कोई भी आदमी देहात तथा जहां पानी तथा अन्य सुविधायें नहीं हैं वहां नहीं मिलेंगे।

बड़े अधिकारियों को जितनी सुविधाएं दी जाती हैं, उनका कोई भी अंश छोटे कर्मचारियों को नहीं दिया जाता। उन्हें तो महीने के अन्त में वेतन के रूप में कुछ पैसे दे दिये जाते हैं, और ठेके की शराब पीने की सुविधा कर दी जाती है। यदि सरकार फौजियों का भला रियायत पर करना चाहती थी, तो उन्हें रियायत पर नित्य आधा किलो गाय का शुद्ध दूध देकर उनके स्वास्थ्य को रक्षा कर सकती थी। बुढ़ापे में तो दूध ही लाभ देता है। शराब तो ढीली मासपेशियों को ढीला कर देती है।

मैं सब ग्रामीण तथा शहरी भाई बहिनों से प्रार्थना करता हूं कि स्वयं विचारें, एक जगह बैठ चिन्तन करें। सरकार का भरोसा छोड़कर अपने पांव पर खड़े हो जाव। अपने परिश्रम की कमाई का न तो स्वयं दुरुपयोग करें न किसी को करने दें। भगवान् उनको ही मदद करते हैं जो आप चेतकर काम करते हैं। अनाज अधिक पैदा कर स्वयं अपना पेट भरने के लिये सरकार ने लोभ देकर चरागाहें तुड़वाई हैं, इससे उन्हें शुद्ध घी दूध गाय का मिलता था। वह इनसे छीन लिया है। आप विचारें, मछली, भेड़-बकरी, सुअर, मुर्गी पालन पर तो अनाप-सनाप ऋण तथा रियायतें देती है, पर गाय जैसे उपयोगी पशु पर एक धेला भी नहीं देती। यह सब उनकी गहरी विनाश की योजना है। मनुष्य जो प्रकृति ने ही शाकाहारी बनाया था, उसे सरकार मांस खिलाना चाहती है। मांस के दुष्परिणाम सभी बुद्धिजीवियों ने बता दिए हैं, फिर भी चेतना नहीं आती। हानिकर पदार्थ खिला-पिलाकर नाश करके अपना मार्ग साफ रखना चाहती है।

मेरी एक प्रार्थना है कि आप इन बडे अधिकारियों और मन्त्रियों को अपने गांव में न आने दें और न उनकी बात सुनें। उन्हें साफ-साफ पंचायत कर चेतावनी भेज दें, कि आप यह दुर्लभ पदार्थ शराब स्वयं सेवन करें, और अपने परिवारों को करावें। इसका जो परिणाम निकले वह बताने के लिए आप गांव-गांव में आवें। जब तक वे स्वयं जांच नहीं करेंगे तब तक सही बात सामने नहीं आवेगी।

## सोनीपत में नशा विरोधी समितियों के गठन का कार्य शुरू

सोनीपत, ३ दिसम्बर (त्यागी), सोनीपत नगर में नशा विरोधी समितियों के गठन का कार्य शुरू कर दिया गया है तथा नशा विरोधी अभियान समिति के जिला प्रधान ओमप्रकाश सरोहा ने वार्ड नं० २७ मे पूर्णसिंह और वार्ड न० २५ व २६ में चतरसिंह गहलावत को नशा विरोधी समिति का प्रधान नियुक्त किया है।

इसी दौरान आज यहां आर्यनगर, रामनगर, प्रभुनगर, गोकलनगर तथा कालूपुर के नागरिकों की एक सभा श्री ओमप्रकाश सरोहा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें सभी लोगों ने नशा विरोधी अभियान में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सरोहा ने कहा कि यदि नशे की प्रवृत्ति पर अविलम्ब रोक न लगाई गई तो युवा पीढ़ी भी पथभ्रष्ट हो जाएगी और समाज की स्थिति अति दयनीय हो जाएगी।

श्री सरोहा ने कहा कि हमें अपने समाज का उत्थान स्वयं ही करना है और अब समय आ गया है कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को समूल नष्ट किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से युवकों से कहा कि वे देश की उन्नति के लिए सामाजिक बुराइयों को दूर करने में योगदान दें। उन्होंने यह भी कहा कि नशे की बढ़ती प्रवृत्ति ने समाज को खोखला करना शुरू कर दिया है और कई परिवार पतन की ओर अग्रसर हैं। (पंजाब केसरी)

## रुकिये !

## नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती है।

## शोक समाचार

● १५ नवम्बर १९९२ को वैसलात के पंच दादा छिदासिंह ग्राम बडौली जि० फरीदाबाद का हृदय गति बन्द होने से ८० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप स्वतन्त्रता सेनानी तथा समाज सेवक थे।

● आर्यसमाज सैक्टर १९ फरीदाबाद के संरक्षक म० राम रिछपाल का २३ नवम्बर ९२ को ८४ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था।

● आर्यसमाज एतमादपुर जि० फरीदाबाद के नेता म० सुखीराम सरपंच १ दिसम्बर १९९२ को दिवंगत हो गए। आप भी स्वतन्त्रता सेनानी थे।

मुरारीलाल बेचैन

सम्पादकीय

# इन तथाकथित स्वामियों [वेशों] का असली चेहरा—जनता इनसे सावधान रहे

इन दिनों समाचारपत्रों में यह बात आ रही है कि स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश व स्वामी आदित्यवेश अपने कुछ समर्थकों के साथ हरयाणा में शराबबन्दी का अभियान चला रहे हैं। स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश अपने आपको क्रमशः भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष व महासचिव बता रहे हैं। तथाकथित इस सभा का स्वामी दयानन्द द्वारा खड़े किये गये आर्यसमाज के ढांचे से कतई कोई सम्बन्ध नहीं है। विभिन्न राज्यों में अपनी-अपनी आर्य प्रतिनिधि सभाये हैं और इन सब के ऊपर है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा। जहां तक हरयाणा की बात है, यहां की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह हैं तथा मन्त्री मैं हूं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती हैं। तो यह भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कहां से आ टपकी? इन स्वामियों द्वारा ऐसी सभा के तथाकथित गठन से आर्यजगत् में भ्रम पैदा करना तथा विभिन्न आर्यसमाज संगठनों एवं संस्थाओं को गुमराह करना है। सबको पता है कि पिछले कई वर्षों से, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शराबबन्दी का अलख जगाया गया है तथा पिछले वर्ष से जन-जागरण द्वारा इस अभियान को खूब तेज कर दिया गया है। यह अभियान अब धीरे-धीरे एक जन-आन्दोलन का रूप लेता जा रहा है। सुनियोजित ढंग से चलाए जा रहे इस आन्दोलन से विचलित होकर, इन तीनों स्वामियों (वेशों) ने भी अपने कुछ साथी बटोर कर हरयाणा में शराबबन्दी कराने का ड्रामा रचा है। ये लोग किसी अनुशासन के कायल नहीं हैं तथा ये नाम लेते हैं स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का, लेकिन काम अपना करते हैं। इन्हें, लोगों को अपनी चालों में फसाने का खूब तजुर्बा है और जनसाधारण की मेहनत और ईमानदारी की कमाई के खेत में खुले चरने का इन्हें मानो चस्का पड़ गया है। लोगों को बहकाकर, आर्यसमाज के नाम का सहारा लेकर- शराबबन्दी के नाम पर, धन इकट्ठा करना इनका एकमात्र ध्येय बन गया है। बटोरे गए इस धन को ठीक तरह से खर्च करने के बारे इन वेशों की जनता के प्रति कोई जवाबदेही नहीं हैं। क्या इन्होंने कभी अपनी आय तथा व्यय का आडिट करवाकर, इसे जनता के सामने रखा? केवल कुछ गाड़ियों का काफिला बनाकर, उनपर ओ३म् के झण्डे तथा शराबबन्दी बेनर लगाकर हरयाणा के एक छोर से चलकर, चण्डीगढ़ पहुंचकर, राज्य में शराबबन्दी लागू करवा देंगे क्या ये भगवां वेशधारी?

चालू वर्ष के दौरान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने अपने अथक प्रयास से सारे राज्य की तीन सौ से अधिक ऐसी ग्राम पंचायतों से, जहाँ इस समय शराब के ठेके हैं, सम्पर्क तथा वहां पर जनसभाएं करके, शराबबन्दी प्रस्ताव पास करवाये तथा इनकी प्रतियां सरकार को भिजवाई। इसी कड़ी में, सभा ने सबसे पहले राज्य के भिवानी जिला में, अपनी पूरी शक्ति लगाकर, उन सब पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाये जहां शराब की दुकानें चल रही हैं। उसके बाद गांधी व शास्त्री जयन्ती के सुअवसर पर गत २ अक्तूबर को भिवानी नगर में कई हजार लोगों ने इकट्ठा होकर, एक विशाल शराबबन्दी जलूस निकाला तथा सरकार को इस आशय का एक ज्ञापन दिया कि जिला भिवानी में अगले वर्ष से पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाये। सभा द्वारा शराबबन्दी के लिये किये जा रहे संघर्ष से प्रभावित होकर अखिल भारतीय नशाबन्द परिषद् के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन गत ७ व ८ नवम्बर ९२ को रोहतक स्थित, सभा के मुख्यालय पर किया गया जिसमें देश के कोने-कोने से सैंकड़ों नशाबन्दी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इन सबने सर्वसम्मति से डा० सुशीला नय्यर जी के स्थान पर, प्रो० शेरसिंह को नया अध्यक्ष बनाया। इस अवसर पर एक विशाल नशाबन्दी सम्मेलन आयोजित कर, हरयाणा सरकार को ज्ञापन देते हुए, मांग की गई कि अगले वर्ष से सारे प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाये। आर्यजगत् के प्रख्यात संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस मौका पर अपील की कि प्रत्येक आर्यसमाज, आर्य संस्था तथा गांव शराबबन्दी कार्यक्रम के लिये कम से कम ११०० रु० की राशि तथा ग्यारह सत्याग्रही दे। इस अपील का व्यपक प्रभाव एवं स्वागत हुआ। परिणामस्वरूप, अनेक गांवों, आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं द्वारा उक्त राशि व सत्याग्रहियों की सूचियां, सभा कार्यालय को भेजी गई हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा ने, राजस्थान तथा दिल्ली की सभाओं से सम्पर्क कर, तीनों सभाओं की ओर से, उच्चतम न्यायालय में संविधान की धारा ४७ अनुसार, जनता के व्यापक हित व कल्याण हेतु, शराब व अन्य मादक पदार्थों के बनाने व इनकी खपत पर रोक लगाने हेतु, एक रिट याचिका दायर की है। इसपर न्यायालय द्वारा सारी राज्यसरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों से अपना-अपना जवाब देने के लिये कहा गया है। सभा द्वारा अब यह प्रयास भी जारी है कि आन्ध्र प्रदेश की तर्ज पर, हरयाणा की महिलाओं को शराबबन्दी आन्दोलन में उतारा जाये ताकि शराबबन्दी की चिंगारी, जंगल की आग की तरह सारे प्रदेश में फैल जाये जिससे लोगों की शराब की गुलामी से मुक्ति हो। जहां तक उपरोक्त तीनों वेशों की बात है, इन्होंने या इनके समर्थकों ने शराबबन्दी के लिये और तो क्या करना था, किसी ग्राम पंचायत से भी, वहां पर चल रही शराब की दुकान को बन्द किये जाने बारे, निर्धारित अवधि भीतर प्रस्ताव पास करवाकर, सरकार को नहीं भिजवाया। इन तथाकथित स्वामियों की रुचि तो शोशेबाजी व नाटक रचकर, सस्ती लोकप्रियता, धन संग्रह करने व आये दिन समाचारपत्रों में अपना नाम देखने तक ही सीमित है। शराबबन्दी जैसे लोककल्याण कार्यक्रम को गम्भीरता से लेने की भला क्या पड़ी है इन लोगों को? इन वेशों के पिछले इतिहास के बारे में सबको जानकारी है। यह भी पता है कि भगवा कपड़ों के सहारे राजनीति में प्रवेश कर, इन्होंने क्या-क्या कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इनके कारनामे, आर्यसमाज के उज्ज्वल ललाट पर एक काला धब्बा है। क्या लोग नहीं जानते कि एमरजैन्सी के दौरान स्वामी इन्द्रवेश व अग्निवेश, सरकार से माफी मांगकर, जेल से बाहर आये। इतना ही काफी है इनके साहस व आध्यात्मिकता का परिचय देने के लिये। स्वामी आदित्यवेश के असली रूप बारे भी सबको खूब पता है। वेशों की इस मण्डली के एक सक्रिय सदस्य हैं महेन्द्रसिंह शास्त्री। ये पहले आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में उपदेशक थे जिन्हें इन द्वारा इकट्ठे किये गये धन आदि का सही लेखा जोखा न बताने के आधार पर तथा अनुशासनहीनता कारण, सभा से निष्कासित किया गया था। इन वेशों के बारे में इतना कहना आवश्यक है कि जनसाधारण को ऐसे स्वयंभू आर्यसमाजियों व बहुरूपियों से सावधान रहना चाहिये। वे इन्हें कोई धन आदि न दे क्योंकि ये लोग इसका दुरुपयोग कर, समाज में आगे और विघटन पैदा करेंगे। भगवा वस्त्रों के लिये लोगों में अभी भी कुछ श्रद्धा बाकी है जिसे अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु ये तीनों वेश भुनाने में लगे हुए है।

*आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी* **अभियान तथा आर्यसमाज की अन्य गतिविधियों के संचालन हेतु दान,** केवल इस सभा के अधिकारियों या इसके कार्यालय को ही दिया जावे। इसकी उचित रसीद सभा द्वारा जारी की जायेगी तथा हर दानी को उन द्वारा दी गई राशि के हिसाब-किताब जानने का भी अधिकार होगा।

सूबेसिंह, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

## पुत्र जन्मदिवस पर वेद प्रचार

दिनांक ७ दिसम्बर ९२ को आर्यसमाज बेरी जि० रोहतक के उप-प्रधान श्री महेन्द्रसिंह ने अपने निवास पर हवन यज्ञ करवाया तथा सभा के भजनोपदेशक श्री जयपालसिंह आर्य का रात्रि को वेदप्रचार करवाया। प्रचार में बढती हुई शराबखोरी, दहेज आदि प्रथा की निन्दा की गई। इस अवसर पर सैंकड़ों नरनारी उपस्थित थे। उनका प्रीतिभोज आदि से सत्कार किया गया। इस अवसर पर सभा को ३१२ रु० वेद प्रचारार्थ दान दिया।

मन्त्री आर्यसमाज

ओ३म्

# हरयाणा में शराबबन्दी लागू करवाने हेतु सत्याग्रह का बिगुल बज गया

## आर्यसमाजों से तैयारी हेतु प्रत्येक गांव से ११०० रुपये तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम भेजने की आर्य नेताओं की अपील

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी रहा है। दहेजप्रथा, जात-पात मिटाने, छुआछात समाप्त कराने बाल विवाह, मूर्ति पूजा बन्द करवाने, स्त्री-शिक्षा, गोरक्षा, हिन्दी रक्षा, स्वतन्त्रताप्राप्ति तथा राष्ट्रीय एकता के लिए बड़े से बड़े बलिदान किये हैं। स्वतन्त्रता दिलाने के आन्दोलन में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सर्वाधिक थे। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम विदेशी राज्य से अपना राज्य अच्छा है, का नारा लगाया था। उन्हीं की प्रेरणा से आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वाधीनता के ऐतिहासिक आन्दोलन में तन, मन तथा धन की बाजी लगाकर भारत को स्वतन्त्र करवाया।

भारत के स्वतन्त्र होने पर हमें आशा थी कि अब रामराज्य होगा और महर्षि दयानन्द के स्वप्नों के अनुसार भारत में तमाम सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा मिलेगा तथा शराब व मांस आदि पर पाबन्दी लगाई जावेगी। हरयाणा प्रदेश का निर्माण भी इसी भावना से करवाया गया था कि पूर्व की भांति हरयाणा में दूध-दही की नदियां बहेंगी और वैदिक संस्कृति की रक्षा होगी। परन्तु हरयाणा के बनने पर जो भी मुख्यमन्त्री बना उसने एक दूसरे मुख्यमन्त्री से अधिक संख्या में शराब के ठेके खुलवाकर गली-गली में शराब का प्रचार तथा प्रसार करके भ्रष्टाचार को बढावा दिया है। राजनैतिक नेता शराबियों का सहारा लेकर अनुचित तरीकों से हेराफेरी करके चुनाव जीतकर राज्यसत्ता प्राप्त कर लेते हैं। वे विधानसभाओं तथा लोकसभा में पहुंचकर जो अभद्र तथा अशोभनीय कार्यों का प्रदर्शन करते हैं, उसे दूरदर्शन आदि पर देखा जा सकता है। वे अपने स्वार्थ के लिए तैयार रहते हैं। इन्हे जनकल्याण करने की चिन्ता नही है। राजनैतिक दल चुनावों के अवसर पर अपने मतदाताओं को लुभाने के लिए घोषणा-पत्रों में अनेक प्रकार के वचन देते है। परन्तु इस समय जितने भी राजनैतिक दल हैं, उनमें कोई भी दल शराबबन्दी जैसी कल्याणकारी नीति को अपने घोषणा-पत्र में सम्मिलित नही करता। शराबबन्दी लागू करने की मांग करने पर सरकारें राजस्व कमाने के लालच में अनेक प्रकार के बहाने बनाती हैं। इस प्रकार शराब के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के कारण साधारण व्यक्तियों का जीना दूभर हो गया है और शराबी तथा असामाजिक तत्वों की गुण्डागर्दी के कारण बहन-बेटियों की इज्जत का खतरा बढ़ता जा रहा है।

इस सामाजिक बुराई को दूर कराने के लिए सभा की ओर से ५-६ वर्ष से हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। ग्राम-ग्राम में शराब पीने के विरुद्ध जागृति उत्पन्न करने के लिए सभा अधिकारियों ने सभा के प्रचारकों के सहयोग से शराबबन्दी सम्मेलन किए हैं। पंचायतों को प्रेरणा करके आगामी वर्ष शराब के ठेके न खोले जाने के प्रस्ताव पास करवाये गये हैं। भिवानी, रेवाड़ी, जीन्द, कुरुक्षेत्र, पानीपत जिलों में २ अक्तूबर ९२ को महात्मा गांधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाने की मांग करने के लिए प्रदर्शन किये गये हैं। हरयाणा की ३०० से अधिक पंचायतों ने अपने ग्रामों में जहां-जहां शराब के ठेके खुले हुए हैं, वहां शराबबन्दी के प्रस्ताव करके हरयाणा सरकार को सौंपते हुए आगामी वर्ष से हरयाणा को एक शराब मुक्त प्रदेश घोषित करने का ज्ञापन दिया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली तथा राजस्थान की ओर से उच्चतम न्यायालय में भारतीय संविधान की धारा ४७ के अनुसार जनता के कल्याण के लिए मादक पदार्थों के निर्माण तथा उनकी खपत पर रोक लगवाने हेतु एक याचिका दायर की है। उच्चतम न्यायालय की ओर से भारत तथा राज्यसरकारों को नोटिस भेजकर ४ नवम्बर तक अपना मत प्रस्तुत करने को कहा था, परन्तु राज्यसरकारों ने अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए और समय की मांग की है।

हम अंग्रेजों की गुलामी से तो स्वतन्त्र हो गये है, परन्तु अभी शराब से स्वतन्त्र नहीं हो सके। अतः सभा ने निश्चय किया है कि शराबबन्दी लागू करवाने के लिए हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भांति संघर्ष का बिगुल बजाया जावे।

अतः सभी आर्यसमाजों से निवेदन किया गया था कि वे इस सत्याग्रह की तैयारी के लिए अपने-अपने गांव तथा आर्य संस्थाओं से कम से कम ११०० रु० तथा ११ सत्याग्रहियों के नाम सभा कार्यालय में भेजकर अपनी शक्ति तथा संगठन का परिचय देवें और पूर्व सत्याग्रहों की भांति शराबबन्दी सत्याग्रह को तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देकर सफल करें। कई गांवों एवं आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं ने इस अपील पर, उक्त राशि व सत्याग्रहियों की सूची सभा कार्यालय को भेज भी दी है। बाकी सब से अनुरोध है कि वे भी शीघ्र ऐसा करके, इस जन-कल्याण यज्ञ में आहुति डाल, अपनी शक्ति का परिचय देवें। दानियों से निवेदन है कि वे इस कार्यक्रम हेतु, दान केवल आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के अधिकारियों या इसके कार्यालय में ही भिजवायें, जिसकी उचित रसीद उन्हें दी जायेगी।

निवेदक :

**ओमानन्द सरस्वती**
कार्यकर्ता प्रधान
परोपकारिणी सभा

**प्रो. शेरसिंह**
प्रधान

**सूबेसिंह**
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

**विजयकुमार**
पूर्व उपायुक्त
संयोजक
हरयाणा शराबबन्दी समिति

## मेवात में आर्यनेता अमरानन्द पर आक्रमण तथा आ. मन्दिर को क्षति पहुंचाने की निन्दा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य में मेवात क्षेत्र के जिला गुड़गांव में वैदिक आश्रम भादस के संचालक श्री स्वामी अमरानन्द जी पर शरारती तत्त्वों द्वारा अचानक आक्रमण करने तथा आर्यसमाज मन्दिर पुन्हाना आदि को क्षति पहुंचाने की कार्यवाही की घोर निन्दा की है। वक्तव्य में आश्चर्य प्रकट किया है कि हरयाणा की वीर जनता ने मेवात में रहने वालों को अपना भाई मानते हुए भारत पाक विभाजन के समय १९४७ में उनकी रक्षा की थी, परन्तु मुल्लाओं के बहकावे में आकर अब वे मेवात में रह रहे अल्पसंख्यकों पर आक्रमण करके शान्तिप्रिय हरयाणा में आग लगाने का यत्न कर रहे हैं। इसका परिणाम भयंकर हो सकता है और इस राष्ट्रघाती अपराध करने पर उन्हें पछताना पड़ेगा। इससे पूर्व भी ये लोग गोहत्या आदि करके कानून का उल्लंघन खुल्लमखुल्ला करते रहते हैं। अयोध्या काण्ड के पश्चात् शरारती मेव नूह की एक गोशाला से ६० गाएं भगा ले गये हैं। यद्यपि सद्भावना बनाये रखने के कारण आर्य जनता अब तक शांत रही है। प्रो० शेरसिंह ने शरारत करने वाले शरारती लोगों को चेतावनी देते हुए कहा है कि वे आर्यसमाज से टक्कर लेने का दुःसाहस न करें। स्मरण रखें आर्यसमाज ने हैदराबाद तथा लोहारू के जालिम नवाबों को धार्मिक जनता पर अत्याचार करने पर उनके विरुद्ध आन्दोलन करके उनके घुटने टिकवा दिये थे।

प्रो० साहब ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल से भी आग्रह किया है कि वे आर्य संन्यासी स्वामी अमरानन्द जी पर आक्रमण करने वालों तथा आर्यसमाज मन्दिर को क्षति पहुंचाने वालों को यथाशीघ्र गिरफ्तार करके उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देवें और आर्यसमाज मन्दिर का पुनर्निर्माण करावें। —केदारसिंह आर्य

### मेवात क्षेत्र में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की मांग

दिनांक ७-१२-९२ की मेवात क्षेत्र में अल्पसंख्यक समुदाय पर कई शरारती तत्त्वों द्वारा जुल्म किया गया है तथा उनके जान माल को नुकसान पहुंचाया है। मेवात क्षेत्र में मन्दिरों एवं आर्यसमाज मन्दिरों को तोड़ा गया है। दुकानों को लूटा गया है और आगजनी की घटनाओं के कारण जान माल की भारी क्षति हुई है।

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव इन घटनाओं की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए सरकार से मांग करती है कि मेवात क्षेत्र में रह रहे अल्पसंख्यकों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाए तथा तोड़े गए मन्दिरों का पुनर्निर्माण किया जाए। ओमप्रकाश चुटानी

## गुरुकुल आमसेना के रजत जयन्ती महोत्सव का निमन्त्रणपत्र

गुरुकुल का रजत जयन्ती महोत्सव २८ से ३१ दिसम्बर १९९२ को समारोह के साथ स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है। अनेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों के साथ शुद्धि समारोह में हजारों ईसाई पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी प्रधान सा० आ० प्र० सभा का आशीर्वाद लेकर वैदिक धर्म में प्रविष्ट होंगे। इसी के साथ स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में एक अपूर्व दीक्षा सम्मेलन का आयोजन भी होने जा रहा है। इसमें पच्चीस सज्जन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास दीक्षा लेंगे।

धर्मानन्द सरस्वती आचार्य

### अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक आवश्यक बैठक १९ दिसम्बर को ११ बजे सभा कार्यालय रोहतक में होगी। अन्तरंग सदस्यों से अनुरोध है कि समय पर पधारें। सभामन्त्री

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन की तैयारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सन् १९८४ से शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है। हमने ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके पर धरना दिया जिसमें स्वामी ओमानन्द जी व सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी का विशेष योगदान रहा। उसके बाद सभा के अधिकारी, कार्यकर्त्ता, उपदेशक तथा अनेक भजनमण्डलियां गांव गांव में जाकर शराबबन्दी प्रचार निरन्तर करते रहे हैं। जिससे लोगों में काफी जागृति आई है। साथ में गांव में शराबबन्दी समितियां भी गठित कर रहे हैं। हवन यज्ञ पर शराब छुड़वाने की प्रतिज्ञाएं भी करवा रहे हैं। अब गांव-गांव में घूमकर सत्याग्रह के लिए प्रत्येक गांव से आदमियों की भर्ती कर रहे हैं। सभा ने अब तक २८ ठेके बन्द करवाए है। लगभग ८४ ठेके, पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर बन्द करवाए हैं। ये दूसरी बात है कि सरकार शराब के ठेके प्रतिवर्ष बढ़ा रही है। गत वर्ष १५० प्रस्ताव पंचायतों से पास करवाए केवल २२ प्रस्ताव लागू किए। ८०० ठेकों की बजाए ८२१ ठेके सरकार ने खोले। सभा द्वारा महम चौबीसी से दिल्ली राष्ट्रपति भवन तक जि० हिसार, सिरसा, भिवानी में २०-२० गाव की शराबबन्दी जन-जागरण हेतु पदयात्राएं की गईं। कई वर्षों से सभा द्वारा हिसार, रोहतक भिवानी, सोनीपत आदि जिलों में शराब के ठेकों की निलामी पर आर्य नर-नारियों ने प्रदर्शन किए। अनेक गांवों में सभा द्वारा शराबबन्दी सम्मेलन किए गए। चालू वर्ष में २ अक्तूबर १९९२ को भिवानी में व ७-८ नवम्बर को रोहतक में विशाल शराबबन्दी सम्मेलन एवं प्रदर्शन किए गये। इस वर्ष भी ३० सितम्बर तक ३०० से अधिक प्रस्ताव सभा की प्रेरणा से पंचायतों ने स्वेच्छा से शराबबन्दी प्रस्ताव पास कर सरकार को भेजे जिनमें भिवानी व रोहतक में सभी ठेकों के प्रस्ताव पास हुए हैं।

ज्ञातव्य है कि ८ नवम्बर को अखिल भारतीय विराट् नशा मुक्ति सम्मेलन में आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभाप्रधान प्रो० शेरसिह जी ने हरयाणा प्रान्त में पूर्ण शराबबन्दी की मांग को लेकर अप्रैल मास से सत्याग्रह करने का निर्णय लिया है। जनता के सहयोग से साफ कहा है शराब रहेगी या हम रहेंगे। चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त अपने पद से त्यागपत्र देकर पूरी निष्ठा तथा लग्न से शराबबन्दी कार्यक्रम में युद्धस्तर पर जुटे हुए हैं। इनके पुरुषार्थ से शराबबन्दी अभियान में काफी तेजी आई है जबकि मैं भी १९८३ से शराबबन्दी कार्य में लगा हुआ हूं। अब मैं चौ० विजयकुमार जी संयोजक, शराबबन्दी समिति, हरयाणा के साथ निष्ठा से कार्य कर रहा हू।

अब तक मेरी समझ के अनुसार हरयाणा में गुरुकुलों, वेदप्रचार तथा शराबबन्दी कार्यक्रम हुआ है वह स्वामी ओमानन्द जी तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी के कारण हुआ है। दोनों नेता धैर्यशील, विद्वान्, कर्मठ हैं। आर्य जनता ने वर्तमान में हरयाणा में इन्ही का नेतृत्व स्वीकार कर शराबबन्दी कार्यक्रम में तन, मन, धन से सहयोग करना चाहिए। दूसरी तरफ तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा जिसका जन्म ही अब हुआ है, उसके संस्थापक एवं नेता अ… तक कागजों व आसमान में हवाई महल बना रहे हैं। धरती पर नहीं उतरे हैं। एक नाटक के तहत लोगों को भ्रमित कर रहे हैं और जब भी कोई ठोस कार्य करने या लडाई लड़ने का समय आता है तब माफी मांग जेलों से बाहर आते हैं। या दूसरे प्रान्तों में या विदेशों में या किसी अपराध में जेल में मैदान छोड़कर चले जाते हैं। जिससे आर्यसमाज के कार्य को तथा गर्व को बहुत धक्का लगता है। साथ में दूसरे कार्य करने वाले आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्त्ताओं के नाम से अखबारों में ब्यान देकर लोगो को भ्रमित करते हैं। जैसे ३०-११-९२ दैनिक ट्रिब्यून और ३-१२-९२ के नवभारत अखबार में मेरे नाम से झूठा ब्यान दिया। मुझे बड़ा दुःख हुआ कि जब मैंने दोनों अखबारों में मेरे नाम के साथ भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संन्यासियों का नाम पढा। जबकि कटु सत्य यह है कि तथाकथित भारतीय सभा ने हरयाणा ने अब तक हरयाणा में शराबबन्दी का नाममात्र भी काम नहीं किया है। जो कुछ कार्य हरयाणा में अब तक हुआ है वह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने किया है। झूठी वाह वाह दूसरे लोग लूटना चाहते हैं। सभा प्रधान प्रो० साहब ने साफ कहा है कि अनुशासन में सभा के साथ कार्य करने में कोई भी आए स्वागत है।

आर्य जनता से अनुरोध है कि सभा द्वारा २३ दिसम्बर को नरवाना जिला जीन्द में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उसमें बढ़ चढ़कर भाग लें। जिसमें स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी रतनदेव जी, सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी, चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तथा सभा मन्त्री चौ० सूबेसिह आदि आर्यनेता पधार रहे हैं।

अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

## वेदप्रचार मण्डल, दिल्ली, देहात

१४वां वार्षिकोत्सव शुक्रवार, दिनांक ८ जनवरी से, वीरवार दिनांक १४ जनवरी १९९३ प्रतिदिन ठीक दोपहर २ बजे से ५ बजे तक होगा।

पूर्ण सप्ताह चलने वाला यह उत्सव क्रमशः मदनपुर डबास, महरौली, पालम गांव, मधु विहार, नजफगढ़, डाबड़ी एक्सटेंशन और किशनगढ़ में सम्पन्न होगा। इस शुभ अवसर पर गायत्री महायज्ञ, कीर्तन-भजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, योग प्रदर्शन, आर्य महासम्मेलन, अखण्ड भारत सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है।

इस उत्सव में देश के प्रसिद्ध सन्त महात्मा, पंडित, गायक-गायिका, कवि, समाज सेवक तथा नेतागण पधारकर जनता का मार्ग दर्शन करेंगे।

रामस्वरूप आर्य महासचिव

## नए सिक्के को जारी करने की योजना रद्द करने की मांग

पानीपत, ४ दिसम्बर (हृ.सं.)। हरयाणा गोशाला संघ के अध्यक्ष बाबू रामगोपाल एडवोकेट ने भारत के राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा को पत्र लिखकर भारत सरकार द्वारा विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर एक रुपए के नए सिक्के को जारी करने की योजना को रद्द करवाने का अनुरोध किया है। उन्होंने सिक्के के एक ओर फल व दूसरी ओर मांस-अंडा अंकित करने पर गहरा रोष व्यक्त किया है।

उन्होंने डा० शंकरदयाल शर्मा को स्मरण कराया कि आप गांधीवादी और महात्मा गांधी के आदर्शों एवं सिद्धान्तों के अनुसार मांसाहारी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना उनके विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि हमारा राष्ट्र शाकाहारी है और इस प्रकार का सिक्का जारी होने से देश की जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचेगी और इससे देश में अफरातफरी व हिंसा को बढावा मिलेगा।

उन्होंने देश में मांस का उपयोग एवं इसके निर्यात पर भी अपनी चिंता जताते हुए कहा कि यद्यपि सिक्के जारी करना सरकार का कार्य है तथापि राष्ट्रपति महोदय जनहित के अन्तर्गत व जनता की भावनाओं को देखते हुए अपने प्रभाव से इस योजना को क्रियान्वित होने से रोक सकते हैं। पत्र के अन्त में अनुरोध किया गया है कि इस प्रकार के सिक्कों को जारी करने की अपेक्षा तोड़ना ही राष्ट्र हित में होगा।

(दैनिक हिन्दुस्तान)

# शराबबन्दी हो कैसे ?

(सुदामा आर्य, अध्यापक गुरुकुल आर्यनगर)

हम हैं भारत के वीर सिपाही आगे ही बढ़ते जाएंगे।
जान भी देकर के हम, शराबबन्दी कराएंगे ॥
आज तक हम से जो टकराया, कभी भी हमसे बच न पाया।
आज है किसकी हिम्मत, जो हम से टकरायेगा ॥
सियार का बच्चा कभी शेर के बच्चे से क्या टकराया ?
यदि मान लेते हैं कभी टकराया होगा तो क्या वो बच पाया होगा।
हम हैं राम कृष्ण की सन्तान, देश पर आंच न आने देंगे।
यदि कोई काला शासक अंग्रेज, उल्लू की तरह आंखें दिखाता।
समझ लो कि अपनी युवा शक्ति से, उसी की आखें निकाल लेंगे ॥

अतः मेरे युवा साथियो एव बुजुर्गो ! यदि शराब बन्द करना चाहते हो, इस शराब-सागर में डूबते हुए हरयाणा को बचाना चाहते हो, यहां के युवक-युवतियों का चरित्र बचाना चाहते हो, राज्य से भ्रष्टाचार, दुराचार, रिश्वतखोरी, अन्याय, चोरी तथा दादागीरी मिटाना चाहते हो तो तुम लोगों को सबसे पहले यह निर्णय करना होगा और साथ ही यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि हमें जान प्यारी नहीं बल्कि हरयाणा के वर्तमान युवक एवं युवतियों का जीवन तथा भावी सन्तति का जीवन प्यारा लगता है, इनका जीवन सुरक्षित रखना चाहते हो, इस शराब रूपी महापाप से बचना चाहते हो तो क्रान्ति मशाल हाथ में पकड़ो और कन्धे मिलाकर इस शरीर को नश्वर समझकर इस शराबबन्दी आन्दोलन में भाग लेना होगा। तब जाकर हमें सफलता मिलेगी। तभी जाकर इस घोर पाप से नागरिक को बचा सकते हो। युवक एव युवतियों का उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित रख सकते हो। तुम हो कि सरकार इस काम को करे ? यह कदापि नही हो सकता। इससे करोड़ों रुपयों की आमदनी हो रही है। क्या वे इस लालच से बच सकते है क्योंकि जिसकी स्वयं की फैक्टरी हो वह बन्द कर देगा क्या ? कदापि नही। सरकार को इस बात का पता है कि इससे नागरिकों की कितनी क्षति है परन्तु पुररपि देखते हुए अन्धी बनी है, सुनती हुई बहरी बनी है, बोलती हुई गूंगी बनी है, चलती हुई लंगड़ी बनी है। अब आप बतलाओ कि जिसके अन्दर कोई रोग न हो और स्वय बहाना बनाकर कहे कि मैं रोगी हूं तो क्या इसका भी कोई इलाज डाक्टरों के पास है ? मैं चेलेंज के साथ कह सकता हूं कि इस रोग का इलाज दुनिया की कोई ताकत नही कर सकती। इसकी दवा मात्र केवल युवा शक्ति कर सकती है। बताओ पाठक सज्जनो, लात-जूते का भूत बातों से मानता है ? कदापि नहीं। इसलिए इस महायज्ञ मे युवाओं को अपने रक्त की आहुति देनी होगी तभी शराब बन्द हो सकती है।

हरयाणा के कोई मुख्यमन्त्री क्यों न हों चाहे वह बंसीलाल हो चाहे देवीलाल हो चाहे भजनलाल हो चाहे और कोई लाल हो किसी भी लाल के वश की बात नहीं है कि वह शराब बन्द कर दे। हां यदि आप लोग सरकार के माध्यम से शराबबन्दी करवाना चाहते हो तब स्वयं राजनेता बनो, अपनी पार्टी बनाओ। कोई बुरी बात नही है राजनीति में भाग लेना। अच्छे लोगों को ही आगे बढ़ना चाहिए। गुण्डे, लोफर, बदमाश को कभी भी आगे बढ़ने नही देना चाहिए। सदैव उसे पदतले रखना अन्यथा वो मस्तक पर चढ़कर स्वयं पैर मारना शुरू कर देगा। इसीलिये शराबबन्दी के इच्छुकों को यदि शराब सदा के लिये हरयाणा से लुप्त हो जाये, इसका नामो-निशान न रहे तो कोई अपनी पार्टी बनाओ। इसका नाम रखो—"शराबबन्दी पार्टी" जैसे कि अन्य लोगों ने अपनी पार्टी बनाई है। यदि सही माने में चाहते हो कि शराब बन्द हो जाए, तब एक पार्टी का निर्माण करके जो अच्छा सा व्यक्ति मिले उसे चुनाव में खड़ा कर दो और गाव-गाव मे जाकर दया की भीख मांगो और बतलाओ—अरे ओ हरयाणा के किसानो ! यदि तुम रामराज्य चाहते हो और शराबबन्दी के इच्छुक हो तो आओ और अपना अमूल्य वोट इस अच्छे उम्मीदवार को दो। जो जीतकर इस कार्य को कर सकेगा। परन्तु मात्र ढिंढोरा पीटने से काम नही चलेगा। आज की सरकार-सरकार नही, बल्कि शोरकार अर्थात् मात्र उसका काम राज्य में शोर मचाना। माइक हाथ में पकड़कर बकवास करना। इससे अधिक और क्या कर सकती है।

इन की समझ में यह बात नही आती है कि मेरे घर की कोई हानि होती है या मेरी कोठी पर घेराव नहीं लग सकता, मेरी कुर्सी से सुगन्ध नहीं झर सकती है। तुम तो शराब करके भी ऐशो-आराम की जिन्दगी बिता सकते हो परन्तु इन मूर्ख नालायकों को कौन समझाए। ऐसे मूर्खों को साक्षात् ब्रह्मा भी नही समझा सकते हैं। अब बतलाओ ऐसे मूर्खों को राज्य सौंप दिया जाए तो इस राज्य की हानि के अलावा और क्या हो सकता है ? इसी लिए स्वयं राजनीति में आओ, राजनेता बनो तभी जाकर हरयाणा की मुक्ति शराब से हो सकती है। अन्यथा संघर्षोपरान्त शायद मिल जाये। इसीलिये मैं लोगों से यही कहूंगा—"आर्यजन जागृत होकर उठ जाओ, क्रान्ति-मशाल लिये देशद्रोही राजनेताओं से टक्कर लेने, बलि-दान होने की शान लिये। तब जाकर आपको सफलता मिलेगी।

बिना क्रान्ति के शान्ति नही, बिना राज्य के शराबबन्दी नही।
बिना आचरण के जीवन नही, बिना तप के विद्या नही।
बिना शक्ति देशभक्ति नही, बिना कारण के कोई कार्य नहीं।
बिना वेद के कोई राह नहीं, बिना क्षत्रियत्व के देशरक्षा नही ॥

## १८ से २० फरवरी को टंकारा में ऋषिमेला

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर १८, १९, २० फरवरी १९९३ (वीर, शुक्र, शनि) को भव्य ऋषि मेला मनाया जा रहा है। टंकारा ऋषि मेला में पधारने वाले ऋषिभक्तों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क की जाती है। अतः समस्त ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि वे उक्त तिथियों में अधिक से अधिक संख्या में टंकारा पधारकर स्वामी दयानन्द जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

टंकारा ऋषिभक्तों को दिल्ली से ले जाने के लिए श्री शामदास सचदेवा, मन्त्री आर्यसमाज, चूना मण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५ (फोन नं० ७५२६१२८) ने एक विशेष रेलगाड़ी का प्रबन्ध किया है। जो ऋषिभक्त इस रेलगाड़ी से टंकारा जाना चाहें वे श्री सचदेवा जी से सम्पर्क करें। इसी तरह दिल्ली से बसें ले जाने की व्यवस्था श्री वेदप्रकाश चावला, १५४३-सी, गली नं० ४, पश्चिमी रोहतासनगर, दिल्ली-११००३२ (फोन नं० २२९१४१०/२२९३७७९) एवं श्री रामचन्द्र आर्य, ४६६ भीमनगर, गुड़गावां, हरयाणा ने की है। अधिक जानकारी के लिये आप टंकारा ट्रस्ट के उपकार्यालय आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ फोन नं० ३४३७१८/३१२११० पर सम्पर्क कर सकते हैं।

रामनाथ सहगल, मन्त्री

# शराबी तेरे जीवन को धिक्कार

### भप्पू की दुर्गति, शराब का दुष्परिणाम

किसान का बेटा भप्पू जीवन मे कुचाल चला।
पीता था शराब हाल देह का कर बेहाल चला।
पत्नी को लिवाने खातिर अपनी ससुराल चला।
पहिन कर मलमल का कुरता बालो को सभाल चला।
गुलछर्रे उडाऊं खूब करके ये खयाल चला।
थैले में शराब की ये चार बोतल डाल चला॥
मन मे खुशी अपार॥१॥

पहुंचा यह ससुराल इसके मन मे भारा चाव भरा।
गाम के किनारे बाहर पानी से तालाब भरा।
हाथ पैर धोये बैठा खोल ली शराब इसने।
कोई रिश्तेदारी का माना ना दबाव इसने।
पूरी बोतल झाड लई दे मूंछो पर ताव इसने।
कोई ना अन्दाज व्हिस्की पी ली बेहिसाब इसने।
पागल सा बनाया चेहरा फूल सा गुलाब इसने।
हो गया नशा सवार॥२॥

उठ के चाला भप्पू इसके पैर लड़खड़ाने लगे।
झूम झूम चाले भारी शिर मे चक्कर आने लगे।
गाम ओर चाला लख के कुत्ते गुरगुराने लगे।
बालक बच्चे आये धूल भप्पू पर गिराने लगे।
तमाशा बनाया इसे गलियों मे घुमाने लगे।
मुह पर कालो स्याही पोत बन्दर बना नचाने लगे।
हँसे सभी नरनार॥३॥

पागलों की तरह बच्चे भप्पू को नचाते फिरे।
गाम की गलियों में इसके चक्कर भी लगाते फिरे।
नशे में था धुत्त भप्पू भूला भूला डोल रहा।
लात घूसे मार पीछे बालकों का टोल रहा।
परसन्दो को मम्मी कहां गयी जोर जोर बोल रहा।
भूल गया घर का द्वार दूसरे का खोल रहा।
करता हाहाकार॥४॥

बस्सी नम्बरदार ने देखकर बताई है ये।
ये भप्पू महमान ठाकुरदास का जमाई है ये।
नशे में चूर दूर देता न दिखाई इसे।
पी रखी शराब छोरी रामकौर ब्याही इसे।
ये आदत से लाचार॥५॥

हो गयी पहचान इसका साला परमानन्द आया।
इसे साथ साथ लाया काला मुखड़ा धुलवाया।
टट्टी व पेशाब भप्पू उल्टियों का दौर लाया।
चारपाई डाल भप्पू कम्बल डालकर लिटाया।
मार रहा किलकार॥६॥

पौरी में लिटा के इसे घर का काम करने लगा।
भैंस का कटरा मुह कम्बल पर रगड़ने लगा।
बौखला गया भप्पू जोर से अकड़ने लगा।
सोने नही देती थाप कटरे के मुंह जड़ने लगा।
हट बेहूदी नार॥७॥

आई रामकौर दौड़ कटरे को मार रहा।
सोने नही देती मुझे ये कैसे पुकार रहा।
पी पी कर शराब जीवन खाक मे मिलाया तूने।
दस एकड़ जमीन को शराब में लुटाया तूने।
मुर्गी बकरा कबूतरों का खून भी बहाया तूने।
भिखारिन बनाकर मुझे पीहर मे बिठाया तूने।
जो भी टूम टेकडी सबको बेच खाया तूने।
बेशर्माई धारी आके पीहर मे सताया तूने।
कर रहा मिट्टी ख्वार॥८॥

शराबियों की कहानी भाई कहां तक बयान करें।
कितना भी समझाओ इन्हे कोई नही कान करे।
बेशर्माई धारी भारी अपना ही नुकसान करे।
जान बूझकर के जल्दी मरने का सामान करे।
कभी यह नहीं धर्म अधर्म की पहिचान करे।
कहे स्वरूपानन्द चाहे कितना हम व्याख्यान करे।
होता नहीं सुधार॥९॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

## घिराय मे सामूहिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक २-१२-९२ को प्रातः सात बजे ब्र० रामफलसिंह आर्य द्वारा हाई स्कूल के प्रांगण में यज्ञ किया गया। इस अवसर पर १५ युवकों ने भाग लिया जिनमें से ५ युवकों ने बुराई छोडने का संकल्प करके यज्ञोपवीत धारण किये तथा भविष्य में बुराई छोड़ने का वचन दिया। यज्ञोपवीत तथा यज्ञ के बारे में भी आर्य ने प्रकाश डाला।

मानवीर आर्य, प्रचारमन्त्री आर्यसमाज घिराय (हिसार)

## प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् पं० राजगुरु शर्मा नहीं रहे

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पं० राजगुरु शर्मा, मह निवासी का परसों २८ नवम्बर को ७० वर्ष की आयु में दिल का दौरा पडने से नई दिल्ली में निधन हो गया है। उनका शव हवाई जहाज से उनके पैतृक स्थान मह २९ नवम्बर को भेजा गया है। वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ उनका अन्तिम संस्कार मह में किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सुनकर गहरा दुःख प्रकट करते हुए दिवंगत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—पं० जी आर्यजगत् के वैदिक प्रबल प्रकाण्ड विद्वान् और वक्ता थे। पिछले कई वर्षों से वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारी रहते आये थे। उन्होंने जीवन भर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के उपदेशों और सिद्धान्तों का प्रबल प्रचार किया था। वह वैदिक यज्ञ के सुप्रसिद्ध विद्वान् भी थे। सम्पूर्ण आर्यजगत् में वृहद् यज्ञों का अनुष्ठान मुख्यतः उनसे सम्पन्न कराया जाता था।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

## श्रीमती लीलावती गुलाटी का असामयिक निधन

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि प्रसिद्ध आर्यसमाजी एम.डी.एच. के मालिक महाशय धर्मपाल जी की सहधर्मिणी श्रीमती लीलावती का दिनाक २७-११-९२ की रात्रि को ११-३० बजे देहावसान हो गया। उनकी आयु ६७ वर्ष की थी। उसी दिन वे गुरुकुल कांगड़ी से अपनी बहिन के पास सहारनपुर गई थीं। उनके भरे पूरे सम्पन्न परिवार में दो पुत्र व छः पुत्रियां थीं। वे ३० वर्ष से नियमित यज्ञ करती थीं। परम पिता परमेश्वर से समस्त आर्य विद्या सभा के पदाधिकारियों व सदस्यों की ओर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की जाती है और शोकसंतप्त परिवार को इस असामयिक निधन पर शोक सहन करने को भी परमेश्वर से प्रार्थना की जाती है। रस्म क्रिया का कार्यक्रम दिनांक ९-१२-९२ को महाशय जी के ई-६/६ वसन्त विहार स्थित निवास स्थान पर बाद दोपहर २-३० पर होगा।

प्रकाशवीर विद्यालंकार
मन्त्री, आर्य विद्या सभा
गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० सं० [illegible] सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

# सर्वहितकारी

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ५ २१ दिसम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

## ✖ श्रद्धानन्द बलिदान अंक ✖

# स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन

(यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद–२४४०३२)

"कौमें बलिदानों से ही जिन्दा रहती हैं।" किसी महापुरुष का यह वाक्य अक्षरशः सत्य है। जिस कौम में बलिदान देने की परम्परा समाप्त अथवा लुप्त हो जाती है, वह कौम भी प्रायः समाप्त हो जाती है। अपने प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज में बलिदानों की तीव्र उत्कण्ठा थी। तभी आर्यसमाज द्रुतगति से प्रचारित हो सका। महर्षि स्वामी दयानन्द के अमर बलिदान से प्रेरणा पाकर पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और ऐसे ही अनेकों अमर बलिदानियों ने आर्यसमाज को अपने रक्त से सींचा था। इतिहास साक्षी है, आर्यसमाज का वह काल 'स्वर्णकाल' के नाम से सुविख्यात है। उसी काल के प्रमुख बलिदानी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति महापुरुषों ने जो श्रद्धा सुमन समर्पित किये थे, उसी की माला पिरोकर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर समर्पित कर रहे हैं, जिससे आर्य-जाति की ठण्डी रगों में कुछ गरमी आ सके।



सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं—

### श्री सन्तराम जी बी. ए.

"महापुरुषों की तुलना करना प्रायः विरक्तिकर होता है, फिर भी कहना पड़ता है कि दयानन्द के बाद, आर्यसमाज में ही नहीं, वरन् समूचे भारत में जो महान् व्यक्ति हुए हैं उनमें स्वामी श्रद्धानन्द की शान निराली है। जैसे किसी पर्वतमाला में अनेक चोटियां होती हैं और वे सब अपने-अपने स्थान पर सुन्दर प्रतीत होती हैं, पर उन सब में एक पर्वत-शृंग विशेष रूप से ऊंचा उठकर दर्शकों को दूर से अपनी भव्यता से और अनोखेपन के कारण आकर्षित करता है, वैसे ही श्रद्धानन्द थे। रूस के ऋषि टालस्टाय की भांति उनका प्रारम्भिक जीवन उतना अच्छा न था, पर उनकी आत्मा प्रगतिशील थी। हम उन्हें बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करके प्रतिक्षण ऊपर उठता पाते हैं। अन्त में वे ऊंचे उठ गये कि उनको देखने के लिये सिर को पीछे की ओर झुकाना पड़ता था।"

### लाला लाजपतराय

"श्रद्धानन्द वीर संन्यासी, वीर स्वामी था। वीर और संन्यासी शब्द सुनकर आश्चर्य होता है, परन्तु वैदिक आदर्श यही है। कलियुग में हमारे सौभाग्य हैं, कि स्वामी श्रद्धानन्द ने इस आदर्श को पूरा किया।"

### महात्मा गांधी

स्वामी जी वीरों में अग्रणी थे। स्वामी जी ने अपनी वीरता से भारत को आश्चर्यचकित किया था। उन्होंने अपनी देह को भारतवर्ष के लिये कुर्बान करने की प्रतिज्ञा की थी, इसका मैं साक्षी हूं। ··· आज श्रद्धानन्द की मौत के लिये आंसू बहाने का समय नहीं है। आज तो क्षत्रियता बताने का अवसर है। क्षत्रियता क्षत्रिय का विशेष गुण भले ही हो, परन्तु ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र सब क्षत्रियता बता सकते हैं। खास तौर पर आज का स्वराज्य-युग हम सबके लिये क्षत्रियता का युग है।"

### भाई परमानन्द

"मुझे तो सिर्फ इतना ही कहना है कि राजनैतिक आन्दोलन में सबसे आगे कदम रखते हुए स्वामी जी ने अपनी प्राचीन सभ्यता और धर्म के प्रेम को ही प्रधानता दी। जब उन्हें हिन्दू जाति संकटापन्न प्रतीत हुई तो वह पहले पुरुष थे जो शुद्धि के खतरों से भरी हुई रणभूमि में कूद पड़े। ··· ··· उनके पिछले जीवन का हरेक क्षण धर्म के लिये बलिदान का क्षण था। यदि उनकी मृत्यु वैसे ही सामान्य रूप से हो जाती तो साधारण जनता को इस सचाई का अनुभव न हो पाता। मुझे तो हर्ष है कि एक कातिल ने अपने इस कार्य से सारी दुनिया को दर्शा दिया कि स्वामी जी का जीवन ऐसे ही बलिदान का जीवन था जैसी कि उनकी मृत्यु हुई।"

### वीर सावरकर

"इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलिवेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू जाति के लिए एक स्पष्ट सन्देश देता है।"

### प्रो० सुधाकर एम. ए.

"श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान वर्तमान समय में सबसे बड़ा बलिदान है। यह बलिदान हिन्दू जागृति का सब से बड़ा साधन बनेगा।"

### पं० जवाहरलाल नेहरू

"विशुद्ध शारीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ कार्य के लिए शारीरिक कष्ट सहन करने एवं उस कार्य के लिए मृत्यु तक की परवाह न करने वाले गुणों का मैं सदा से प्रशंसक रहा हूं। मैं समझता हूं कि हम सभी व्यक्ति ऐसे अद्भुत साहस की प्रशंसा करते ही हैं। स्वामी श्रद्धानन्द में इस प्रकार का निर्भीकतापूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा में विद्यमान था। वृद्धावस्था में भी उनको

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# २३ दिसम्बर का दिवस

**एक अमरहुतात्मा के कार्यों की पुण्य स्मृति वे राष्ट्रीय एकता के प्रबल पक्षधर होते हुए अन्याय के आगे कभी नहीं झुके——**

स्वामी श्रद्धा की बाह्य आकृति, वेषभूषा, वाणी में ओजस्वी तेज तो जनता को प्रभावित करने वाला होता ही था। इसके अतिरिक्त इनकी कथनी करनी में एकता, दूरदर्शी परिणामों के पारदृश्वा तुष्टीकरण की नीति से बहुत दूर, स्पष्टवादिता आदि गुणों का प्रभाव जादू की भांति होता था। राष्ट्रीयता-एकता के प्रबल पक्षधर होकर जो राष्ट्रीय-एकता के लिए कार्य किए, यदि तत्कालीन नेता लोग स्वामी जी की नीतियों को समझकर उनका साथ दे देते तो भारत स्वतन्त्र ही नहीं, वरन देश का नक्शा ही दूसरा होता और वर्तमान में जो अशान्ति व साम्प्रदायिक अनेकता के बीज उपजते दिखाई दे रहे हैं, वे समूल नष्ट हो जाते। उनके द्वारा चलायी राष्ट्रीय शिक्षा, दलितोद्धार तथा शुद्धि आन्दोलन जैसे कार्यों का कुछ दिग्दर्शन——

१. गुरुकुलीय शिक्षा का पुनरुद्धार एवं प्रसार करना——

राष्ट्र की एकता में प्रबल बाधा थी लार्ड मेकाले के द्वारा चलायी शिक्षा जिसे पढ़कर भारत का युवक रूप रंग से भारतीय होकर भी विदेशी सभ्यता का दास बन जाता था और जीवन भर भारतीय संस्कृति का विद्वेषी बनकर अंग्रेजी सभ्यता के ही गीत गाता रहता था। महर्षि दयानन्द ने इस रहस्य को भली-भांति समझा था, और भारतीयों की इस मानसिक गुलामी को दूर करने की योजना अपने ग्रन्थों में प्रकाशित की थी। वह योजना लिखी ही रह जाती यदि स्वामी श्रद्धानन्द जैसे कर्मठ एवं दृढ़ विश्वासी व्यक्ति उसे साकार नहीं करते। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय-शिक्षा पद्धति को मूर्तरूप देने के लिए न केवल अपना सर्वस्व ही लुटाया, वरन भौतिक भोगों को छोड़कर विरक्त, त्यागी, तपस्वी, संन्यासी बनकर गुरुकुल चलाने के लिए भिखारी बनकर कार्य किया। उस त्याग व तप का ही प्रभाव है कि आज वह गुरुकुल रूप छोटा सा पौधा विशाल वृक्ष बनकर दूर-दूर तक शिक्षा का प्रकाश और अशान्त हृदयों को शान्ति सन्देश तथा अमृत पिला रहा है स्वामी जी द्वारा सचालित शिक्षा पद्धति की निम्नलिखित विशेषतायें थी—

(क) सदाचार व आध्यात्मिक शिक्षा के साथ बौद्धिक विकास की शिक्षा।

(ख) ब्रह्मचर्यव्रत के पालन के साथ-साथ संयमी जीवन तथा तपस्वी जीवन।

(ग) गरीब-अमीर उच्च नीच राजा-रक के भेद को भुलाकर समानता से शिक्षा का अधिकार।

(घ) शिक्षा के साथ राष्ट्रीय देशभक्ति का पाठ एवं अपनी संस्कृति का गौरव शिक्षण।

(ङ) शिक्षा के साथ शारीरिक व आत्मिक बल बढ़ाकर स्वावलम्बी बनने की शिक्षा।

(च) गुरु-शिष्य का निरन्तर सान्निध्य होना।

(छ) वेदादि शास्त्रों की शिक्षा के साथ विदेशी भाषाओं का भी ज्ञान कराना।

(ज) सहशिक्षा न होना अर्थात् लडके व लड़कियों के गुरुकुल अलग-अलग होना।

२. दलितोद्धार——

स्वामी श्रद्धानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने समाज में विघटन के कगार पर बैठे और अछूत कहे जाने वाले लोगों के लिए 'दलित' नाम देकर 'दलितोद्धार' का कार्य प्रारम्भ किया और उन्हें समाज में सम्मान दिलाकर अपने गले लगाया। उसके बाद महात्मा गांधी ने इन्हें 'हरिजन' नाम दिया। स्वामी जी ने 'अस्पृश्यता' के दोष को राष्ट्रीय-एकता मे प्रबल बाधा मानकर यह कार्य प्रारम्भ किया था।

दलितों का उद्गम वही है, जो ब्राह्मणादि का है——

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने एक लेख मे स्पष्ट लिखा—अस्पृश्यता देश की प्रगति में बाधक है। ये अस्पृश्य या अछूत कौन हैं? क्या स्वर्ग या नरक से बहिष्कृत किए लोग हैं? यदि कोई धर्म और पक्षपात का चश्मा हटाकर खोज की जाए तो अच्छी प्रकार स्पष्ट हो जाएगा कि अस्पृश्यों के गोत्र भी वही हैं जो स्वर्णों के हैं। अतः स्पष्ट है कि स्वर्णों की भांति ही इनका उद्गम समान है। हिन्दू जाति में फैले इस महापाप को समूल नष्ट करने के लिए ऋषि दयानन्द ने जन्म-मूल की वर्ण-व्यवस्था को स्वार्थी लोगों की देन बताकर कर्ममूलक वर्णव्यवस्था पर बल दिया। काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्षपद से बोलते हुए मोहम्मद अली ने जब यह कहा कि भारत के ६-१/२ करोड़ अछूत लावारिस हैं। और उनको ईसाई तथा मुसलमानों में आधा-आधा बांट दिया जाये। स्वामी जी को यह घोषणा बड़ी घातक लगी और उन्होंने कांग्रेस की तुष्टीकरण एवं मुसलमानों के प्रति झुकाव देखकर कांग्रेस से त्यागपत्र देकर दलितोद्धार के कार्य को ही तेज कर दिया और हिन्दू जाति के अंगों को पृथक् होते प्रवाह को रोक दिया। अमृतसर के कांग्रेस के अधिवेशन में भी स्वामी जी ने यही बात कही कि दलितों को अपनाओ। स्वामी जी ने गुरुकुलों के अधिकतर पद दलितवर्ग को दिये। रसोई तक का कार्य दलित करने लगे। 'दलितोद्धार' नाम की एक संस्था भी बनाई। जिसकी पहली सभा में बोलते हुए स्वामी जी ने कहा—आप सभी आज यह शपथ खाकर जायेंगे—"आज से हम दलितों के साथ ऐसा व्यवहार किया करेंगे कि आपके बच्चे उनके बच्चों के साथ खेल-कूद सकेंगे, इकट्ठे बैठकर पढ़ सकेंगे और परस्पर समस्त भेदभाव भुलाकर परस्पर घुल मिलकर रहा करेंगे। आप सभी मिलकर ऐसी भी प्रभु से प्रार्थना करें कि मेरा यह स्वप्न सत्य सिद्ध हो।" दलितों को समाज में सम्मान मिले एतदर्थ अपने गुरुकुल में दलितों के बच्चों को यज्ञोपवीत संस्कार कराकर प्रवेश दिलाया। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के प्रयास किये और हिन्दुओं के इस कमजोर वर्ग को दबाव तथा लालच के कारण विधर्मी होने से बचाया।

३. शुद्धि आन्दोलन——

भारत के इतिहास में २३ दिसम्बर, १९२६ का दिन बहुत ही दुर्भाग्य का था, क्योंकि इस दिन एक धर्मान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने एक ऐसी महान् आत्मा को तीन गोलिया मारकर संसार से विदा कर दिया, जो महात्मा ऐसे पुण्य कार्य में लगा था, जिससे देश की एकता सुदृढ़ हो सके और विघटन के तथ्यों को नष्ट किया जा सके। इस धर्मान्ध हत्यारे ने इस महात्मा को इसलिए मारा, क्योंकि इस महात्मा ने असगरी नामक एक बेगम को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में संरक्षण दिया था। इस शुद्धि के कार्य से मुसलमान उत्तेजित हो गए। जो वीर पुरुष हिन्दू-मुसलमान के बीच की खाई को भरकर एकता कराना चाहता था, वही कार्य उनकी मृत्यु का कारण बन गया। एक कवि ने इस महात्मा को प्रणाम करते हुए लिखा है——

संकड़ों हजारों शुद्ध हुए, मजहबी ताकतें घबरायीं।
कातिल को भेजा धोखे से, सीने पर गोली बरसायीं॥
स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है बलिदानी तेरा अमर नाम।
सेनानी श्रद्धानन्द तुम्हारे चरणों मे मेरा सादर प्रणाम॥

स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि के आन्दोलन का ऐसा चक्र चलाया, जो कि लोगों को असम्भव ही लगता था। सर्वप्रथम देहरादून निवासी मुंशी मुहम्मद असगर को स्वामी जी ने शुद्ध करके अलखधारी बनाया। उसके बाद तो धड़ाधड़ मुसलमान मुस्लिम धर्म को छोड़कर अपने पूर्वजों के धर्म को ही अपनाने लगे। स्वामी जी के शुद्धि आन्दोलन से कुछ कट्टरवादी व्यक्तियों को छोड़कर मुसलमान भी प्रसन्न थे। स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे—'हम' शब्द दो ही अक्षरों से बना है। इसमे 'ह' का अर्थ हिन्दू है और 'म' का अर्थ मुसलमान। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दोनों के सहयोग से 'हम' बना है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अंतरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अंतरंग सभा की एक बैठक दिनांक १६ दिसम्बर ९२ को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाज के नेता एवं कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। बैठक में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय सर्वसम्मति से किये गये।

१. मेवात क्षेत्र में मन्दिरों को क्षति पहुंचाने तथा अल्पसंख्यकों पर आक्रमण करने की निन्दा

६ दिसम्बर ९२ के अयोध्या काण्ड के पश्चात् हरयाणा प्रदेश के मेवात क्षेत्र में शरारती मेवों द्वारा वैदिक आश्रम भादस, आर्यसमाज मन्दिर पिनगवा, गोशाला नूह तथा अन्य २० के लगभग मन्दिरों पर आक्रमण करके करोड़ों रुपये की सम्पत्ति को आग लगाकर नष्ट कर दिया तथा आर्यसमाज के साधुओं तथा मन्दिरों के पुरोहितों आदि की मारपीट की। नूह की गोशाला में बलात् घुसकर ६० के लगभग गौओं को भगा ले गये और अनेक गायों के गले में टायर फंसाकर उनमें आग लगा दी। इस प्रकार उन्होंने अल्पसंख्यकों की भावनाओं को ठेस ही नहीं पहुंचाई अपितु आर्यसमाज को एक चुनौती दी है।

मेवात क्षेत्र से पधारे श्री किशोरसिंह आर्य के नेतृत्व में आर्य-समाज के एक शिष्टमण्डल ने सभा को अपनी दर्दभरी कहानी सुनाते हुए बताया कि इस बर्बरतापूर्वक कार्यवाही में इस क्षेत्र के मन्त्रियों तथा विधायकों आदि का सीधा हाथ तथा समर्थन है। ६ दिसम्बर को श्री खुर्शीद अहमद तथा उनके रिश्तेदारों ने मेवों को सम्बोधित किया तथा उन्हें मन्दिरों आदि को आग लगाने के लिए भड़काया। उनके संकेतों पर शरारती मेव हथियार लेकर हिंसा करने पर उतर आये। इनके दबाव में आकर पुलिस के अधिकारी भी हिंसक भीड़ पर कार्यवाही न करने पर विवश रहे। जिन ईमानदार अधिकारियों ने शरारती मेवों को गिरफ्तार करने का साहस किया उनका मुख्यमन्त्री भजनलाल से सम्पर्क करके अन्य स्थान पर तबादला करवा दिया। मुख्यमन्त्री को अपनी कुर्सी बचाने के लिये मेव विधायकों के सम्मुख झुकना पड़ा।

पलवल के एक साहसी अधिकारी श्री वीरेन्द्र आर्य उपमण्डल अधिकारी बिजली विभाग ने अपनी ड्यूटी करते हुए अल्पसंख्यकों को बचाने का यत्न किया तो उनपर गुण्डों ने घातक आक्रमण करके उनका पांव तोड़ दिया। परन्तु मेव विधायकों के दबाव में आकर उनके ऊपर आक्रमण करने वालों के विरुद्ध अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस प्रकार को हिंसक गतिविधियों को सुनकर अन्तरंग सभा ने शरारती मेवों द्वारा की गई अमानवीय कार्यवाही की घोर निन्दा करते हुए भारत के प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया कि जिस प्रकार अयोध्या में राम मन्दिर के स्थान पर बाबर बादशाह द्वारा बनवाई गई मस्जिद को गिराने पर उत्तरप्रदेश तथा अन्य भाजपा सरकारों को हटाया गया है। उसी प्रकार हरयाणा के मुख्यमन्त्री को भी हटाया जावे क्योंकि वे मेव विधायकों के दबाव में आकर मेवात क्षेत्र की अल्पसंख्यकों के जान माल की रक्षा करने में असफल रहे हैं। उन्होंने हिंसा को भड़काने वाले मेव मन्त्रियों एवं विधायकों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की है। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अन्तरंग सभा को बताया कि उन्होंने इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर रोष प्रकट किया है कि अयोध्या में घटित घटना के बाद जामा मस्जिद के शाही इमाम श्री अब्दुल्ला बुखारी को पाकिस्तान के उच्च आयोग से निर्देश प्राप्त करने पर भी गिरफ्तार नहीं किया। ऐसा करने की बजाये उन्हें दूरदर्शन पर पेश किया जाता है। प्रधान-मन्त्री ने अयोध्या में एक मस्जिद गिराने की तो निन्दा की है, परन्तु मेवात क्षेत्र में अनेक मन्दिरों को आग लगाकर क्षति पहुंचाने की निन्दा करने का उन्होंने साहस नहीं किया। इस प्रकार प्रधानमन्त्री दोहरी नीति अपनाने का परिचय दे रहे हैं। सरकार को पुनः मस्जिद का निर्माण नहीं करवाना चाहिए।

अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्य नेताओं का एक शिष्टमण्डल स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में २० दिसम्बर ९२ को मेवात के दंगापीडित क्षेत्रों का भ्रमण करेगा और भारत के प्रधानमन्त्री को अपनी रिपोर्ट देगा। अन्तरंग सभा ने हरयाणा सरकार से भी मांग की है कि वह मन्दिरों, आश्रमों तथा गोशालाओं की मरम्मत शीघ्र करवाये तथा हिंसा में भाग लेने वालों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही करे।

२. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु ठेकों पर धरना देने का कार्यक्रम

हरयाणा प्रान्त में शराब की बढ़ती हुई सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा गत ५ ६ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रही है। परन्तु सरकार प्रति वर्ष अधिक से अधिक शराब के ठेकों को नीलाम करके तथा ठेकों की शाखायें खुलवाकर जनता को शराब रूपी जहर पिला रही है और शराब की बिक्री से करोड़ों रुपये खजाने में जमा कर रही है। इस प्रकार शराब के ठेकेदार मालामाल तथा किसान मजदूर बर्बाद हो रहे हैं। शराब के विस्तार से वैदिक संस्कृति नष्ट हो रही है और प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। सरकार तथा जनता शराब की गुलाम बन चुकी है। शराब तथा शराबियों की सहायता बिना कोई भी चुनाव आदि जीतना कठिन हो गया है। इसी प्रकार शराब की बोतल दिए बिना सरकारी विभागों में उचित कार्य करवाने में भी रुकावटें आती हैं। भारत को स्वतन्त्र हुए ४५ वर्ष व्यतीत हो गए हैं परन्तु शराबियों के आतंक से हमारी बहनें अकेली रेलवे स्टेशन तक जाने में भी डरती हैं। गांवों में शरीफ आदमी शराबियों से अपनी इज्जत बचाने की चिन्ता में रहता है।

सभा ने इस वर्ष हरयाणा के कोने-कोने में शराबबन्दी प्रचार तथा सम्मेलन आदि करवाकर पंचायतों को प्रेरित किया है और ३५० के लगभग ऐसी पंचायतों से जहां शराब की दुकाने खुली हैं, शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर, कानून के अनुसार, आबकारी कराधान आयुक्त हरयाणा को भिजवा दिए हैं। सभा ने पत्र लिखकर मांग की कि प्रस्तावों बारे सुनवाई प्रत्येक जिले के मुख्यालय में आकर की जावे, परन्तु हरयाणा सरकार सरपंचों को चण्डीगढ़ बलाकर सर्दी के दिनों में परेशान कर रही है तथा लम्बी यात्रा पर फिजूलखर्ची करवा रही है। जो सरपंच किसी कारण चण्डीगढ़ नहीं पहुंच पावेंगे, उनके वैध प्रस्तावों को बहाना बनाकर रद्द कर दिया जावेगा। ग्रामों में झूठे केस बनवाकर सरकारी ठेके खोलने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। सरपंचों को धमकाकर तथा लालच देकर, प्रस्ताव रद्द करवाने का सरकार यत्न कर रही है। देश में शराब बनाने वाली लाबी विभिन्न राजनैतिक दलों पर पूरी तरह से हावी है। शराब-बन्दी समर्थक पूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई की सरकार को तोड़ने में इस लाबी को प्रमुख भूमिका रही थी। इस लाबी को आज ५०० अरब रुपये की शराब देश में बिक रही है। सभा ने राजस्थान और दिल्ली की सभाओं को साथ लेकर उच्चतम न्यायालय में जन हित में शराब के उत्पादन तथा बिक्री पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए जो याचिका दायर कर रखी है, उसका ४ जनवरी को निर्णय होने की सम्भावना है। राज्य सरकारों को अपना पक्ष प्रस्तुत करने का साहस नहीं हो रहा। परन्तु उन्हें अनेक राज्यों में चल रही शराबबन्दी की लहर के समक्ष झुकना पड़ेगा।

अन्तरंग सभा ने वेश्यों द्वारा तथाकथित शराबबन्दी यात्रा पर

आश्चर्य प्रकट किया है कि ये सस्ती लोकप्रियता तथा शराबबन्दी के नाम धनसंग्रह प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से एक बोगस संस्था बना ली है जिसे आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने मान्यता नही दो है क्योंकि आर्यसमाज के नियमों उपनियमों में इस संस्था के गठन का कोई प्रावधान नही है। ये महानुभाव ग्रामों में झोली फैलाकर शराबबन्दी का नाटक खेलकर धन बटोर रहे हैं। परन्तु इन्होंने आज तक अन्य संस्थाओं की भांति अपने आय-व्यय के हिसाब को किसी चार्टर्ड अकाउण्टेंट से ग्राडिट करवाकर प्रकाशित करवाने का भी साहस नही किया। इसी कारण झोलियों द्वारा प्राप्त धन की रसीदें नहीं काट रहे। इन्होंने किसी भी ऐसी पंचायत से शराबबन्दी का विधिवत् प्रस्ताव पारित करवा कर सरकार को जहां इस समय शराब की दुकानें चल रही हैं, नहीं भिजवाया। यदि ये महानुभाव हरयाणा सभा से मिलकर तथा आर्य जगत् के वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी के निर्देशानुसार अनुशासन में रहकर कार्य करे तो इसका स्वागत होगा।

सभा ने निश्चय किया है कि शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु २३ दिसम्बर ९२ को नरवाना जि० जीन्द में शराबबन्दी सम्मेलन किया जावे और उसके बाद शराब के ठेकों को बन्द कराने हेतु उनके सामने धरने दिये जायं। जि० कैथल के क्योड़क ग्राम में ५-११-९२ से चल रहे धरनों को सफल करने के लिये प्रचार आदि करवाकर पूरी शक्ति लगा दी जावे। इसी प्रकार २७ दिसम्बर को पलवल जि० फरीदाबाद तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में जिला स्तर पर शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं की बैठक करके शराब के ठेकों पर धरने देने का कार्यक्रम बनाया जावेगा। यहा सभा के अधिकारी तथा उपदेशक भी पहुंचेगे। फरवरी तथा मार्च में सरकार द्वारा ठेकों की नीलामी रद्द किये जाने के लिए सरकारी-अधिकारियों का घेराव आदि करके सत्याग्रह का श्रीगणेश किया जावेगा।

अन्तरग सभा ने हरयाणा प्रदेश के सभी आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एव अन्य धार्मिक, सामाजिक एवं शराबबन्दी कार्य-कर्त्ताओं से अपील की है कि वे सत्याग्रह की तैयारी पूरी शक्ति से तन, मन तथा धन मे करें। अपने-अपने नगरों तथा ग्रामों से कम से कम ११, ११ सत्याग्रहियों को सूची तथा ११००, ११०० रु० सभा के कार्यालय, दयानन्दमठ, रोहतक भेजकर रसीद प्राप्त कर लेव। किसी को भी बिना रसोद के धन न देवें क्योंकि कुछ अवसरवादी शराबबन्दी के नाटक के नाम पर धन सग्रह कर रहे हैं। इस प्रकार के झोली पसारने वालों से सावधान रहना चाहिए।

जो आर्यसमाजें अपने यहा सत्याग्रह की तैयारी के लिए प्रचार करवाना चाहते हैं उनसे निवेदन किया गया है कि वे यथाशीघ्र सभा को पत्र लिखकर भजनमण्डलो तथा उपदेशकों का प्रचार कार्यक्रम बनवा लेवें।

३. शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करने के लिए महिलाओं को सगठित किया जावेगा।

अन्तरग सभा ने निश्चय किया कि शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए महिलाओं को संगठित करने के लिए, जिलावार महिलाओं की बैठक करके उनका सहयोग प्राप्त किया जावेगा। शराबियों के हाथों सब से अधिक कष्ट महिलाओं को ही झेलना पडता है। शराबी पति शराब पीकर पत्नी के साथ कलह करता है तथा शराब के नशे मे धुत होकर अन्य महिलाओं के साथ भी दुर्व्यवहार करता है तथा अपने खून पसीने की कमाई को शराब खरीदकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को डावाँडोल करता है। जिलों का भ्रमण करके शराबबन्दी आन्दोलन में महिलाओं की भाग-दारी सुनिश्चित की जायेगी और शराब के ठेकों पर धरना देने तक सत्याग्रह करने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

४. खापवार पंचायतों का आयोजन किया जावेगा

शराब के ठेकों पर धरना आदि देने के कार्यक्रम के सफल बनाने हेतु, खापवार पंचायतों का आयोजन किया जावेगा और जिस-जिस खाप में शराब के ठेके चल रहे हैं, वहाँ ग्रामीणों के सहयोग से धरने देकर ठेकों को बन्द करवाया जावेगा। ग्राम डीघल जि० रोहतक के शराबबन्दी कार्यकर्त्ता श्री कृष्ण ने अहलावत खाप की बैठक रखवाने का भार सहर्ष सम्भालना स्वीकार किया। —केदारसिंह आर्य

## गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शराबबन्दी बैठक का आयोजन

जिला कुरुक्षेत्र के आर्यसमाजों एवं शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक २७ दिसम्बर को दोपहर बाद एक बजे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में होगी। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं अन्य अधिकारी पधारेंगे।

## पलवल जि० फरीदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस

२७ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय पलवल में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस तथा शराबबन्दी सम्मेलन होगा। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रधान श्री राजेन्द्र बिसला विधायक इसकी अध्यक्षता करेंगे।

## निडर संन्यासी

('नाज़' सोनोपती)

छोडकर सब ऐश और आराम श्रद्धानन्द ने।
कर दिये आसान, मुश्किल काम श्रद्धानन्द ने॥
दहर में मिलती नहीं उसके अजूबों की मिसाल।
जो दिये थे, काम सर अंजाम श्रद्धानन्द ने॥
ग़म के बादल छट गये, उम्मीद का फूटी किरन।
यों मिटाई जुल्मत-ए-औहाम श्रद्धानन्द ने॥
नाद शुद्धि का बजाकर जाबजा, और चार सू।
वेद का पहुंचा दिया पैग़ाम श्रद्धानन्द ने॥
खंजरों के साये में पलता रहा मर्द-निडर।
खोलकर छाती सहे आलम श्रद्धानन्द ने॥
खिदमते कौमो-वतन के वास्ते फिर जुट गया।
देखकर आग़ाज मे अंजाम श्रद्धानन्द ने॥
मुर्दा कौमों को पिलाकर वेद का आबे-हयात।
पी के खुद वाहदानियत का जाम श्रद्धानन्द ने॥
गगा-तट पर करके कायम इक गुरुकुल कांगड़ी।
साधना की खूब सुबह-ओ-शाम श्रद्धानन्द ने॥
महर्षि के पदचिह्नों पर 'नाज़' चलकर शौक़ से।
देश का रौशन किया था नाम श्रद्धानन्द ने॥

## अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

(रचयिता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)

तज दुर्व्यसन बन सन्त श्रद्धानन्द आये,
कोटि-कोटि मानवों के संकट मिटा गये।
ऊंच नीच, भेदभाव, जातिपाति, छुआछात,
नाशकारी सारी कुप्रथाओं को हटा गये।
बिखरे जो मोती बीन माला में पिरोये गये,
बिछुड़े जनों को गले से मिला गये।
बिखरी अनेक शक्ति एक कर जोड़ दई,
प्रेम पुनीत पाठ वेद का पढ़ा गये।
सदियों से बन्द द्वार खोले श्रद्धानन्द ने,
दिशा भ्रान्त यात्रियों को रास्ता दिखा गये।
डगमगाई नैया नहीं कोई था खिवैया यहां,
ज्ञान ज्योति जगाई पार नैया को लगा गये।
झुक रही संगीन सीना तानकर बढ़े आगे,
फिरंगी कुशासन की नींव को हिला गये।
परतन्त्रता भगाई और स्वतन्त्रता बुलाई गई,
नष्ट अन्याय किया आजादी दिला गये।
तेईस दिसम्बर सन् उन्नीससौ छब्बीस को,
हो गये शहीद खून प्यासे को पिला गये।
पाठ शुद्धि का पढ़ाया चक्र सुदर्शन घुमाया,
पुण्य-पद वेद रूपी दीपक जला गये॥

## हे अजेय बलिदानी

बलि का पथ दिखलाया तुमने,
भारत-भाग्य बनाया तुमने,
स्वतन्त्रता के महा समर में—
अद्भुत शौर्य दिखाया तुमने,

त्याग तपस्या की गरिमा तुम—
तुम थे वीर जयी सेनानी।
हे अजेय बलिदानी॥

शिक्षा के तुम थे विस्तारक,
गुरुकुल के तुम थे संस्थापक,
अज्ञानी घनघोर तिमिर के
बने तुम्हीं हे स्वामि! निवारक,

लिखी लहू से अपने स्वामिन्
तुमने वैदिक धर्म कहानी।
हे अजेय बलिदानी॥

वेद पथिक तुम बने महान्,
गूंजा दिया ऋषि गौरव-गान,
नहीं थके तुम! नहीं झुके तुम,
अविरल चला शुद्धि अभियान,

स्वामी श्रद्धानन्द! तुम्हीं थे—
व्रती, सत्यपालक, अभिमानी।
हे अजेय बलिदानी॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

## भक्त दरियावसिंह चल बसे

कन्या गुरुकुल खरखौदा के संस्थापक एवं कुलपति भक्त दरियावसिंह जी वानप्रस्थ के बाद स्वामी दयामुनि का देहान्त ६ दिसम्बर को प्रातः ५ बजे हो गया। उनकी शवयात्रा में भारी संख्या में उनके अनुयायी पदयात्रा एवं मोटर गाड़ियों के काफिले के साथ शामिल हुए। उनका अन्तिम संस्कार नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालवा ने कराया। संस्कार में गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल भटिण्डू, गुरुकुल कालवा तथा कन्या गुरुकुल लोवा कलाँ की छात्र-छात्राओं ने वेदपाठ किया। उनके ज्येष्ठ पुत्र आचार्य यशपाल संचालक गुरुकुल भटिण्डू एवं खरखौदा ने संस्कार के लिये ५ मन घी एवं ५ मन सामग्री एक मन चन्दन दिया तथा चारों गुरुकुलों को पांच-पांच सौ रुपये दान दिये। चिता में अग्नि उनके पौत्र अजयकुमार ने दी। उनकी आयु ९० वर्ष की थी। वे त्यागी, तपस्वी, कर्मठ कार्यकर्ता आर्यसमाज के आन्दोलनों में भाग लेते हुए अनेक बार जेल गये।

## वानप्रस्थी हरद्वारीलाल जी का निधन

गुरुकुल सिंहपुरा जि० रोहतक के संस्थापक महाशय हरद्वारीलाल जी वानप्रस्थी का मस्तिष्क की नली फटने से दिनांक २० दिसम्बर ९२ को निधन हो गया। वे एक सप्ताह से हस्पताल में उपचाराधीन थे। आप आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रेमी थे। अपने लिखे भजनों द्वारा प्रचार करते थे। आपने गुरुकुल सिंहपुरा की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई। आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक के मन्त्री पद पर भी रहे। आपने विधिवत् वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर गुरुकुल के निकट अपनी कुटिया में निवास किया। इनकी अन्त्येष्टि में सैंकड़ों आर्य नरनारी सम्मिलित हुए। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। केदारसिंह आर्य

# गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक–आर्य संस्कृति के प्रतीक–स्वतन्त्रता संग्राम के बहादुर नेता—स्वामी श्रद्धानन्द

(लेखक—डा० शान्तिस्वरूप शर्मा पत्रकार कुरुक्षेत्र)

स्वतन्त्रता-संग्राम के बहादुर जरनैल गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द के शिष्यों में से एक थे जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में भारी काम किया। जो सदैव मानवता का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अफ्रीका में सफलता के पश्चात् भारत लौटे। राष्ट्रपिता गुरुकुल पहुंचे और उन्होंने महात्मा मुन्शीराम के चरण छूकर प्रणाम किया और कहा—"मैं महात्मा मुन्शीराम के चरणों में सिर झुकाना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। वह मेरे लिये पूजा के योग्य हैं।" महात्मा मुशीराम जो संन्यास लेकर १९१६ मे स्वामी श्रद्धानन्द बन चुके थे। इन्होंने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में भारी काम किया जो स्वर्णाक्षरों में लिखा जा चुका है।

सन् १९१९ में रोलट एक्ट के काले कानून का सारे भारत में भारी विरोध प्रकट किया गया और स्वामी जी ने देहली में जलूस की अगवानी की।

अंग्रेजी सरकार ने जब स्थिति बिगडती हुई देखी तो उन्होंने अपनी सेना को पीछे हटा लिया। वह भारत की स्वतन्त्रता के लिये हिन्दू-मुसलमानों के संगठन को आवश्यक समझते थे। इसलिए उन्होंने जामा मस्जिद दिल्ली में मुसलमानों के भारी जनसमूह को स्वतन्त्रता के बारे में सम्बोधित किया था।

अमृतसर के जलियां वाले बाग के खूनी कांड से सारे पंजाब में भारी आतंक फैला था। उस समय स्वामी जी वहाँ पहुंचे और दुःखी लोगों को साहस दिलाया। ऐसे वातावरण में आपने घोषणा की कि अखिल भारतीय कांग्रेस का वार्षिक सम्मेलन अमृतसर में ही होगा। वह इस अधिवेशन की स्वागत कमेटी के अध्यक्ष बनाये गये। आपने सन् १९१९ के अधिवेशन का पहली बार स्वागत भाषण हिन्दी में पढा जो नई बात थी। उस समय स्वामी जी के भाषण की गांधी जी ने बहुत प्रशंसा की।

सन् १९२१ में आपने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। आप सच्चे देशभक्त थे। आपने कहा था जो व्यक्ति परतन्त्रता के विरुद्ध भाग नही लेता वह सच्चा देशभक्त नहीं। मैं स्वामी दयानन्द का शिष्य हूं जिन्होंने देशभक्ति की शिक्षा दी है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एक क्रान्तिकारी नेता थे उनका सारा जीवन क्रान्ति में बीता। उनका तप और त्याग सारे देश को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। स्वामी जी क्रान्ति के पैदावार थे जो क्रान्ति के प्रतीक बन गये। स्वतन्त्रा संग्राम के वह एक बड़े लीडर थे। देश उनका प्राण था। उन्होंने विदेशी राज्य के विरुद्ध देश के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने को झोंक दिया था। वह आदर्शवाद की जलती हुई चिगारी थे।

भारत के पहले स्वतन्त्रता-संग्राम से एक वर्ष पहले सन् १८५६ में फाल्गुण की कृष्ण त्र्योदशी के दिन एक पुलिस अफसर नानकचन्द जी जो अंग्रेजी सरकार के वफादार थे, के घर एक बालक का जन्म हुआ जो संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये और भारत को परतन्त्रता और समाज की कुरीतियों से टकरा गया।

मुन्शीराम के मां बाप उसे बहुत प्यार करते थे। उसमें शराब पीने, मांस खाने और दूसरी बुराइयां पैदा हो गईं और वह नास्तिक बन गया। उनके माता पिता को भारी चिन्ता हुई परन्तु उन्हें सुधार का कोई भी रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। काशी में उन दिनों एक जादूगर संन्यासी के नाम की धूम मची हुई थी। वह महान् तेजस्वी आत्मा स्वामी दयानन्द थे। मुन्शीराम की माता अपने बेटे को लेकर वहा गई परन्तु अधिक सत्संग न हो सका। मुन्शीराम के पिता बरेली में तबदील कर दिये गये। कुछ दिनों पश्चात् १८७१ में स्वामी दयानन्द सरस्वती बरेली पहुंचे, वहां पर उन्होंने स्वामी जी का भाषण सुना। आपका नास्तिकवाद समाप्त हो गया। उन्होंने अपने जीवन चरित्र में लिखा कि मेरी सभी शंकाएं मिट गईं। स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रतिज्ञा की कि वह अपना सारा जीवन वैदिक धर्म प्रचार मे लगायेंगे।

सन् १८८३ में महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के पश्चात् आपने १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना की और शिक्षा को नया मोड़ दिया। आप आर्यसमाज के प्लेटफार्म से हिन्दुओं की कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। आपने सन् १९१६ में संन्यास धारण कर लिया और महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द का बड़ा मान करते थे। सन् १९२१ के नान-कोपरेशन आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुए और जेल भेज दिये गये।

अंग्रेजों ने सारे देश में हिन्दू-मुसलमान झगड़े कराये। स्वामी जी ने भारत में शुद्धि आन्दोलन चलाया। एक मुसलमान नवयुवक ने आपको २३ दिसम्बर सन् १९२१ को पिस्तौल से गोली मारकर शहीद कर दिया। हम उस महान् पुरुष को श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

(पृष्ठ २ का शेष)

यह भारत के निवासियों की एकता का सूचक है। स्वामी जी के इस शुद्धि चक्र से मुसलमान बहुत प्रभावित थे। वे स्वामी जी को उनके निवास से बुला-बुलाकर ले जाते थे और उनके उपदेश कराते थे। ४ अप्रैल १९१९ का शुभ दिन तो एक ऐतिहासिक दिवस ही बन गया, जिस दिन मुसलमान स्वामी जी को अपनी प्रसिद्ध जामा-मस्जिद में ले गए और उनका भाषण कराया। इस अवसर पर डा० अंसारी, हकीम अजमलखां, मुहम्मद अली, शौकत अली आदि मुसलमानों के नेता भी मौजूद थे। इस दिन यह पहला मौका था कि किसी गैर मुसलमान का इस मस्जिद से भाषण कराया गया हो। स्वामी जी ने वेद का एक पवित्र मन्त्र (त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो) बोलकर व्याख्या की—'हम सब एक पिता की सन्तान हैं, वही हम सब का पालन-पोषण करता है, हम सबकी माता भी वही है। हम सब ने उसी की गोद में बैठकर प्रेम से सुखों की याचना करें' स्वामी जी इस भाषण से प्रभावित होकर तीसरे दिन (६-४-१९१९) में फतहपुरी की मस्जिद से भी स्वामी जी का भाषण कराया। एक मुसलमान ने खड़े होकर यह प्रश्न पूछा—वेद बड़े हैं या कुरान। प्रश्न बड़ा ही उलझन में डालने वाला था। फिर भी स्वामी जी ने बहुत शांतभाव से उत्तर दिया—"मैं उस पुस्तक को बड़ा मानता हूं, जिसमें मानव-मात्र को भाईचारे के रूप में माना गया हो और कर्म की प्रधानता का उपदेश दिया गया हो, जन्म को नहीं।" स्वामी जी के उत्तर को सुनकर प्रश्नकर्त्ता और कुछ भी प्रश्न न कर सका।

इससे पूर्व भी पं० लेखराम के शहीद होने के बाद पंडित जी द्वारा संकलित ऋषि दयानन्द की जीवनी की भूमिका में स्वामी जी ने विधर्मी भाइयों को सुझाव देते हुए कहा था—"मेरे बिछुड़े मौहम्मदी और ईसाई मित्रो! अज्ञान की घोर अन्धेरी रात्रि में, जब कि हाथ पसारा भी नहीं सूझता था, उस समय तुमने अपने भाइयों का साथ छोड़कर अन्धों के हाथों में हाथ पकड़ा दिया था। अब जबकि वेदरूपी सूर्य के प्रकाश में तुम्हें यह विदित हो गया कि तुमने गलती की थी, तब विपरीत मार्ग को छोड़कर सन्मार्ग के पथिक बन जाओ और सन्मार्गदर्शक महर्षि के जीवन को ध्यान से पढो, जिसने तुम्हारे लिए ही नहीं वरन् जीवन भर सत्यपथ की खोज की ओर निज जीवन को भी हेय समझकर बलिदान कर दिया।"

इसके लेखक, दलितों के शुभचिन्तक, मानवमात्र के हितैषी स्वामी ने एक लम्बे समय तक सतत कितना संघर्ष किया होगा, यह कोई मनीषी पुरुष ही समझ सकता है। इस न्याय व सत्य में अटूट श्रद्धा रखनेवाले निश्छलहृदय साधु के शुद्धि आन्दोलन से कतिपय कट्टरपन्थी मुस्लिम क्षुब्ध हो गये और स्थान-स्थान पर उपद्रव होने लगे, तो धर्म निरपेक्ष के पक्षधर तथा तुष्टीकरण की नीति के हिमायती कांग्रेसी नेताओं ने हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए एक कान्फ्रेंस बुलाई और इन दोनों सम्प्रदायों के मनोमालिन्य को दूर करने का प्रयास किया गया। इसी विचार चर्चा में कुछ कट्टरपन्थी मुस्लिम नेताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द की ओर उंगली उठाई और कहने लगे—इसने ही हिन्दू-मुस्लिम एकता में पलीता लगाया है। तत्पश्चात् भरी सभा में खड़े होकर यह घोषणा की—भाइयो! मैं शुद्धि आन्दोलन को वापिस करने को सहर्ष तैयार हूं, पर शर्त यह है—मेरे मुस्लिम भाई भी अपनी तबलीग बन्द कर दें। तब मौलाना शौकत अली खड़े होकर बोले—इस्लाम तो आलमगीर मजहब है, हम तबलीग कैसे रोक सकते हैं? इस पर स्वामी जी भी गर्जकर बोले—यदि आप तबलीग नहीं रोक सकते तो शुद्धि आन्दोलन को कौन रोक सकता है? क्योंकि वैदिक धर्म भी सार्वभौम धर्म है। इसके बाद एकता कान्फ्रेंस समाप्त हो गई और झगड़े की जड़ कौन है? इसे समझकर भी तुष्टीकरण के पक्षधर कांग्रेसी चुपचाप अपने-अपने घर चले गये और कोई निर्णय नहीं कर सके।

## महान् निर्भीक वीर योद्धा—

किसी विद्वान् ने लिखा है—"वीरों के बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते, वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिए, बिना किसी के दूध पिलाए और बिना किसी के हाथ लगाए तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर खड़े हो जाते हैं। उनका समस्त जीवन भीतर ही होता है, बाहर तो हीरे-जवाहरात की खानों की ऊपरी जमीन की तरह कुछ भी दृष्टि में नहीं आता।"

ये विचार हमारे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द पर पूर्णतः चरितार्थ होते हैं। वे कितने वीर योद्धा व निर्भीक थे, इसके कतिपय प्रसंग पढ़िये—

(क) मुलताना डाकू का आतंक—स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस स्थान पर गुरुकुल की स्थापना की थी, वहां चारों तरफ घोर जंगल था, हिंसक सिंह, व्याघ्र, रीछ आदि का प्रतिक्षण खतरा बना रहता था और उस भयंकर जंगल में खूंखार डाकू भी रहते थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की सुरक्षा के लिए स्वामी जी ने कभी भी सरकारी सहायता की अपेक्षा नहीं की। ईश्वर पर सच्ची आस्था को संजोये महात्मा गुरुकुल चला रहे थे। गुरुकुल से पूर्व दिशा में सुल्ताना नामक डाकू रहता था। उसकी वारदातों का श्रवण भी कभी-कभी सुनने में आता रहता था। उसके कारनामों से सरकार भी भयभीत रहती थी किन्तु निरशस्त्र ईश्वर विश्वासी को लेशमात्र भी भय नहीं होता था। एक बार इस डाकू ने गुरुकुल को निशाना बनाकर डाका डालने की सूचना गुरुकुल में भिजवा दी। बरसात की ऋतु थी। गुरुकुल से पूर्व की ओर बहता नाला भरकर चल रहा था। डाकू की सूचना पाकर स्वामी जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों की टोलियां बनाई और सबको लाठियों की ट्रेनिंग दे देकर गुरुकुल की रक्षार्थ चारों तरफ सन्नद्ध कर दिया। और स्वयं भी उनके साथ ही रहे। चार-पांच मशाल जला दी गईं। डाकू अपने निश्चित दिन पूर्व की ओर से आया और चारों तरफ ब्रह्मचारियों को लाठी लिये देखकर वह स्वामी जी से आकर कहने लगा—यह क्या हो रहा है? ये इतने आदमी मशाल व लाठियां लेकर घूम रहे है। क्या आप लोगों के पास मेरा नोटिस नहीं पहुंचा है? स्वामी जी ने बहुत ही धैर्य से उत्तर दिया—हमें डाकू सरदार सुल्ताना का डाका डालने का नोटिस मिला था, हम लाठी, भाले लेकर उसका सामना करने के लिए खड़े हैं। तेजस्वी निर्भीक साधु के मुख से निकले शब्दों का सुल्ताना डाकू पर ऐसा जादू सा प्रभाव हुआ कि वह डाका डालने की बात तो भूल गया और घोड़े से उतरकर साधु के चरणों में झुककर क्षमा मांगने लगा और वापिस चला गया।

(ख) रोलेट एक्ट के विरोध में ३० मार्च १९१९ को महात्मा गांधी ने पूर्ण हड़ताल करने का आह्वान किया। दिल्ली में तांगा या ट्राम तक बन्द थीं। रेलवे स्टेशन के एक ठेकेदार ने दुकान बन्द करने से इन्कार कर दिया। इस पर भीड़ और पुलिस में कुछ कहा सुनी हो गई। पुलिस ने दो स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया। भीड़ में उत्तेजना फैल गई। स्वामी जी ने उत्तेजित भीड़ को शान्त किया और एक जलूस के रूप में जैसे ही चान्दनी चौक के घण्टाघर के पास पहुंचे तो अचानक गोली चलाने की आवाज से भीड़ आगे बढ़ने से रुक गई। गोरखे सिपाही आगे संगीनें ताने खड़े थे। दो गोरखे सिपाहियों ने भीड़ का नेतृत्व करने वाले स्वामी जी की छाती पर संगीनें लगाकर कहा—सावधान! तुम आगे बढ़े तो हम तुम्हें छलनी-छलनी कर देंगे। यह निर्भीक साधु उनके मारने की धमकी से लेशमात्र भी नहीं डरा और एक हाथ से ४० हजार से अधिक भीड़ को शान्त करते हुए और दूसरे हाथ से छाती की ओर संकेत करते हुए—मैं यह छाती खोले खड़ा हूं, यदि तुम्हारे में हिम्मत है तो गोली चलाओ। मौत के खौफ से न डरने वाले इस वीर की दहाड़ को सुनकर गोरखों की हिम्मत गोली चलाने की नहीं हुई। सहसा एक अंग्रेज घुड़सवार उस स्थल पर पहुंचा, जिसे देखकर गोरखों ने अपनी संगीनों के मुंह नीचे कर लिए और एक भयंकर काण्ड होते-होते टल गया।

(ग) इसी प्रकार अमृतसर के जलियावाले बाग की नृशंस घटना से आबालवृद्ध नर नारी थरथर कांपते थे। कांग्रेस के अधिवेशन की तिथियां व स्थान निश्चित हो गया था। किन्तु कोई भी कांग्रेसी नेता

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# गुड़गांव में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

गुड़गांव आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वाधान में आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं की ओर से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान समारोह २६-१२-९२ (शनिवार) को गुड़गांव में विशाल शहीदी जलूस के साथ आयोजित किया जा रहा है। समारोह में आर्य संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी अध्यक्ष वैदिक संस्थान, डा० धर्मपाल जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मानकचन्द भजन मण्डली, अन्य विद्वान् वक्ता, गुरुकुल के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, आर्य वीर दल, विद्यालयों के छात्र, छात्राएं तथा बड़ी संख्या में आर्यजन पधारेंगे।

ओमप्रकाश चुटानी
महामन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्नत सीधी आकृति तथा संन्यासी वेश में उच्च भव्य मूर्ति, लम्बा कद, शाहाना शक्ल, चमकती हुई अन्तर्भेदिनी आंखें और कभी-कभी दूसरों की निर्बलताओं पर मुख पर आजाने वाली झुंझलाहट की झलक—इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हूं? प्रायः यह तस्वीर मेरी आंखों के सामने आ जाती है।"

### पं० मदनमोहन मालवीय

"जैसे तेगबहादुर की मृत्यु से हिन्दू जाति में जागृति आई थी और औरंगजेब का जोर टूटा था, वैसे ही हमें यह चीज़ सीखनी है कि हिन्दू जाति का प्रत्येक मनुष्य शुद्धि और संगठन के काम में लग जायें।"

### मौलाना मोहम्मद अली

"गोरखों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल देने वाले उस बहादुर देशप्रेमी का चित्र अपनी नजर के सामने रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। ऐसी उम्दा मौत के मिलने से उन्हें तो कुछ नहीं लगता, मगर हमारे लिए यह महान् दुःखदायक घटना है।"

अन्त में पुनः लाला लाजपतराय के शब्दों के साथ अपने इस लेख को समाप्त करते हैं। उस समय जब स्वामी श्रद्धानन्द के अमर बलिदान पर सब लोग बुरी तरह से रो रहे थे, लाला जी ने अपनी सिंह गर्जना से आर्यों में नई स्फूर्ति भरी थी। उन्होंने कहा था कि—"तीन दिन से स्वामी जी के मृत शरीर पर रो-रोकर फूल चढ़ा रहे हैं, परन्तु स्वामी जी के शरीर में से जो आवाज़ आ रही है, उसे सुनिये। वह आवाज़ है कि इस अनार्यपन को दूर करो। रोना अनार्यपन है। रोना बन्द करो। अब तो उद्यम होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द के कतरे से, उनकी हड्डियों से दरख्त उगेगा। जिसकी जड़ें पाताल में जायेगी। मित्रो! रोना-धोना समाप्त करो। प्राइवेट रिश्तों में हम तमाम उम्र रोयेंगे। यह समय रोने का नहीं है। यह समय यह दिखाने का है कि जिसने यह समझा था कि स्वामी जी का खून कर शुद्धि बन्द होगी, वह वृक्ष स्वामी जी ने खून से सींचा जाकर, भारत में बढ़ और फैलकर संसार भर में फैलेगा। किसी शख्स ने लिखा था कि स्वामी जी की अर्थी यमुना में बहेगी। परन्तु याद रखना चाहिए कि यमुना इतनी निर्दयी नहीं है। यमुना शुद्धि की अर्थी को बहाती नहीं।"

आज उनका बलिदान दिवस फिर यही सन्देश लेकर आया है कि—

मिलाओ शुद्ध दिल से शुद्ध करके लख्ते जिगरों को।
तेरे नूरे नज़र नज़रों से पिन्हा होते जाते हैं॥
और
न हर्गिज़ चाहिये कभी तहकीर शुद्धि की।
बड़ी मुश्किल से आई है नज़र तस्वीर शुद्धि की॥
यह वह पौधा है जिसको खून से सींचा था।
मुसाफिर भी गये मिलकर वही तहरीर शुद्धि की॥

(पृष्ठ ७ का शेष)

इस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनने को तैयार नहीं था। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं का मनोबल गिर चुका था। ऐसी दयनीय दशा को देखकर यह वीर संन्यासी आगे बढ़ा और अधिवेशन के गुरुत्तर भार को स्वीकार किया। इस निर्भीक साधु ने अमृतसर में रहकर ही अधिवेशन की सारी व्यवस्था की, और अमृतसर में घर-घर जाकर अधिवेशन का प्रचार करके जनता का मनोबल बढ़ाया तथा अधिवेशन को सफल बनाया। एक संस्कृत के कवि ने ऐसे दिव्यपुरुषों के विषय में ही लिखा है—सोत्साहानां समुदोऽपि कुल्यायते, वह्निस्तस्य जलायते तत्क्षणम् अर्थात् जो उत्साही व निर्भीक व्यक्ति होते हैं, उनके लिए संसार में कुछ असम्भव नहीं होता। वे असम्भव को भी सम्भव कर दिखाते हैं। उनके सामने अथाह समुद्र क्षुद्र नाले का रूप धारण कर लेता है और अग्निरूप भयंकर आतंकवादी भी जल की भांति शान्त हो जाते हैं।

आदर्श आचार्य का छात्रों के साथ पितृवत् वात्सल्य—

गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्रों को अपने माता-पिता की भांति स्नेह न मिले, तो वे गुरुकुल के वातावरण में पूर्णतः घुलमिल नहीं पाते। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ अत्यधिक स्नेह करते थे। इसके दो उदाहरण देखिए—

(१) गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव पर बच्चों के अभिभावक प्रायः आया ही करते थे। एक बार ब्रह्मदत्त नामक ब्रह्मचारी के पिता उत्सव पर नहीं आये। ब्रह्मचारी का चेहरा उदास देखकर उसे अपनी कुटिया पर बुलाया और ब्रह्मचारी हंसता हुआ लौटकर आया और अपने साथियों से बोला—हम भी अपने पिता जी से मिलकर आ रहे हैं। यथार्थ में स्वामी जी माता-पिता से भी बढ़कर अपने छात्रों से स्नेह करते थे। महाकवि कालिदास के शब्दों में—'विनयाधायकात्, भरणाद्, रक्षणादपि स पिता' आदर्श चरित्र एवं विद्या सिखाने, भरण-पोषण करने और उनकी रक्षा करने के कारण स्वामी जी छात्रों के सच्चे पिता थे।

(२) जब गुरुकुल का कोई छात्र रोगी हो जाता था, उस समय उसकी सेवा का कार्य अन्य छात्र किया करते थे, किन्तु उनकी देखभाल का कार्य स्वामी जी स्वयं करते थे। एक बार देवदत्त नामक एक ब्रह्मचारी को बुखार हो गया। उसकी सेवा में सोमदत्त नामक छात्र लगा हुआ था। बीच-बीच में स्वामी जी देखते रहते थे। दिवंगत सोमदत्त विद्यालंकार लिखते हैं—रोगी को उल्टी आते देख मैं चिलमची उठाने लगा वह पहले से ही भरी हुई थी। मैं दौड़कर भंगी को बुलाने चला गया। जब वापिस आया तो मैंने देखा—स्वामी जी रोगी के पास झुके खड़े हैं, छात्र उल्टी कर रहा है, स्वामी जी अपने हाथों की अंजली में उल्टी करा रहे हैं। तत्पश्चात् स्वामी जी हाथ धोकर रोगी छात्र के सिर को दबाने लगे। मेरे को आता देख स्वामी जी बोले—तुम कहां गये थे? भंगी को बुलाने गया था, मैंने कहा। स्वामी जी ने मुझे आदेश दिया—तुम जाकर आराम करो और किसी अन्य छात्र को भेजो। यहां रोगी के पास मैं नहीं पहुंचता तो बिस्तर के सारे कपड़े ही खराब हो जाते। मैं शर्मिन्दा एवं हतप्रभ होकर जमीन की ओर आंखें गड़ाये पछताता रहा किन्तु उनका प्रतिकार करने का अवसर बीत गया था।

ऐसे छात्रहितैषी आदर्श आचार्यों की सेवाएं कैसे भूली जा सकती हैं। स्वयं स्वामी जी ने एक बार कहा था—"भारत को सेवकों की आवश्यकता है, लीडरों की नहीं। श्री राम को अपने कार्यों में सफलता मिली, क्योंकि श्री राम को हनुमान जैसा सच्चा सेवक मिला। स्वामी दयानन्द का काम अधूरा पड़ा है। यह काम भी तभी पूरा होगा, जब दयानन्द रूपी राम को हनुमान जैसे सच्चे सेवक मिलेंगे।" (सम्पादक)

[दयानन्द सन्देश से साभार]

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३  पंजि० सं० P/RTK-४९  दूरभाष ९,९६, ७७, ५३, ०९९



ओ३म्
# सर्वहितकारी
रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री  सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री  सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०  अंक ६  २८ दिसम्बर, १९९२  वार्षिक शुल्क ३०)  (आजीवन शुल्क ३०१)  विदेश में ८ पौंड  एक प्रति ७५ पैसे

# आर्य नेताओं द्वारा मेवात क्षेत्र में भ्रमण का विवरण

(डा० रघुवीरसिंह आर्य गोप्रेमी ग्राम खरावड़ जि० रोहतक)

दिनांक ६-१२-९२ को अयोध्या की दुर्भाग्यपूर्ण त्रासदी की आड़ में दिनांक ७-१२-९२ को मेवात में जो साम्प्रदायिकता का नग्न ताण्डव हुआ है। इसने महमूद गजनवी वाला इतिहास दोहरा दिया है। जब महमूद गज़नवी ने सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ा तो वहां से दो सौ मन सोना और अनगिनत हीरे जवाहरात अपने साथ ले गया। वह उस विशाल मन्दिर में तोड़-फोड, लूटने के साथ-साथ सैकड़ों पुजारियों को भी कत्ल करके चला गया था। सन् १९४७ में देश का बटवारा हुआ। मुसलमानों को उनका अधिकार देकर अलग पाकिस्तान बना दिया। किन्तु थोड़े से मुसलमान हमारे नेताओं की भूल के कारण रह गये। आज वह इस देश में रहकर यहां का अन्न खाकर साम्प्रदायिकता का जहर फैला रहे हैं। अपने अतीत की ओर नहीं देखते। मुगल शासनकाल में यहां हिन्दू-आर्य लोगों के साथ बडे जुल्म हुए हैं। यहां हिन्दुओं के जनेऊ तुड़वा-तुड़वाकर, उनकी चोटी कटवाकर उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। उनकी कन्याओं को जबरन अपने हमामों में बुलाया गया। किसी हिन्दू की कोई भी सुन्दर कन्या हुई उसी को उठा ले गये। जो हिन्दुओं के मन्दिर थे उनको तुड़वा-तुड़वाकर अपनी मस्जिद बना ली। अयोध्या में भी हिन्दू राम मन्दिर तोडकर बनाई हुई यह बाबरी मस्जिद है। यदि कुछ लोगों ने इसको खण्डित करने की यह भूल कर भी दी तो यहां रहने वाले मुसलमानों को इतना बड़ा वाहिला नहीं मचा देना चाहिए था, मन्दिर-मस्जिद और बन सकते हैं। किन्तु इसकी प्रतिक्रिया जो हुई वह इतनी दुःखदायी है कि इतिहास इसको भुला नहीं सकता, वह ऐसे लोगों को क्षमा भी नहीं कर सकता। एक ऐसी मस्जिद को लेकर जहां कभी नमाज पढ़ी नहीं गई। उसके ध्वंस के बदले पाकिस्तान में सैकड़ों हिन्दू मन्दिरों को जला दिया। तोड़-फोड़कर उनको ध्वस्त कर दिया। सैकड़ों अल्पसंख्यक हिन्दुओं के घर जला दिए, उनको लूटा गया, उनकी हत्या कर दी। यही प्रतिक्रिया बंगला आदि इस्लामी देशों में हुई। किन्तु इस देश के मेवात क्षेत्र में जो हुआ वह इतना दुःखदायी है कि मैं आंखों से देखी सभी सच्ची-सच्ची घटनाओं का विवरण लिख रहा हूं।

इन दुःखद घटनाओं के पश्चात् मेवात के वेद प्रचार मण्डल वालों ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रोफेसर शेरसिंह जी (भूतपूर्व राज्य रक्षामन्त्री भारत सरकार) तथा परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज गुरुकुल झज्जर को अपने यहां बुलाया था। मैं भी स्वामी सर्वानन्द जी वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक को साथ ले उक्त महापुरुषों के साथ मेवात में यह सब देखने गया था। वहां ८० प्रतिशत मेव मुसलमान और २० प्रतिशत हिन्दू लोग बसते हैं। इन अल्पसंख्या वाले हिन्दुओं पर दिनांक ७-१२-९२ का कहर बरसा है। हरयाणा के इन आर्य नेताओं के वहां मेवात प्रचार मण्डल के प्रसिद्ध आर्य लोग एक जत्थे के रूप में जिनमें श्री सत्यपाल आर्य प्रधान, श्री किशोरसिंह आर्य, श्री पदमचन्द आर्य, श्री भानीराम मंगला आर्य, श्री सत्येन्द्रप्रकाश आर्य, श्री ओमप्रकाश जी आर्य आदि अनेकों महानुभाव थे। चौबीस कार-जीप गाडियां थीं। उन सब के आगे ओ३म् के भगवा झण्डे लगे हुए थे। हम पहले नूंह पहुंचे। जहां एक दर्जन हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कर रखा था। उनकी मूर्तियां तोड़ रखी थीं, उनमें आग लगा रखी थी। एक गोशाला में आग लगा दी थी। ७० गौओं को मुसलमान हांककर ले गये। गौओं की गर्दनों में जलते हुए टायर डालकर उन्हें जिन्दा तडपा-तडपाकर जलाया गया। हिन्दुओं के सामने खुली सडक पर खड़ा करके उनको कत्ल किया गया। गोशाला के संचालक स्वामी सत्यसेन मुनि महाराज इतने भयभीत थे कि उनके मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे। उन्होंने थोड़ा बोलकर दुःखी वाणी से इतना कहा कि मैं बोलने में भयभीत हूं। यहां के हिन्दू मुसलमानों से बहुत दबे हुए हैं। एक रविदास मन्दिर को जला उसकी दीवार पर मक्का पब्लिक स्कूल लिखा हुआ देखा। मैंने वह लिखे हुए शब्द प्रोफेसर साहब को दिखलाए। कहीं मदीना लिखा हुआ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे यह हरयाणा में छोटा पाकिस्तान हो। एक मन्दिर में हनुमान की विशाल मूर्त्ति को खण्डित कर रखा था। खण्डित मूर्त्तियों पर पेशाब किया गया। रामायण की पुस्तक जला रखी थी। माइक तोड़-फोड़ रखा था। पुजारी रो रहा था। पुलिस हमारे साथ थी। जहां-जहां यह नग्न ताण्डव हुए, उपद्रव हुए, मन्दिर जलाए गए वहां सभी जगह पुलिस की टुकड़ियां देखीं।

मांडीखेड़ा गए वहां गांव के चारों ओर जितना भी पशुओं का चारा पूलों और कड़वी में आग लगा उन बड़े-बड़े चारा भण्डारों को जला दिया। फायर ब्रिगेड के ड्राइवर का सिर फाड़ दिया गया। हम उजीना ठाकुर लोगों के गांव गए। वहां के ठाकुर किशनसिंह जी पुत्र ठाकुर मित्रसिंह जी का अपहरण कर उसकी हत्या कर दी। वह बडा होनहार तगड़ा जवान था। उसका सारा गांव शोक मना रहा था वहा से हमने देखा पिनगवा के अस्तबल व पथवारी सदियों पुराने मन्दिरों को तोडा, उसमें आग लगाई। शिव की मूर्त्ति मन्दिर के बाहर सडक के साथ खण्डित हुई पड़ी थी। वहां बाजार को भी लूटने का प्रयास किया गया। वहां के दुकानदार इतने भयभीत थे कि वहां से पलायन करने की सोच रहे थे। उनको प्रो० साहब ने आश्वासन दिया कि वह पलायन करके न जाये। सारा हरयाणा तुम्हारे साथ है।

फिर हम नगीना पहुंचे वहां सन्तोषी मां का मन्दिर हमे तोड़ा हुआ दिखलाया। जैन मन्दिर पर आक्रमण किया गया। श्री राजेन्द्रसिंह नाम के एक सज्जन व्यक्ति के शरीर पर इतनी गहरी चोट थी कि महीनों नहीं उठ सकता। वहां आर्यसमाज मन्दिर में प्रो० साहब और स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा आर्यवीर संन्यासी परम गोभक्त स्वामी अमरानन्द जी महाराज ने भी अपने हृदय के उद्गार प्रकट किए। वहां से हम भादस पहुंचे। वहां स्वामी अमरानन्द जी महाराज के विशाल दुमंजिले आश्रम को जो बड़े-बड़े पत्थरों द्वारा निर्माण करवाया मजबूत वैदिक स्थल था, उसको बम्बों से ध्वस्त किया गया। वहा एक गाय भी जान बूझकर इसलिए काटी गई कि वहा मेवात

क्षेत्र में स्वामी जी महाराज वैदिक धर्मप्रचार तथा गोरक्षा के कार्यों में अग्रणीय हैं। इनकी बड़ी ख्याति है। यह निर्भीक संन्यासी हैं। ईश्वर की आप पर दया दृष्टि है। उस दिन आपको कोई सज्जन किसी बाहरी काम के लिये जिद करके बुलाकर ले गया। अन्यथा वे पापी, अन्यायी, गुण्डे, गोहत्यारे लोग आपको कत्ल भी कर देते। इस वैदिक आश्रम के निर्माण कार्यों में कई लाख रुपये लगे थे। बहुत बड़ा वैदिक साहित्य भी था। स्वामी जी की हत्या के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किया, किन्तु 'जिसको राखे साइयां मार सके न कोय' वाली बात हुई।

फिर हम पुनहाना पहुंचे जहां मेवात आर्य वेद प्रचार मण्डल का बहुत बड़ा कार्यालय था। जहां संग्रहालय, केन्द्रीय रिकार्ड, संगीत का सामान, विशाल पुस्तकालय, औषधालय, फर्नीचर, दान पात्र, बिस्तर आदि कुल मिलाकर ५५४१०० रुपये का धन सम्पत्ति थी वह पूर्ण रूप से जला दी। जो ऊपर ओ३म् का ध्वज था वह भी जला दिया। इस विशाल भण्डार में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी जो स्वामी ओमानन्द जी महाराज के साथ थे, उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की जली हुई प्रति के कई अर्धजले पृष्ठ उठाकर स्वामी जी को दिखलाए। स्वामी जी ने उन्हें अपने साथ रख ले चलने को कहा। पुनहाना में जितनी भी घटना घटी है वह अत्यन्त लज्जा और खेदजनक है। विस्तार से हजारों की संख्या में सशस्त्र गुण्डों ने यहां सीताराम बगीची, छोटेलाल बगीची, देवी मन्दिर, लाल दास मन्दिर, हनुमान मन्दिर, आर्यसमाज आदि आधे दर्जन धर्म स्थलों को दूसरे नगरों की भांति जहां तोड़-फोड़कर लूटा, उनमें आग लगाई, बुरी तरह नष्ट किया, वहां शिव, हनुमान, राम, सीता, देवी-देवताओं की मूर्त्तियों को खण्ड-खण्ड किया और उनपर टट्टी-पेशाब किया। जो भी सामान उनको हाथ लगा वही लूटकर ले गये। मिट्टी का तेल छिड़ककर पूले डाल आग लगा दी गई। सभी कुछ स्वाहा कर दिया गया। मन्दिर के पुजारियों को रस्सियों से बान्धकर उनको बेरहमी से पीटा गया। उनको जीवित जलाने का प्रयास भी किया गया। कस्बे की तेल मिल को लूटकर फिर उसमें आग लगा दी। ४५० पीपे सरसों के तेल से भरे हुए उठाकर ले गए, जितनी खली थी वह ले गये। जो तेल भण्डार में था उसकी टूटी तोड़ उसे बहा दिया, आग लगा दी। हमने देखा बड़ी-बड़ी मशीन जली हुई थीं। ऊपर छत भी जली तथा फटी हुई थी। इस मिल के स्वामी श्री मंगतराम जी की दस लाख रुपयों की क्षति हुई है। साथ में इनका यूरिया खाद का गोदाम था वह लूट लिया। श्री नानकचन्द जी के मिट्टी के तेल वाले डिपो को आग लगा दी गई। अन्य भी दर्जनों मकान-दुकानों को लूटा और जला दिया गया।

स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने पुनहाना जनसभा में भाषण देते हुए कहा कि देवियां रो रही थीं। उनकी बहू-बेटियों के साथ गुण्डों ने बलात्कार किया। स्वामी जी ने कहा कायर बनकर मत रहो। बुजदिल को कोई जीने नहीं देता। एक देवी ने सभा में लज्जा-वश भयभीत और दुःखी हृदय से कहा कि मन्दिर भी बन सकते हैं। मूर्त्तियां भी और बनवाई जा सकती हैं किन्तु हमारी देवियों की सुरक्षा तो नहीं। हमारा जो अपमान किया गया है, इसका क्या उपाय है मुझे इस बात का उत्तर दो। बसों में हिन्दू लड़कियों को छेड़ते हैं। अध्यापिकाओं का घोर अपमान किया है, उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। एक सज्जन ने कहा कि पं० श्रीचन्द को मरा हुआ जान कर छोड गए। हरिजन कालोनी में गुण्डों ने बम्ब फेंककर एक सात वर्ष के बालक कृष्णकुमार को घायल कर दिया। हिन्दू लोगों को बदनाम करने के उद्देश्य से मस्जिद की कुछ ईंट जान बूझकर उखाड़ दी हैं। कस्बे में जल सप्लाई लाइन काट दी, और यह घोषणा करवा दी कि हिन्दुओं को कोई भी मुसलमान दूध नहीं देगा। जो दे उसपर ५५२ रुपये जुर्माना होगा। मेवात में हिन्दू लोगों को धन-सम्पत्ति की जो क्षति हुई है वह एक करोड़ रुपयों से अधिक की बतलाई गई है। सबसे आश्चर्यजनक खेद वाली बात तो यह है कि वहां का प्रशासन खड़ा होकर तमाशा देखता रहा। स्थानीय मन्त्री के घनिष्ठ सम्बन्धी व रिश्तेदारों को वहां इस काण्ड में देखा गया, वही भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे। उनके साथ एक डी.एस.पी. भी था। वर्तमान हरयाणा सरकार में मेवात क्षेत्र के जो मुस्लिम मन्त्री है उन शकूर-अल्ला खां नाम की इसमें बहुत भूमिका रही है। वह वहां बड़ा बदनाम व्यक्ति है। सारे हिन्दू उसकी निन्दा कर रहे थे। दूसरा मन्त्री भी दोषी बतलाया गया।

यही लोग वहां के पूर्व मन्त्री अजमतखां, खुर्शीद अहमद, तैयब-हुसैन इत्यादि भी बदनाम हैं। कई वर्ष पहले रंगला राजपुर फिरोजपुर झिरका में एक बूचड़खाना भी बनाया गया था। गुड़गांव आर्यसमाज के प्रधान श्री सत्यपाल जी आर्य के प्रयत्न से वह नहीं चलने नहीं दिया। फिर भी वहां मेवात क्षेत्र में प्रतिदिन विशेषकर नगीना की पहाड़ियों में सैकड़ों गायें काटी जाती हैं। वहां गोहत्या का यह धन्धा जोरों पर है और हरयाणा सरकार का गोहत्या प्रतिबन्ध का नियम खोखला प्रमाणित हो जाता है। जबकि वहां के मेव मुसलमान इस नियम की दिन दहाड़े खुले आम धज्जियां उड़ा रहे हैं, और हरयाणा सरकार व हरयाणा के मुख्यमन्त्री कुछ भी करने में असमर्थ हैं। वे कुछ भी नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें मुसलमानों के वहां के विधायकों के वोट चाहिएं, और यह सब वोटों का चक्र है।

आज मेवात के अल्प संख्या में हिन्दू लोगों के हालात इतने खराब हैं, इतने भयभीत है कि वहां से पलायन करने को सोच रहे हैं क्योंकि उनको और कोई मार्ग नहीं मिल रहा। वहां प्रशासन मुस्लिम है। पुलिस व अन्य सरकारी अधिकारी सभी वहां के इन मन्त्रियों की बातों को मानते हैं। अतः वहां हिन्दुओं की कोई सुनवाई नहीं, अन्यथा इतना बड़ा काण्ड होने पर, हिन्दुओं की धन-सम्पत्ति, देवियों की इज्जत लूटी जाने पर भी अभी तक कोई कानूनी कार्रवाई नहीं। अपराधियों को पकड़ा न जा सका, क्योंकि उक्त मन्त्री इनको बचाने में संलग्न हैं। पुनहाना जनसभा को सम्बोधित करते हुए प्रो० शेरसिंह और स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने पुनः उनको आश्वासन दिया कि वे पलायन न करें, और पलायन करके कहां जायेंगे, क्या पाकिस्तान में? चिन्ता मत करो, मत डरो, सारा हरयाणा तुम्हारे साथ है। हमारे एक संकेत पर लाखों लोग इकट्ठे हो जायेंगे। तुम्हें नहीं, फिर इन्हीं लोगों को छोड़कर पाकिस्तान जाना होगा। क्योंकि मुसलमानों के लिए अलग पाकिस्तान बना हुआ है। यह लोग हमारी दया से यहां रह पाये थे। पलवल आर्यसमाज के एक सज्जन ने कहा कि मेवात में साम्प्रदायिकता का इतना नग्न ताण्डव होने पर जहां २४ मन्दिर लूटे और जलाए गए धन-सम्पत्ति लूटी जलाई गई, जहां गोशाला को आग लगाई, गौएं जलाईं, उनको कत्ल किया गया। आज २०-१२-९२ को हरयाणा का मुख्यमन्त्री रेवाड़ी आया और यहां हिन्दुओं की जो दुर्दशा की गई, उनके दुःख-दर्द को सुनने के लिए न आ सका। जो यह कहता है कि मुझे एक चींटी के मरने का भी दुःख होता है। लोगों ने यह बात सुनकर भजनलाल की पुरजोर शब्दों में निन्दा की। जबकि पुनहाना वेदप्रचार मण्डल द्वारा उनको ही नहीं, राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री तक प्रार्थना-पत्र द्वारा सूचित किया जा चुका है। प्रो० शेरसिंह जी ने कानून की एक धारा की चर्चा करते हुए कहा कि वहां के दो मन्त्रियों को तथा भजनलाल को हरयाणा का मुख्य मन्त्री बना रहने का कोई भी अधिकार नहीं रह गया। जो अल्पसंख्यक लोगों का जान-माल की रक्षा न कर सके उसे शासन करने का अधिकार नहीं। प्रो० साहब और स्वामी जी दोनों ने १० जनवरी को होडल में हरयाणा की सर्वखाप पंचायत बुलाने का निर्णय लिया जो सर्वसम्मति से पारित हो गया। प्रो० साहब ने फिर कहा भजनलाल प्रशासन फेल हो चुका है। उसको त्यागपत्र दे देना चाहिये। आर्यसमाज वह है जिसने हैदराबाद निजाम के और लोहारू के नवाब के छक्के छुड़वा दिए थे। उन्हें अपने घुटने टेकने पड़े और सभी बातों को स्वीकार करना पड़ा। न्याय की दृष्टि से देखा जाये तो इतना बड़ा काण्ड होने पर भजनलाल को स्वयं अपना त्यागपत्र देना चाहिये। वह अपने मुख्यमन्त्री पद के अधिकार को खो चुका है। हरयाणा के आर्यसमाज के इन नेताओं को यह देखकर बड़ा भारी दुःख हुआ है। इसकी प्रतिक्रिया जो होगी वह बतलायेगा। क्योंकि मेवात में आर्य वेद प्रचार मण्डल का कार्यालय, जिसमें बहुत बड़ा वैदिक साहित्य भरा पड़ा था। वेद, सत्यार्थप्रकाश तथा ओ३म् के झण्डे को जलाया गया है। यह हमारे लिए, आर्यजगत् के लिए एक चुनौती है। आर्यसमाज अन्याय को कभी सहन नहीं करता।

# नरवाना जिला जीन्द में शराबबन्दी सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देश पर आर्यसमाज नरवाना के अधिकारियों ने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर २३ दिसम्बर ९२ को शराबबन्दी सम्मेलन का सफल आयोजन किया। इसकी तैयारी के लिए हरयाणा शराबबन्दी सम्मेलन के संयोजक श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त तथा आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना की प्रबन्ध समिति के प्रधान प्रिंसिपल गुगनसिंह जी १३ दिसंबर को आर्यसमाज नरवाना गये थे और नरवाना के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया और उन्हें शराबबन्दी सम्मेलन को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करने की प्रेरणा की। इस अवसर पर जिला जीन्द वेद प्रचार मण्डल के संयोजक श्री स्वामी रतनदेव जी भी उपस्थित थे। उन्होंने भी इस सम्मेलन को अपना आशीर्वाद देते हुए १४ से २३ दिसम्बर तक का पूरा समय प्रचार अभियान के लिए समय देने की घोषणा की। तदनुसार आर्यसमाज की ओर से एक शराबबन्दी तथा समाजसुधार समिति का गठन किया गया तथा सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, पं० ईश्वरसिंह तूफान एवं पं० रामनिवास आर्य की भजन मण्डली के साथ १४ दिसम्बर ९२ को ग्राम दनोन्दाकलां, सच्चाखेडा, भिरवेवाल, बडनपुर १५ दिसम्बर को दबलैन, फरैनकला, कलोदांकलां, नेहरा, १६ दिसम्बर को अमरगढ, रामगढ़ ढोबी, फुलियाकलां, १७ दिसम्बर को लोन, धरोदी, कर्मगढ, १८ दिसम्बर को धमतानसाहब, कालवान, ढानी टेकसिंह, खरल, १९ दिसम्बर को बेलरखा, हमीरगढ़, उझाना, २० दिसम्बर को भाणा ब्राह्मण, कुराड़, धनोरी दातावाला, २१ दिसंबर को झील, हथो, डूमरखां कलां, सुदकैनकलां तथा २२ दिसम्बर को काबरछा, गैंडाखेड़ा, घोघडया, उचाना, तारखा आदि में शराबबन्दी प्रचार की धूम मचा दी। ग्रामों के नरनारियों पर प्रचार का काफी प्रभाव हुआ और अनेक शराबियों ने स्वयं शराब पीना छोडकर इस शराबबन्दी प्रचार यात्रा में सम्मिलित रहे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि इस बार अपने ग्राम में शराब का ठेका किसी मूल्य पर भी नहीं खुलने देंगे।

२३ दिसम्बर को प्रातः ११ बजे पुरानी अनाज मण्डी नरवाना में विशाल शराबबन्दी सम्मेलन स्वामी रतनदेव जी महाराज की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। इसमें कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरल जि० जीन्द, आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना की छात्राएं तथा गुरुकुल कुम्भाखेड़ा जि० हिसार एवं आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना के छात्रों के अतिरिक्त नरवाना उपमण्डल के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। मण्डी होने के कारण व्यापारी आदि भी इस शराबबन्दी सम्मेलन का सन्देश सुन रहे थे। सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल जी, पं० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के शराबबन्दी पर व्याख्यान तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान एवं जिला वेदप्रचार मण्डल जीन्द के भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु जी, पं० रामनिवास जी के प्रभावशाली भजन हुए। कन्या गुरुकुल खरल की कु० रतनकौर जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में समाज में बढ़ती हुई शराब, दहेज तथा मांस भक्षण आदि की सामाजिक बुराइयों का जमकर खण्डन किया। गुरुकुल की छात्राओं ने मनोहर गीत सुनाए। गौशाला खनौरी जिला संगरूर के संचालक स्वामी निर्मलानन्द जी तथा अनेक गौशालाओं के संस्थापक स्वामी गोरक्षानन्द जी ने गोरक्षा पर बल देते हुए कहा कि भैंस का दूध पीने से विकार आता है और अनेक बुराइयों में फंस जाते हैं। परन्तु गाय का दूध पीने से सात्विक प्रवृत्ति बनती है और बुराइयों से बचा जा सकता है। अतः प्रत्येक परिवार को अपने घर में कम से कम एक गाय रखनी चाहिए। यदि किसी कारण कोठियों में गाय रखने की सुविधा न हो तो अपने मजदूरों आदि को अपनी ओर से गाय दे देवें जिससे गायों की रक्षा भी हो सके तथा मजदूरों को भी घी दूध मिल सके। आप ने वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि गाय का घर से निकल जाना और घर में शराब के आने से विनाश को बुलाना है। अतः यदि कल्याण चाहते हो तो घर से शराब को निकालो तथा गाय को बुलाओ। गाय को मारने वालों को शीशे की गोली से मारने का वेद का उपदेश है। परन्तु मेवात क्षेत्र में शरारती मेव दिन दहाड़े गायों को मारते हैं और हरयाणा सरकार उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही न करके पाप की भागी बन रही है। हमें स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर शराब का परित्याग करके गोरक्षा का संकल्प करना चाहिए।

स्वामी रतनदेव जी ने अपने भाषण में उपस्थित नरनारियों को सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान को सफल करने के लिए पूरी शक्ति लगाने पर जोर दिया और सभा के अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि वे जिला जीन्द में सत्याग्रह की तैयारी हेतु १० से २४ जनवरी ९२ तक ५२ ग्रामों में शराबबन्दी प्रचार करके शराबबन्दी सम्मेलन करेंगे। इस कार्य के लिए अपना पूरा समय देंगे।

हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हमें उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करके अपने जीवन की बुराइयों को त्यागकर स्वामी दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने का यत्न करना चाहिए। आपने शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिये जनता को नारा दिया कि अब नहीं तो फिर कब ? "करो या मरो" हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाकर ही दम लेंगे। जो सरकार अपनी जनता को शराब रूपी जहर पिलाती है, उसका नाश एक दिन अवश्यमेव होगा। आपने श्री भजनलाल के दामाद को शराब के कारखाने का मालिक, श्री ओमप्रकाश चौटाला के सम्बन्धी को शराब का थोक वितरक तथा श्री बंसीलाल के भतीजे मा० श्रद्धानन्द को शराब का मुख्य ठेकेदार होने पर लताड़ते हुए कहा कि इन नेताओं ने हरयाणा को बदनाम कर रखा है। इन स्वार्थी नेताओं से हरयाणा की दुर्गति हो रही है। ये नेता किसान मजदूरों को शराब पिलाकर बेहोश बनाये रखकर राज्य करना चाहते हैं। इन्हें जनता के कल्याण की चिन्ता नहीं है। आपने अपने भाषण में सरपंचों से अनुरोध किया कि वे शराबबन्दी प्रस्तावों के अनुसार आगामी वर्ष ग्रामों में शराब के ठेके किसी भी मूल्य पर न चलने देवें और शराब की बुराई दूर करके आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक कल्याणकारी पग उठावें। आर्यसमाज आपका प्रहरी है। अतः इसके सन्देश के अनुसार शराबबन्दी सत्याग्रह में योगदान करें, इसी में सभी का भला है।

प्रो० शेरसिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में इस सम्मेलन में बोलते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द की भांति हमें कल्याणकारी मार्ग अपनाना होगा। अन्यथा राष्ट्र पर एक बहुत बडा खतरा आने वाला है स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन चला कर राष्ट्र को बचाने का यत्न किया था। यदि हम भारतविभाजन के समय शुद्धि आन्दोलन में अपनी पूरी शक्ति लगाते तो आज हरयाणा में जो मेव मुसलमान मौलवियों के बहकावे में आकर अपने हिन्दु भाइयों पर अत्याचार कर रहे यह दिन देखना पड़ता।

प्रो० साहब ने कहा कि आज ८० हजार ग्रामों में पीने का पानी नही मिलता परन्तु शराब प्रत्येक ग्राम में मिलती हैं गरीब जनता शराब के फन्दे में फंस कर बर्बाद हो रही हैं और सरकार शराब की १० करोड की बिक्री से राज्य चलाना चाहती है। परन्तु हर्षद मेहता जैसा ठग १०-हजार करोड रुपया बैंकों से हेरा फेरी करके अकेला डकार गया। पाकिस्तान में शराब बन्द है परन्तु अपने भारत में नवयुवकों को शराबी बना कर सैनिक शक्ति कमजोर की जा रही है। पाकिस्तान हम पर आक्रमण करने तैयारी में जुटा है अतः हमें शराब बन्दी सत्याग्रह करके सबसे पहले हरयाणा की पवित्र धरती से शराब पर प्रतिबन्ध लगवाना होगा जिससे हमारे नव युवक शराब से दूर रहकर शक्तिशाली बन सकें।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने शराबबन्दी सत्याग्रह के कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हरयाणा में फरवरी के अन्तिम

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आशा व निराशा के झूले में--

# मेरी महाराष्ट्र यात्रा

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर-152116

मुझे अकस्मात् किसी कार्यवश महाराष्ट्र जाना पड़ा। आजकल यात्रा में भीड़-भाड़ के कारण जो कठिनाइयां हैं उसके कारण लौटने के लिए मैंने कुछ दिन रुककर आरक्षण की प्रतीक्षा की। इस समय का लाभ परिचितों से मिलने व वैदिक धर्म-प्रचार के लिए किया। वैसे मुझे कुछ ही दिनों में दोबारा महाराष्ट्र में वेदप्रचारार्थ जाना ही है। आर्य प्रतिनिधि सभा को पहले ही वचन दे रखा है।

अब मैं उदगीर, रामलिंग गुरुकुल, धाराशिव, परली वैजनाथ, गुंजोटी, औराद व हैदराबाद होकर आया हूं। इस यात्रा में अनेक आर्य पुरुषों से भेंट हुई। मैंने यह अनुभव किया कि महाराष्ट्र में आर्य धर्म के लिए श्रद्धा रखने वाले अनेक उत्साही व योग्य युवक हैं। योग्यता व वैदिक सिद्धान्तों का गम्भीर ज्ञान रखने वाले जितने युवक महाराष्ट्र में हैं उतने हरयाणा, पंजाब व देहली में नहीं हैं। यदि कोई कहे कि यह कथन ठीक नहीं लगता। हरयाणा, देहली, पंजाब में तो कई मास्टर, प्रोफैसर, प्रिंसिपल व गुरुकुलों के स्नातक यदा कदा आर्यसमाजों में भाषण देते देखे जाते हैं।

मैं भी जानता हूं कि ऐसे Ready Made रेडी मेड लेक्चर देने वाले इधर अधिक ही होंगे परन्तु आर्य धर्म के लिए निरन्तर कार्य करने वाले योग्य व्यक्ति महाराष्ट्र में ही अधिक हैं। श्री हरिश्चन्द्र गुरु जी की वर्षों की तपस्या का यह फल है कि आर्य विचारधारा वाले युवकों के शिविर वहां लगते ही रहते हैं। इन शिविरों में गिनती पूरी करने के लिए किसी आर्य स्कूल या डी०ए०वी० स्कूल के छात्रों को तो लाया नहीं जाता। न ही ये शिविर पर्वतों की ठण्डी हवाओं में लगाए जाते हैं। इन में भाग लेने वाले वही युवक होते हैं, जिन पर वैदिक धर्म का रंग होता है।

उदगीर में भाई श्यामलाल जी की स्मृति में चल रही शिक्षण संस्थाओं में प्रसिद्ध विद्वान् पं० गणेशदेव जी कार्यरत हैं। उनके पास कई आर्य युवक आते जाते रहते हैं। मैं ऐसे कई युवकों से मिला जो इस संस्था में नहीं पढ़ते परन्तु विश्वविद्यालय की ऊंची कक्षाओं के छात्र हैं। इन्हें वैदिक सिद्धान्तों का अच्छा ज्ञान है। गम्भीर दार्शनिक विषयों पर चर्चा छिड़ जावे तो ये युवक इसमें रस लेते हैं।

ऐसे ही एक चर्चा पं० गणेशदेव जी ने छेड़ दी तो हमारी चर्चा में पास बैठे दो युवकों ने पूरा पूरा भाग लिया। आर्यसमाज उदगीर में मेरा एक प्रवचन हुआ। एक अन्य समारोह में भी कुछ विचार रखे। उपदेशक विद्यालय लाहौर के पुराने विद्वान् श्री पं० प्रहलाद जी व स्वर्गीय भाई बंसीलाल जी के सुपुत्र सदाविजय जी से भी भेंट हुई। आचार्य सदाविजय जी अपनी योजनाओं के अनुसार कार्य कर रहे हैं। आस्तिकवाद का मराठी अनुवाद बहुत बढ़िया कागज पर आप ही ने छपवाया है। आचार्य वेदकुमार वेदालंकार जी से भी भेंट हुई।

मैंने एक बात देखी कि सर्वत्र आर्य भाई संगठन के विषय में निराश हैं। उन्हें कोई ऐसा नेता दिखाई नहीं देता जो समाज को एक सूत्र में बांध सके। भारत भर में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व महात्मा नारायण स्वामी जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त हो और जो दिन रात आर्यसमाज के लिए ही सोचे और आर्यों को परस्पर जोड़े। अपनी प्रतिष्ठा व गद्दी की रक्षा के लिए दिन रात जोड़ तोड़ में लगे कई व्यक्ति हैं परन्तु सिर जोड़ने वाला कोई नेता रहा नहीं। महाराष्ट्र में भी कई अच्छे-अच्छे आर्य भाइयों के परस्पर मतभेद हैं। दूरियां दूर करने वाला कोई है नहीं। मेरा इन बन्धुओं से तीस वर्ष से सम्बन्ध है। कई भाइयों ने मुझे कहा कि मैं इधर समय देकर सबको निकट लाऊं परन्तु गांठे जो पड़ चुकी हैं उन्हें खोलने के लिए बड़ा यत्न करना होगा। धार्मिक जोश व आध्यात्मिक प्रवृत्ति होने से दूरियां दूर करवाई जा सकती हैं। सत्ताधारियों के चक्कर काटने वाले नेता यह कार्य नहीं कर सकते।

मुझे पं० प्रहलाद जी ने कहा कि अब पंजाब, हरयाणा व हैदराबाद से आर्यसमाज के दीवाने नहीं निकलेंगे, अब तो कर्नाटक से ऋषि दयानन्द का मिशन फैलाने वाले आगे आयेंगे। उनके इस कथन में बहुत सच्चाई है। इस समय कर्नाटक में सिद्धान्त निष्ठा सुशिक्षित आर्य युवक बहुत उत्साह से सेवा कर रहे हैं। वे उत्तर भारत के आर्यसमाज के झगड़ों से अप्रभावित हैं। यदि इसी प्रकार व उत्तर के विवादों से दूर रहे तो कुछ कर दिखावेंगे। वहाँ स्वामी ब्रह्मदेव जी बहुत सूझ-बूझ से इन सुशिक्षित युवकों में वैदिक धर्म प्रचार कर रहे हैं।

महाराष्ट्र में कई वानप्रस्थी हैं। सभी स्वतन्त्रता सेनानी हैं। वे सब यदि मण्डलियां बनाकर ग्राम-ग्राम घूम तो संगठन को विशेष लाभ हो। गुंजोटी आर्यसमाज के प्रधान श्री बेधड़क जी भी दीपमाला पर आश्रम बदलने वाले हैं। मेरा वहां भी एक व्याख्यान हुआ। यह कस्बा हुतात्मा वेदप्रकाश की जन्मस्थली है। यहां कई सुयोग्य आर्य भाई समाज सेवा में लगे हुए हैं। बारह वर्ष से मराठवाड़ा में सूखा पड़ा हुआ है। इस कारण लोग अकाल-पीड़ित हैं। इसी कारण औराद का आर्य मन्दिर अधूरा पड़ा हुआ है।

महाराष्ट्र में भी कई स्थानों पर समाज मन्दिरों में स्कूल घुसे हुए हैं। इनके झगड़े हैं। कहीं-कहीं समाज की दुकानों व भवनों पर बदमाशों के कब्जे हैं। स्थान-स्थान पर समाज मन्दिर 'बाबरी मस्जिदें' बन चुके हैं। किराए-भाड़े का लोभ ले डूबा है। आर्य मन्दिरों की रक्षा कौन करे? सरकार के दरबार में जाने से तो यह कार्य न होगा। कोई तेजस्वी प्रतापी संन्यासी आगे लगे तो कुछ बात बने।

रामलिंग का गुरुकुल चल रहा है। कुछ लोग सहयोग भी कर रहे हैं परन्तु विवाद मिटे नहीं' जब तक अपनी भूलों को स्वीकार कर उन्हें दूर करने का साहस न किया जावे तब तक विवाद कैसे मिटें। आचार्य सुभाष जी यदि श्रीमान् हरिश्चन्द्र गुरु जी का सहयोग व आशीर्वाद लेकर चलें तो गुरुकुल बहुत उन्नति कर सकता है। गुरुकुल भूमि दर्शनीय है।

आर्यसमाज परली यदि संस्थावाद के कुचक्र से बचा रहा तो यह समाज महाराष्ट्र, कर्नाटक व आंध्र तीनों प्रान्तों के लिए ज्योति केन्द्र बनेगा। परली वालों के पास श्रीमान् डा० काले जैसा सुयोग्य व कर्मठ ऋषि भक्त हैं। श्री पं० प्रशान्त जी के रूप में एक विद्वान् युवक हैं। श्री आणाराव पाटिल जैसा श्रद्धालु समाजसेवी है। समाज के पास कई उदार धनी मानी, दानी सज्जन हैं। प्रधान जी की सारे नगर में साख है। आर्यसमाज ने २१ एकड़ भूमि लेकर एक वानप्रस्थ आश्रम, योग साधना केन्द्र की स्थापना की है। यहां गुरुकुल भी खुल सकता है। वेद अनुसंधान केन्द्र आदि कई योजनायें हैं। महात्मा त्यागानन्द जी वानप्रस्थी यहां बड़ी श्रद्धा से आश्रम को सुरम्य बनाने में लगे हैं। यह स्थान दो तीन वर्षों में सबको खींचेगा।

आर्यसमाज परली की अपनी व्यायामशाला है। समाज के पास अच्छे-अच्छे युवक हैं। दिन-रात आर्य मन्दिर खुला रहता है। मेरे भी दो व्याख्यान हुए। डा० काले जी ने एक सुयोग्य विचारशील युवक नामदेव जी को वैदिक धर्मी बनाया है। ईश्वर की कृपा से यह युवक एक दिन बहुत चमकेगा। पहले यह युवक १४ वर्ष तक वारकरी सम्प्रदाय में रहकर पूरे महाराष्ट्र में कीर्तन करता रहा है। आचार्य उदयवीर जी के ग्रन्थों से बहुत प्रभावित है। संस्कृत का अच्छा ज्ञान है। राजनीति शास्त्र का एम. ए. है। दर्शनों का पण्डित है। यह मनीषी युवक ऋषि मिशन का भूषण बने, यही मेरी कामना है। एक समारोह एक वक्ता ने जब इन्दिरा जी, राजीव जी, संजय गांधी की रट लगा दी तो यह वहां से निराशा लेकर लौटा। मुझे कहा कि मैं तो वहां तत्त्वज्ञान की चर्चा सुनने गया था परन्तु·········। आओ, हम अपना कर्त्तव्य पहचानें।

### स्वतन्त्रता सेनानियों का चिकित्सा भत्ता बढ़ा

चंडीगढ़, २४ दिसम्बर (ट्रिब्यू)। हरयाणा सरकार ने राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों को १५० रु० वार्षिक की बजाय ४५ रु० प्रतिमास की दर से चिकित्सा भत्ता देने का निर्णय किया है।

आज यहां यह जानकारी देते हुए स्वतंत्रता सम्मान समिति के अध्यक्ष रामसिंह जाखड़ ने कहा कि ये निर्देश गत पहली नवम्बर से लागू होंगे।

### मेवात की घटनाओं पर सर्वखाप पंचायत ३ जनवरी को

अयोध्या कांड के पश्चात मेवात में हुई हिंसक घटनाओं और वहाँ २३ धार्मिक स्थलों तथा एक गौशाला, एक वैदिक आश्रम को शरारती मेवों द्वारा शान्ति पहुंचाने की समस्या पर विचार करने के लिए ३ जनवरी ९३ को ग्राम मण्डकोला जि० फरीदाबाद में सर्वखाप सर्व-पाल पंचायत का अयोजन किया गया है। होडल की पंचायत स्थापित हो गई है।

इस पंचायत में हरयाणा के अतिरिक्त दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश की अनेक खापों के कार्य कर्ता सम्मिलित होंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारी भी पधारेंगे।

हरिश्चन्द्र शास्त्री

### आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

सभा की अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार वार्षिक अधिवेशन १४ फरवरी को होना निश्चित हुआ है। अतः आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपने समाज की ओर से वेदप्रचार दशांश आदि की प्राप्य राशि शीघ्र भेज देवें जिससे प्रतिनिधियों को समय पर अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जावे।

सूबेसिंह सभामन्त्री

### शुभ विवाह

श्री प्रेमचन्द नहरा एडवोकेट के सुपुत्र श्री राकेश का शुभ विवाह चौ० बलवीरसिंह बुद्धवार की सुपुत्री कुमारी अरुणा के साथ दिनांक २५-१२-९२ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

विवाहोत्सव में नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया। चौ० होश्यारसिंह एडवोकेट, श्री रामेहर राठी, ठेकेदार जयसिंह दांगी, प्रो० ओमप्रकाश हुड्डा तथा डा० सोमवीर सभा उपमन्त्री ने विवाह में भाग लिया। सभा को इस अवसर पर १०१ रु० दान दिया।

चौ० रामेहर खुगाई

(पृष्ठ ३ का शेष)

सप्ताह में शराब के ठेकों की नीलामी आरंभ होते ही जिले वार कार्यक्रम बनाकर शराब रूपी जहर के ठेकों की नीलामी को रुकवाने के लिए पूरी शक्ति के साथ संघर्ष किया जावेगा। हम अपने उद्देश्य के लिए अधिक से अधिक संख्या में गिरफ्तारी देकर सत्याग्रह का श्रीगणेश करेंगे। आपने बताया कि १४ फरवरी ९३ को दयानन्द मठ रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन बुलाया गया है जिसमें सत्याग्रह को अन्तिम रूप दिया जावेगा। आर्यसमाज अब जाग चुका है और हाथी की भांति अपनी शक्ति का उपयोग करके शराब को बढ़ावा देने वाली सरकार को हैदराबाद तथा हिन्दी आन्दोलन की भांति झुकने पर विवश कर देगा। अतः हम सभी आर्यों को मिलकर तथा अनुशासन का परिचय देकर आज से ही इस संघर्ष में जुट जाना चाहिए।

आपने महिलाओं का आह्वान किया कि वे भी अपनी आन्ध्रप्रदेश की बहनों की भांति शराबबन्दी के मैदान में कूद जावें और ठेकों पर धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करवाकर हरयाणा प्रदेश तथा अपनी रक्षा करें।

अन्त में आर्यसमाज के मन्त्री श्री रामकुमार आर्य ने आर्य संन्यासियों स्वामी रतनदेव जी, स्वामी गोरक्षानन्द जी एवं सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, श्री सूबेसिंह जी सभामन्त्री, श्री विजयकुमार जी तथा श्री सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री का तथा कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि नरवाना आर्यसमाज सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देगा।

केदारसिंह आर्य

# जल फेंकतें ही समिधा में लपटें उठीं

—जगदीश आर्य, रोहतक, २० दिसम्बर

गोल दायरे में इकट्ठी भीड़ में से खड़ा एक व्यक्ति एकाएक गर्दन को झटके देकर इधर-उधर घुमाने लगा। इस प्रेतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति पर उन्होंने मंत्र पढ़कर नारियल घुमाया और जल के छींटे मारे छींटे पडते ही नारियल से तेज अग्नि की एक भभक निकली और सारी भीड़ में सन्नाटा छा गया।

यही नहीं, उन्होंने पास में सजी हवन कुण्ड की समिधाओं पर सामग्री बुरकी और मंत्र पढ़कर घी डाला तो समिधाओं (लकडियों) में वे अपने आप ही तीव्र अग्नि प्रज्ज्वलित हो गयी।

ये दोनों घटनाएं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय परिसर स्थित 'फैकल्टी हाउस' में सबकी आंखों के सामने घटी। लेकिन इन्हें करने वाले कोई सिद्ध महात्मा या दैवीय शक्तिवाले पुरुष नही थे, बल्कि हरयाणा विज्ञान मंच के दो कार्यकर्ता थे, जिन्होंने तंत्र पर आधारित 'गुरुडम' को गलत करार देते हुए उपरोक्त दोनों कार्यों की वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित व्याख्या की। पहले प्रयोग में नारियल की जटाओं में पहले से ही सोडियम का चने के बराबर टुकड़ा छिपा दिया गया था। सोडियम जल के सम्पर्क में आते ही खुद आग पकड़ लेता है। जैसे ही नारियल पर छींटे पडे तो उसने आग पकड ली।

हवन कुण्ड में तीव्र अग्नि अपने आप पैदा हो जाना भी विज्ञान का एक करिश्मा था। हवन सामग्री में सबकी नजरें बचाकर उन्होंने पोटाशियम परमैंगनेट (दानेदार लाल दवा) मिला दी थी। हवन सामग्री व समिधाओं पर घी की बजाय घी जैसा दीखनेवाला ग्लिसरीन डाला गया था। इन दोनों में रासायनिक क्रिया होने से दोनों तुरन्त आग पकड़ लेते हैं।

ये और इन जैसे अनेक चमत्कार हरयाणा विज्ञान मंच द्वारा यहां आयोजित 'चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या' कार्यशाला के दौरान दिखाये गये। इस तीस दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का उद्देश्य तंत्र-मंत्र और जादू-टोने के नाम पर अंधविश्वासी लोगों को ठगनेवाले तथाकथित चमत्कारियों का पर्दाफाश करना था तथा आम लोगों को यह बताना था कि वे इनके बहकावे में न आये।

आज समाप्त हुई राज्य स्तरीय यह कार्यशाला हरयाणा राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, चंडीगढ़ के सहयोग से हरयाणा विज्ञान मंच द्वारा समायोजित की गई थी।

हरयाणा राज्य के दूर-देहात से आये करीब सौ मंच कार्यकर्त्ताओं ने इसमें हिस्सा लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य जहां तथाकथित चमत्कारों की असलियत बताना रहा, वहीं ऐसे व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना भी था, जो आग खाने, भभूत पैदा करने, आग पर चलने, जीभ से त्रिशूल आर-पार करने जैसे तथाकथित चमत्कार स्वयं करके दिखा सकें। इसके पीछे की वैज्ञानिक प्रक्रिया को उजागर कर सके।

कार्यशाला का एक अहम् उद्देश्य उन कार्यकर्ताओं के बीच अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करना भी रहा, जिन्होंने २ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक, भारत ज्ञान-विज्ञान जत्था ९२ के दौरान हरयाणा के गांव-गांव में जाकर प्रदर्शन किए थे।

गांव बोचड़िया (महेंद्रगढ़), अचीना, कनीना, ककरौला, मुकलाणा (हिसार), पट्टूकरा, जटाई बौदकलां, चमारिया आदि हरयाणा के देहात से आये अनेक कार्यकर्त्ताओं ने इन चमत्कारों को उत्सुकता से तो देखा ही, पूरी लगन से इनका प्रशिक्षण भी इन तीन दिनों में लिया।

श्री सतबीर नागल ने एक त्रिशूल अपनी जीभ के आर-पार करके दिखाया। असल में उन्होंने इस त्रिशूल का मध्य भाग अंग्रेजी के अक्षर 'यू' की तरह मोड़ लिया था। उन्होंने 'यू' के मध्य अपनी जीभ डाली और 'यू' वाला भाग मुंह के भीतर छिपाये रखा तथा जीभ थोडी बाहर रखी। देखने में ऐसा महसूस होता था मानो त्रिशूल जीभ के आर-पार हो गया है।

इस अनोखी कार्यशाला में मंच के चमत्कारों के प्रशिक्षण वेद प्रिय द्वारा दिखाए गए अनेक चमत्कार भी थे, जिनमें तलवारों पर खड़े होना, कीलों की सेज पर सोना, सुई धागे द्वारा त्वचा से सीलकर ७० किलोग्राम तक सामान को उठाना आदि शामिल था।

श्री वेदप्रिय ने इन सभी चमत्कारों के पीछे छिपे वैज्ञानिक तथ्यों से, उपस्थित लोगों को परिचित कराया।

उन्होंने बताया कि हरयाणा विज्ञान मंच १९८७ से अस्तित्व में आया है। हरयाणा में वैज्ञानिक चेतना से जुड़े लोगों ने अपना ध्येय हरयाणा विज्ञान मंच के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का निश्चय किया है। जरूरी है कि अन्धविश्वासों पर चोट करने के लिये उनकी पोल-पट्टी खोली जाये, ताकि 'विज्ञान' को लोकप्रिय बनाने में सहायता मिल सके।

इससे पूर्व इस तीन दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर ओ.पी. अग्रवाल ने कहा कि इन तथाकथित चमत्कारों का उपयोग करके तांत्रिक और तथाकथित साधु भोली-भाली ग्रामीण जनता को बेवकूफ बनाकर उन्हें भ्रमित करते हैं।

उन्होंने कहा कि इन लोगों की पोल खोलकर ही अंधविश्वास से लोगों को निजात दिलायी जा सकी है।

## बलिदान दिवस मनाया गया

पानीपत, २४ दिसम्बर (एस)। स्थानीय आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बुधवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस मौके पर यहां के आईबी कालेज के प्राचार्य ठाकुरदास रंजन मुख्य अतिथि थे।

इस अवसर पर भाषण गीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसमें सनातनधर्म कन्या हाई स्कूल की छात्रा कुमारी बीना प्रथम, अनमोल रतन व सर्वप्रीतसिंह द्वितीय व कुमारी गुंजन सनातन धर्म वरिष्ठ एमकेके पब्लिक स्कूल माध्यमिक विद्यालय नरवाना की छात्रा तृतीय स्थान पर रहीं।

गीत प्रतियोगिता में सुरुचि शर्मा प्रथम, एमएएसडी पब्लिक स्कूल, रंजन घोष द्वितीय, एमएएसटी पब्लिक स्कूल व प्रविंद्र माता हरकौर हाईस्कूल की छात्रा तृतीय रही।

## शोक समाचार

(१) आर्यजनों को दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री चौ० मायाराम जी की धर्मपत्नी और स्वामी सुमेधानन्द जी की पूज्या माता श्रीमती भरथोदेवी (८५ वर्ष) का ग्राम बालन्द में १८ दिसम्बर १९९२ को प्रात: ४-३० बजे देहावसान हो गया। स्वामी सुमेधानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री हैं। पूज्य माता जी का शुभ आशीर्वाद इनको प्राप्त था।

सर्वहितकारी परिवार की ओर से ईश्वर से प्रार्थना है कि पूज्य माता जी को कर्मानुसार सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने का सामर्थ्य दें।

(२) १४ दिसम्बर १९९२ को स्वामी सेवानन्द जी (भगत नान्हे-राम जी) का चरखी दादरी में देहावसान हो गया। स्वामी जी अनेक वर्षों से गुरुकुल झज्जर में सेवाकार्य कर रहे थे, तथा अनेक संस्थाओं को समय-समय पर दान देते रहते थे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि स्वामी जी की आत्मा को कर्मानुसार सद्गति प्रदान करे।

विरजानन्द दैवकरणी

# पर्यावरण प्रदूषण और यज्ञ विज्ञान

(पं० शिवकुमार आर्य एम. ए., आर्यसमाज हांसी, हरयाणा)

हमारे चारों ओर जो आवरण है जिससे हम जीवन धारण करते हैं, उसे पर्यावरण करते हैं। (परि+आवरण) यह पर्यावरण दूषित हो चुका है। हमें जीवन शक्ति नहीं मिल रही है। पर्यावरण प्रदूषण आज केवल भारत की ही नहीं विश्व की समस्या बन गई है। सभी प्रदूषण निवारण के उपाय में लगे हैं। आज विश्व स्वास्थ्य खतरे में है। ऋतु प्रतिकूल होती जा रही है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदि प्रकोप बढ़ रहे हैं। जिसका मुख्य कारण पर्यावरण प्रदूषण है। प्रदूषण निवारण प्रकृति का स्वभाव है किन्तु आज कारखाने एवं मोटर गाड़ियों का इतना विकास हुआ है। जो जहरीली गैसें लगातार फेंक रहे हैं जिसके कारण प्रकृति की स्वाभाविक शक्ति क्षीण हो चुकी है।

प्रदूषण निवारण के उपाय ढूंढने में विश्व के वैज्ञानिक लगे हुए हैं। कोई यन्त्र का आविष्कार भी किये है जो कारखानों व मोटरों से निकलने वाली गैस को शुद्ध करके छोड़ेगा। किन्तु इसमें इतनी सफलता नहीं मिली है। वृक्षारोपण पर सबसे अधिक बल दिया जा रहा है। आकाशवाणी, दूरदर्शन व समाचारपत्रों में विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है। "पेड़ लगाओ जीवन पाओ"। सरकार की ओर से हजारों लाखों वृक्ष प्रत्येक राज्यों में लगवाए जा रहे हैं किन्तु कितने तैयार होते है। ५० से ७५ प्रतिशत पौधे मर जाते हैं। क्योंकि कारखानों को जहरीली गैसों से आक्सीजन ही नहीं कार्बन-डाइआक्साइड भी प्रदूषित हो गया है। जो वृक्षों का जीवन है। इसलिये पौधे मर जाते हैं। या जो जीवित रहते हैं वे बढ़ नही पाते। उसमें शोधक शक्ति नहीं आ पाती। इसलिए वृक्षारोपण प्रदूषण निवारण के लिए उचित उपाय सिद्ध नहीं होता। आज के वैज्ञानिक प्रदूषण निवारण करने में असफल हैं। क्योंकि ये रिसर्च (पुनः+खोज) कर्ता हैं किन्तु सफल सर्च (शोध) कर्ता युगद्रष्टा ऋषियों के पास इसका उपाय था। और वो है 'यज्ञ विज्ञान'' (अग्निहोत्र) जो अद्वितीय है। जिसे युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमारे लिए सुगम बना दिया और सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि "आर्यवर शिरोमणि ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम (यज्ञ) करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।'' यह ध्रुव सत्य उस वर्ष उजागर हुआ जब भोपाल (म० प्र०) में गैस रिसाव हुआ। जिसमें हजारों मनुष्य और पशु मारे गये किन्तु एक याज्ञिक परिवार पूर्ण स्वस्थ बचे रहे। समाचारपत्रों में भी प्रकाशित हुआ। आज भारत का कर्त्तव्य है कि ऋषियों की बात को माने। विश्व का गुरु बनकर रहे। मनुष्य ही नही बल्कि सम्पूर्ण प्राणियों को जीवन संकट से उबारे। हमारी शिक्षा आज विदेशों में फैल रही है। और हम पीछे हैं यह कैसी विडम्बना है। अमेरिका में जाकर देखिए जहां ९ सितम्बर १९७८ से अखण्ड यज्ञ चल रहा है। यह अग्निहोत्र विश्वविद्यालय वाशिंगटन में स्थित है। भारत में भी इसी प्रकार अग्निहोत्र विश्वविद्यालय बनाए जाए। हर प्रान्त में सरकार की ओर से बड़े-बड़े यज्ञशाला बनवाकर नित्य यज्ञ प्रारम्भ किए जाएं तो निश्चय ही शीघ्रतापूर्वक प्रदूषण निवारण होगा और विश्व में शान्ति होगी। सुख एवं जीवन देने वाली वायु सर्वत्र बहेगी। पदार्थ विद्या जानने वालों को यह ज्ञात है कि कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नही होता। सूक्ष्म अवश्य हो जाता है। इसलिये अग्नि के माध्यम से पदार्थों (घृत-सामग्री) को सूक्ष्म करके पर्यावरण में प्रसरित करेंगे तो वह जहां भूमि, वृक्षों, अन्नादि मे प्रविष्ट होकर विश्व को स्वास्थ्य प्रदान करेगा। वहीं वायुमण्डल में आर्द्रता एवं भार की वृद्धि होगी। हवामान में परिवर्तन होने से ऋतु अनुकूल होंगे। पौष्टिक एवं मिष्ट पदार्थों को अग्नि में जलाने से रोगाणुओं का नाश होगा। वायु के भार मे वृद्धि होने से आंधी तूफानों का नाश होगा। वर्षा की वृद्धि होगी। जो वृष्टि यज्ञों से प्रमाणित है। सुगन्धि औषधियों के अग्नि में प्रयोग से वायुमण्डल में सुगन्धित एवं पवित्र वायु फैलने से सुगन्धि का नाश होगा। इस प्रकार से अग्नि में सुगन्धित, पौष्टिक एवं रोगनाशक पदार्थों के जलाने से वृक्षों में पर्यावरण शोधक शक्ति बढ़ेगी। प्राणत्व (आक्सीजन) अधिक उत्पन्न होगी। पदार्थ जन्य प्रदूषण दूर होने के साथ-साथ वेदमन्त्रों (स्वाभाविक एवं शब्दमय छन्दों की ध्वनि) से यज्ञ करने से ध्वनि प्रदूषण का भी निवारण होगा जिससे मानसिक क्रूरता निष्क्रिय होकर सार्वजनिक शान्ति का क्षेत्र विस्तृत होगा।

## नशा सेवन जैसी बुराइयों से बचा है गांव गढ़ी रोड़ान

गुमथला गढ़ू (एस): कुरुक्षेत्र पिहोवा मार्ग पर स्थित और लगभग १५०० की आबादी का एक गांव है गढ़ी रोड़ान जो नशा-सेवन जैसी बुराइयों से अभी तक अछूता है। आजादी के पश्चात् इस गांव का फौजदारी का एक भी मामला आज तक थाना कचहरी में नहीं गया। गांव की पंचायत उसे गांव में ही निपटा देती है।

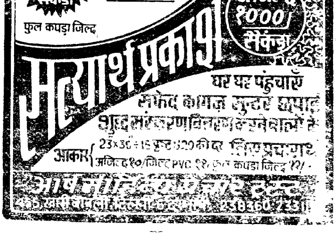
गांव के सरपंच रामधारी की कानून-व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग के लिए जिला पुलिस द्वारा प्रशंसा-पत्र भी दिये गये हैं। लगातार गत कई वर्षों से गांव वाले रामधारी को ही सरपंच चुनते आए हैं। केवल एक अवसर ही ऐसा था जिसमें दूसरे व्यक्ति को सर्व-सम्मति से सरपंच चुना गया था। इस गांव के निवासी आज रामधारी की प्रशंसा करते नहीं थकते क्योंकि वे गांव के विकास के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ कर सक्रिय सहयोग देते हैं।

रामधारी चूंकि स्वयं शराब आदि के सेवन से कोसों दूर हैं, इसलिए गांव के दूसरे लोगों को भी सार्वजनिक रूप से शराब पीने की सख्त मनाही है। गांव में स्थापित युवा क्लब के एक कार्यकर्ता सतपाल ने बताया कि गत गणतन्त्रदिवस पर गांव के २५ व्यक्तियों को उक्त सरपंच द्वारा नशे से सदा-सदा के लिए परित्याग की शपथ दिलवाई गई। यह क्लब भी गांव में नशाबन्दी तथा सफाई जैसे रचनात्मक कार्य करता है। पेयजल सप्लाई, पक्की गलियां तथा हरिजन चौपालों का निर्माण गांव में हुए विकास की कहानी बताते हैं।

निस्सन्देह गढ़ी रोड़ान एक आदर्श गांव तथा अन्य गांवों के लिए अनुकरणीय है। (दैनिक ट्रिब्यून)

**रुकिये !**

**नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती है।**



# मन्दिर-मस्जिद विवाद और कुछ विचारणीय तथ्य

लेखक—ब्र० विजयपाल सहारण, जीन्द (हरयाणा)

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि॥

(सूर्याचन्द्रमसौ इव) सूर्य और चन्द्रमा के समान हम सब स्वयं (स्वस्ति पन्थाम्) उत्तम कल्याणकारी मार्ग का (अनुचरेम) अनुसरण करें और (पुनः) तत्पश्चात् (ददता) दानी (अघ्नता) अहिंसक=प्राणिमात्र का उपकार करने वाले (जानता) ज्ञानी=आप्तपुरुषों की (संगमेमहि) संगति करें, उनके बतलाये मार्ग पर चलें।

इस मन्त्र में बतलाया गया है कि हम लोग सूर्य और चन्द्रमा की भांति संसार का उपकार करने वाले महापुरुषों के मार्ग का अनुसरण करें तथा उनके द्वारा बतलाये मार्ग के पथिक बनें।

हमारे इतिहास में गहन अध्ययन के पश्चात् मालूम होता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगिराज श्रीकृष्ण ये दोनों ऐसे ही आप्त पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन के किसी भी अंश में किसी तरह की मर्यादा को भंग किया हो, ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता। दोनों महापुरुषों के जीवन परिचय रामायण और महाभारत से प्राप्त होते हैं। राम के आदर्श जीवन को टी. वी. पर रामायण धारावाहिक द्वारा समस्त भारत के लोगों ने देखा। वास्तव में श्रीराम का नाम आते ही प्रत्येक भारतीय को नतमस्तक हो जाना पड़ता है।

परन्तु महादुःख की बात है कि आर्य संस्कृति के पोषक, मर्यादा को दृढ़ता से निभाने वाले श्रीराम के अयोध्या में प्रस्ताविक मन्दिर को एक विदेशी आक्रान्ता बाबर ने लगभग ४६० वर्ष पहले तोड़कर वहां मस्जिद का रूप देकर हमारे ऊपर कलंक पोत ही दिया। यही नहीं महमूद गजनवी सोमनाथ का मन्दिर लूटकर हमारे वीर्य को चुनौती देकर चला गया। हम उस दृश्य को मूक बने देखते रहे।

वे आर्य जिनके एक इशारे से सम्पूर्ण दिकमण्डल कांप उठता था। वह आर्यव्रत राष्ट्र जहां अभिमन्यु जैसे नरसिंह बालक थे जो हजारों के साथ अकेले मुकाबला करने का साहस रखते थे। उन्हीं की सन्तानों के सामने विदेशी आक्रान्ता आते रहे और हमारे आर्यस्थलों को नष्ट करते रहे और हम अपनी दुर्बलता का परिचय देते रहे।

उन भारतीय को जिन्होंने आज तक दूसरों के चपेटे खाए और मरणासन्न स्थिति में हैं। उनमें से कुछ हिन्दुओं ने ६ दिसम्बर १९९२ को विहिप और भाजपा के नेतृत्व में बाबरी मस्जिद का काम तमाम कर डाला। परन्तु श्रीराम को आदर्श मानने वाले भारतीय हर्ष के स्थान पर शोक में डूब गये और हमारे नेताओं ने तो यहां तक कह दिया कि मस्जिद का पुनः निर्माण किया जायेगा। लगता है हमारे नेताओं का क्षात्र तेज के साथ-साथ बुद्धि भी नष्ट होती प्रतीत होती है। केन्द्रीय मन्त्री माधवराव सिन्धिया जी कहते हैं कि "मस्जिद का टूट जाना हमारे लिए शर्म की बात है।" परन्तु सिन्धिया महोदय नहीं जानते कि उनके पूर्वजों ने अपनी बहादुरी का परिचय देते हुए मुगल आक्रमणकारियों का वीरतापूर्वक मुकाबला किया था। हमारे इतिहास में यह पहला उदाहरण है कि हिन्दुओं ने किसी मस्जिद को विध्वंस किया है।

महर्षिवर देव दयानन्द जी महाराज कहते हैं, "सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को नष्ट कर देना चाहिए। जो कभी उखाड़ डालने में न आवें तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नहीं।"

महर्षि के इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि वे आर्य संस्कृति का कितना हित चाहते थे। "आर्य संस्कृति का हित इसी में है कि वे अपने प्राचीन पुरुषों के मार्ग का मन, वचन, कर्म से अनुसरण करें तथा उनके अवशेषों को बचावें।"

उपदेश मंजरी में लिखा है कि विदेशियों ने हमारे ग्रन्थों को लकड़ी की तरह जला डाला। पुस्तकालयों की पुस्तकें जला डाली गईं, इत्यादि कितने प्रमाण हैं कि इन विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे इतिहास को मिटाने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु इनमें उनका दोष नहीं क्योंकि उनके धर्म ग्रन्थ यही आदेश देते हैं। कुरान शरीफ में लिखा है कि "मस्जिद के नजदीक किसी की हत्या करना मना है, परन्तु ऐ ईमान वालो, अगर काफिर कहीं मिल जाये बेशक वह मस्जिद के निकट हो तो उसे गाड़ डालो।" जिनके धर्म ग्रन्थ ही ऐसा आदेश देते हों वे निर्दयता से लोगों का वध करने के सिवा और क्या कर सकते हैं।

फिर भी न जाने क्यों हमारे नेता तुच्छ स्वार्थ के लिए ऐसा अन्याय क्यों कर रहे हैं? हमारे नेताओं को काफी सोच विचारकर ही इस समस्या का हल निकालना चाहिए।

## मन्त्रियों व नेताओं पर टाडा लगाने की मांग

पुन्हाना, २२ दिसम्बर [निस]। पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह ने मेवात के दोनों मन्त्रियों समेत पांच मेव नेताओं को टाडा के तहत गिरफ्तार करने की मांग की है।

प्रोफेसर सिंह ने दंगाग्रस्त मेवात क्षेत्र पर व्यापक दौरा किया। दौरे में उनके साथ गुरुकुल झज्जर के संस्थापक और संन्यासी ओमानन्द सरस्वती और आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के अधिकारी भी थे। प्रोफेसर शेरसिंह ने आरोप लगाया कि क्षेत्र में हुई दुखद घटनाओं के पीछे वहां के राजनेता थे। पुलिस और प्रशासन भी दोषी है।

उन्होंने कहा कि लोगों को भड़काने के पीछे इन नेताओं की राजनैतिक प्रतिस्पर्धा भी थी कि जो जितना भड़काएंगे उसको उतनी अधिक मेव वोट मिलेंगी। उन्होंने दंगा भड़काने में दो पूर्व सांसद, दो वर्तमान मन्त्री और एक विधायक को मुख्य रूप से शामिल बताया और उन्हें तुरन्त टाडा के तहत गिरफ्तार करने की मांग की।

उन्होंने कहा कि दंगाइयों ने क्षेत्र में दर्जनों मन्दिरों को तहस-नहस कर दिया। सरेआम गोकशी की गई। दुकानें जलाई गईं और अब मन्त्री इन्हीं को संरक्षण दे रहे हैं। उनके बचाव के लिए दौड़धूप कर रहे हैं। उन्होंने मांग की कि दोषियों की जो धरपकड़ मन्त्रियों के दबाव के कारण बन्द की गई, उसे फिर शुरू किया जाए।

उनका मानना है कि अभी तक असली दोषी तो पकड़े नहीं गए। उन्होंने मेवात को मिनी पाकिस्तान बताते हुए कहा कि मेव नेता पुलिस और प्रशासन को ढंग से काम नहीं करने देते। अनुचित हस्तक्षेप करते हैं। उन्होंने दोनों मन्त्रियों को तुरन्त बरखास्त करने की भी मांग की। श्री सिंह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान भी हैं।

उन्होंने बताया कि मेवात के लोगों ने सवाल उठाया है कि जब भाजपा की तीन सरकारों को बर्खास्त किया जा सकता है तो मेवात में हुई घटनाओं के मद्देनजर हरयाणा सरकार को भी क्यों नहीं बरखास्त किया जाता। उन्होंने कहा कि पुलिस और प्रशासन मेवात की घटनाओं को छुपा रहे हैं। उन्होंने मांग की कि मुख्यमन्त्री भजनलाल को क्षेत्र का दौरा करके लोगों की भावनाएं सुननी चाहियें।

उन्होंने बताया कि मेवात में इन घटनाओं के विरोध में १० जनवरी को एक सर्वखाप पंचायत बुलाई जाएगी। जिसमें प्रदेश भर की सभी खापों, बिरादरियों के मुखिया भाग लेंगे। इसमें मेव खापों के चौधरी भी बुलाए जायेंगे, उनसे पंचायत में जवाब तलब किए जायेंगे। उन लोगों की निंदा की जाएगी, जिन्होंने मेवात के ऐतिहासिक भाईचारे को खराब किया है। उन्होंने सरकार से प्रभावित लोगों को मुआवजा देने, मन्दिरों के पुनर्निर्माण, लोगों की सुरक्षा के लिए क्षेत्र में बी एस. एफ का एक स्थायी कैम्प लगाने की भी मांग की। जनसन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ फोन नं० ७७७२ [illegible] १,९६, ०८, १३, ०१३

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी रोहतक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १ २१ नवम्बर, १९९२ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

### जिनका १७ नवम्बर को बलिदान दिवस मनाया गया

# आज पंजाबकेसरी बहुत याद आते हैं

ले० सुखदेव शास्त्री

जो राष्ट्र को स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा के लिए अपना तन-मन-धन समर्पण करते हैं वे बलिदानी वीर शहीद राष्ट्र के आधार होते हैं। उन्हीं के बल पर राष्ट्र उठता और आगे बढ़ता है। जो जाति ऐसे वीर शहीदों का सम्मान करती है वह सदा विजयी होती है और शहीदों को भुलानेवालों को उस देश की धरती भी भुला देती है।

समाजसेवा और स्वतन्त्रता संग्राम के संघर्ष में इन वीर शहीदों ने अपना सर्वस्व समर्पण किया और देशधर्म के लिए गोलियां खाकर, जहर पीकर, फांसी के फन्दे पर हंसते-हंसते अपना बलिदान देकर स्वतन्त्रता देवी की मंगल आरती उतारी थी।

उनके बलिदानों का संगीत जिस आजादी के गीत को गुंजाता है, उसकी स्वर लहरी में राष्ट्र में अजेयशक्ति संचरित हो जाती है। उनकी प्रतिभा की प्रतिमा पवित्र प्रकाश देकर जन-जन के मन मन्दिर में श्रद्धा का प्रतीक बनकर राष्ट्र के लिए गौरव का प्रेरक बन जाता है।

राष्ट्र शहीदों के प्रति सदैव नतमस्तक रहा है और रहेगा। उनके प्रति सदा कृतज्ञता प्रकट करता रहेगा। आज के राष्ट्रीय संकट की घडी में भी देश पर छायी भयंकर आतंकवाद की कालिमा को धोने में भी शहीदों का स्मरण समर्थ हो सकता है।

आज आवश्यकता है त्याग, बलिदान और सर्वस्व समर्पण की भावना की। हमारे सभी कार्यों में राष्ट्रहित सर्वोपरि हो। हमारा मन राष्ट्रभक्ति की भावना से भरा हो। स्वार्थ छोड़कर राष्ट्रकल्याण में जुटें।

भारतीय स्वतन्त्रता संगाम में हजारों लोगों ने अपने बलिदान दिए हैं। अनेक ऐसे वीर हुए हैं जो आजादी के लिए मरमिटे पर पीछे नहीं हटे।

इन वीर शहीदों में पंजाबकेसरी ला० लाजपतराय का नाम भी अगली पंक्ति में गिना जाता है।

इनका जन्म अनेक वीरों की जन्मदात्री पवित्र धरती पंजाब के जिले फिरोजपुर के ग्राम ढूढिके में २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। इनके पिता राधाकृष्ण स्कूल के अध्यापक थे। लाजपतराय ने अपने ग्राम के स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर, लुधियाना के मिशन स्कूल में भी शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् आपने अपने पिताजी के साथ अम्बाला आकर १८८० में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक परीक्षा पास की। इसके बाद इन्होंने गवर्नमेंट कालेज लाहौर से एफ. ए. की परीक्षा पास कर के मुख्त्यारी की परीक्षा भी पास कर ली। मुख्त्यार छोटे न्यायालयों में वकालत किया करते थे।

उन दिनों महर्षि दयानन्द के सामाजिक सुधार के क्रान्तिकारी विचारों से सारा देश विशेषकर पंजाब प्रभावित हो रहा था। लाहौर में १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। क्योंकि समाजसुधार, स्वतन्त्वताप्राप्ति के लिए आर्यसमाज का क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। भारत माता के पराधीनता के दुःखहरण में सर्वाधिक योगदान आर्यसमाज के तत्कालीन कार्यकर्ताओं का रहा था। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। अतः पंजाब के सब विचारक, होनहार युवक पं० लेखराम, म० मुन्शीराम, पं० गुरुदत्त एम. ए., लाजपतराय आदि आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्ति माने जाते थे। ये महर्षि दयानन्द के समाज-सुधारक विचारों को पंजाब के युवकों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाते थे। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में भाग लेते हुए भी लाजपत ने वकालत भी पास करली।

अब अपने निश्चय को मूर्तरूप देने के लिए लाजपतराय ने वकालत की प्रैक्टिस करने के लिए रोहतक को ही अपनी कार्यस्थली बनाया। वकालत के साथ-साथ परोपकार के कार्यों में भी भाग लेने लगे। कुछ वर्षों के बाद आप रोहतक छोड़कर हिसार चले गए। यहां भी आपने सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना शुरू किया। यहां पर भी आपने आर्यसमाज के प्रचार कार्य में बड़ा सहयोग दिया। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग आपके निवास पर ही होने लगे। सौभाग्य से हिसार में भी आपको लखपतराय व ला० चूड़ामणि जैसे मित्र मिल गये, जिनके साथ मिलकर आपने वकालत के साथ-साथ समाजसुधार के परोपकार कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। लाजपतराय एक नामी वकील और दानी आर्यपुरुष थे। आपने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। चूड़ामणि भी एक दानी निर्भीक आर्यपुरुष थे। हिसार में रहते हुए लाजपतराय ने प्रसिद्ध आर्यसमाज नागोरी की स्थापना की। यहां से ही ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर समाजसुधार के कार्य भी करने लगे। हिसार में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की। हिसार के म्युनिसिपल बोर्ड के अवैतनिक मन्त्री तीन वर्ष तक रहे। हिसार का लाजपतराय चौक जो नागोरी गेट के सामने स्थापित है, लालाजी के हिसार में किए गए समाजसेवा के कार्यों की प्रत्यक्ष गवाही दे रहा है। इसी प्रकार रोहतक में गोहाना बस अड्डे पर लाजपतराय चौक, जहां पर लाजपतराय की आदमकद मूर्ति खड़ी होकर उनके समाजसेवा के कार्य को आजतक भी प्रमाणित कर रही है।

इसके पश्चात् आपने लाहौर के आर्यसमाजी मित्रों के आग्रह के कारण भी पंजाब की सभी जातियों का केन्द्रस्थान मानकर हिसार को छोड़कर लाहौर में कार्य आरम्भ किया। गुरुदत्त विद्यार्थी व म० हंसराज को डी.ए.वी. कालेज की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया। आप आर्यसमाज की राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में तन-मन-धन से सहयोग देते थे। इन सेवाओं के कारण इनकी गणना भारत के शिक्षा विशेषज्ञों में होने लगी। इसी कारण लार्ड कर्जन ने इन्हें १९०० में शिक्षासम्बन्धी जांच कमेटी का सम्मानित सदस्य बनाया।

(शेष पृष्ठ ८ पर)